"जीवन विद्या" प्राथमिक परिचय शिविर

- शिविरार्थी नोट्स : मई २०१२

- इस लेख की प्रस्तुति एवं जिम्मेदारी: श्रीराम नरसिम्हन (विद्यार्थी)

"मध्यस्थ दर्शन-सहअस्तित्ववाद" का एक सामान्य प्राथमिक परिचय हेतु

(अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन)

- प्रणेता एवं लेखक श्री ए.नागराज, अमरकंटक, (म.प्र)

....

"भौतिकवाद एवं आदर्शवाद* का विकल्प"

** आदर्शवाद = आध्यात्मवाद, अधिदैवीवाद, अधिभौतिकवाद*

जीवन विध्या उद्देश्य

(स्रोत: 'अध्ययन बिंदु', ए नागराज)

- ❖ जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु
- ❖ मानवीयता सहज आचरण प्रमाण हेतु
- ❖ सर्वतोमुखी समाधान-समृद्धि सहित - अखंड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था रूप में प्रमाण हेतु

वर्तमान स्तिथि	*आवश्यकता*
धरती ताप ग्रस्त	धरती संतुलन रहना
प्रदूषण	ऋतु संतुलन बना रहना
सभी मानव समुदाय असुरक्षित	धरती पर मानव का अक्षुण्ण रहना

परिचय शिविर, गोष्टी का उद्देश्य:

i. *'समझना', चेतना विकास = लक्ष्य के रूप में स्पष्ट हो*

ii. *समझने की 'मूल वस्तु' प्रस्ताव रूप में चिन्हित हो:*
- *जीवन (स्वयं);*
- *मानव-मानव संबंध (परिवार, समाज) [न्याय, धर्म];*
- *मानव- प्रकृति संबंध, व्यवस्था [धर्म];*
- *अस्तित्व, सहअस्तित्व [सत्य]*

iii. *'स्वयं में जांचने', की प्रक्रिया शुरू हो:-*
- *प्रस्ताव का शोध ('स्व-निरीक्षण') प्रारंभ हो*

iv. *समझने के लिए आगे 'अध्ययन' करने की आवश्यकता स्पष्ट हो*

निर्देष

- यह नोट *संवाद शैली* में जीवन विद्या प्राथमिक परिचय शिविर के लिए है। इसमें प्रारंभिक सूचना है। अध्ययन के लिए मध्यस्थदर्षन–सहअस्तित्ववाद वांगमय है (१२ पुस्तक) : प्रणेता एवं लेखक - ए नागराज | यह लेख अध्ययन के लिए **नहीं है** |

- यह प्रस्ताव मुझे श्री ए नागराजजी से मिला| मैं इसे समझने, जीने के प्रयास में हूँ| इस लेख में स्रोत के रूप में श्री ए नागराजजी के नाम एवं लेख का प्रयोग किया गया है| इसका तात्पर्य यह नहीं है की श्री नागराज ने इस लेख को जांचा है| लेख के लिए मैं जिम्मेदार हूँ|

- सारे जीवन विद्या **शिविरों** का उद्देष्य एवं **मूल**–वस्तु एक ही **है |** बताने के **तरीके और** बिंदु प्रबोधक की कल्पना शीलता के अनुसार, **श्रोता की आवश्यकता अनुसार** भिन्न हो सकते हैं। हर प्रबोधक अपनी स्थिति **सहित** प्रकट **होते है |** अध्ययन क्रम में यह प्रखर होते जाता है। यही इसका क्रम है। समझने–समझाने का काम साथ साथ चलता है – समझदारी से परिपूर्ण होने, जीने मे प्रमाण प्रस्तुत करने तक। **इस लेख में दिया गया शिविर *एक विधि* है: ऐसे अनेक परिचय शिविर लेने के विधि हो सकते है, होंगे, होते रहेंगे | एक से अधिक व्यक्तियों के शिविर करने में लाभ है, इससे 'वस्तु' पर अलग अलग विधी से ध्यानाकर्षण होता है |**

- यह एक मैत्रीपूर्ण प्रक्रिया है, प्रस्ताव रूप **में** प्रस्तुत है। **इसे सुनकर सहमती-असहमति व्यक्त करना, यदि सहमति है तो इसे पूरा समझने की निष्ठा होना, पश्चात समझकर जीना, यह सब आपके अधिकार में है| इसमें आप स्वतंत्र है |**

आभार

इस लेख के '४ स्तर पर व्यवस्था' वाले भाग इन व्यक्तियों के **शिविरों पर आधारित है:** सोम त्यागी -रायपुर; साधन भट्टाचार्य -अमरकंटक; **योगेश, सुवर्णा- रायपुर,** गणेष बागड़िया -कानपुर |

लेख की जिम्मेदारी, संपर्क एवं सुझाव

श्रीराम नरसिंहन, **गौरी श्रीहरी**

zshriram@gmail.com, gowrisrihari@gmail.com

ph: 99077-94154

शिविरार्थियों के लिए विशेष सूचना:

प्राथमिक परिचय शिविर के पश्च्यात 'अध्ययन बिंदु परिचय शिविर' करना आवश्यक है, जिसमे समझने, जीने की सम्पूर्ण वस्तु पर विस्तार एवं गहन चर्चा होती है| इस क्रम में 'अध्ययन बिंदु' पुस्तिका में दिए ४४ बिंदु पूरे होते हैं | इच्छा हो तो इसे कर सकते है| सम्पूर्ण अध्ययन के लिए मध्यस्थ दर्शन वांग्मय १३ पुस्तकों में उपलब्ध हैं - दर्शन - वाद- शास्त्र - संविधान - परिभाषा संहिता देखें|

शिविर के पश्च्यात 'विकल्प' पुस्तक एवं 'जीवन विद्या एक परिचय' आवश्य पढ़ें |

इस नोट्स के अंत में प्रयुक्त मुख्य शब्दों की परिभाषाएं दिए हैं| शब्दों को इन परिभाषाओं के साथ देखना आवश्यक हैं| परिभाषा ही शब्द को अस्तित्व में वास्तविकता से जोड़ने, इंगित करता है|

प्राथमिक शिविर के पश्च्यात इस वेबसैट से प्रारंभिक पढने हेतु पाठमाला तथा विडियो डाउनलोड कर पढ़ सकते हैं,

जीवन विद्या के दोनों साईट जाने हेतु शॉर्टकट: **www.jvidya.com**

- यह साईट **परिचय शिविर** के लिए है www.**jeevanvidya**.info/
- मध्यस्थ दर्शन जानकारी वेबसैट : www.madhyasth-darshan.info

संबोधन करने वाले (प्रबोधक) के लिए सूचना

शिविर लेने हेतु नोट्स का उपयोग कर सकते हैं| शिविर लेते समय इन नोट्स के साथ प्रत्येक अध्याय के पूर्व 'मुख्य बिंदु - रखने का क्रम' दिया हैं, एवं अध्याय के पश्च्यात 'सारांश' दिया है| मात्र यह पृष्ठ अलग से वेबसैट पर उपलब्ध हैं, आप इनका प्रिंट आउट ले सकते हैं

प्रारंभिक शिविर के समापन के बाद परिशिष्ट (appendix) में लिखा हुआ को अवश्य पढ़कर सुनाएं |

प्रारंभिक शिविर का उद्देश्य "अध्ययन" से जोड़ने के अर्थ में है

प्रणेता सन्देश *

** स्त्रोत = लेखकीय, मानवीय आचरण सूत्र – पुस्तिका*

मैंने इस तथ्य को भली प्रकार से समझा है कि हर मानव मानवत्वपूर्वक ही अपने वैभव को प्रमाणित करना चाहता है। परंपरा में सर्व मानव किसी न किसी समुदाय या देश के रूप में, धर्म के रूप में, राज्य के रूप में स्वीकृत हुआ देखा गया। इसी के साथ जाति, मत, वर्ग, सम्प्रदाय, पंथों के रूप में होना भी स्पष्ट है। इन सभी विधियों से समुदाय चेतना विकसित हुई न कि मानव चेतना। इसके साथ यह भी गवाहित है कि अभी तक धरती पर होने वाले समुदायों में से कोई ऐसा समुदाय नहीं है जिसको सभी स्वीकारते हों इसलिए मानवत्व की आवश्यकता सहज रूप में समझ में आई। इसके लिए आवश्यकीय सभी शोध–अनुसन्धान किए।

जीवन का मौलिक अथवा सर्वमानव का मौलिक प्रश्न सुखी होने का है क्योंकि सर्व देश–काल में सुखी होने के आशय से ही जंगल से ग्राम, ग्राम से नगर यात्रा मानव ने की। इस यात्रा में आहार, आवास, अलंकार, दूर–श्रवण, दूर–गमन, दूर–दर्शन संबंधी सभी वैभव मानव को करतलगत हुए। जब मैंने मानव की परिभाषा को समझा तो यह पाया कि सर्व मानव मनाकार को साकार करने वाला और मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला है। इस पर ध्यान देने से पता लगा कि मानव मनाकार को साकार करने में समर्थ हो गया है लेकिन मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने में असमर्थ है अथवा प्रयत्नशील है। इसी कारणवश यह निश्चय हुआ कि सर्व–मानव मानवत्व सहित ही मन:स्वस्थता का प्रमाण प्रस्तुत करेगा, फलस्वरूप ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था इस धरती पर प्रमाणित होगी। तभी मानव अपराध परंपराओं से मुक्त हो पाएगा, धरती को रोगी बनाने के कार्यक्रम से मुक्त होगा।

मानव परंपरा में विभिन्न प्रकार से साधना, उपासना, अभ्यास की बात कही गई है। यह सब स्वांत: सुख के अर्थ में रहा जबकि मानवत्व सर्व–शुभ के अर्थ में होना अनुभव किया है। क्योंकि अस्तित्व में प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में ही वैभवित है, अतएव मानव की मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वाभाविक है।

मानव में मानवत्व प्रमाणित होने के लिए आवश्यकीय पूरा वाङ्मय प्रस्तुत किया जो मध्यस्थ दर्शन, सह–अस्तित्ववाद है जिसमें मानवीय शिक्षा, मानवीय संविधान, मानवीयतापूर्ण आचरण और मानवीय व्यवस्था बोध सुलभ होने की व्यवस्था है। इसी क्रम में जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होने की व्यवस्था है। ये सब एक–दूसरे से जुड़ी कड़िया हैं इसमें

से जीवन ज्ञान ही जीवन विद्या के रूप में स्पष्ट हुआ। इसे एक अभियान के रूप में अर्थात् अभ्युदय के अर्थ में होना अनुभव किया गया।

जीवन विद्या को बोध कराने के लिए और उसके मूल में ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्नता सहज सुलभ अथवा सर्व सुलभ होने के लिए निम्न सभी ग्रंथ प्रस्तुत हुए :– मानव व्यवहार दर्शन, मानव कर्म दर्शन, मानव अभ्यास दर्शन, मानव अनुभव दर्शन।

समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, जीवन विद्या : एक परिचय।

इन सभी वाङ्मय का प्रयोजन मनुष्य में ही प्रमाणित होना है। अध्ययन तो समझदार मानव ही कराएगा अर्थात् समझदार मानव से ही अध्ययन सार्थक होगा। जीवन विद्या शिविरों में यह कराया जाता है। मानवीय शिक्षा संस्कार की अवधारणाओं को हृदयंगम करना आवश्यक है जिसके साथ मानवीय मूल्य, चरित्र और नैतिकता प्रमाणित होना आवश्यक रहेगा। हर मानव जीने में समझदारी को प्रमाणित करेगा।

सम्पूर्ण वाङ्मय सूचना ही है न कि प्रमाण। इसके साथ यह भी मेरी स्वीकृति है कि सभी मंत्र, यंत्र और पुस्तकों से प्रत्येक जागृत मानव बड़ा है। अतएव मानव सहज समझदारी के लिए ही सम्पूर्ण वाङ्मय प्रस्तुत है। यह प्रमाण परम्परा में ही मानव वैभव सहज होगा, यह मेरा विश्वास है।

ए. नागराज

प्रणेता एवं लेखक –मध्यस्थ दर्शन, सह–अस्तित्ववाद

पो. अमरकंटक, श्री नर्मदा मंदिर के सामने

जिला शहडोल (मध्य प्रदेश)

** स्रोत ग्रन्थ: मानवीय आचरण सूत्र, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक | लेखक: ए नागराज*

<u>संबोधन करने वाले (प्रबोधक) के लिए सूचना</u>

परिचय शिविर में रखने का क्रम सामान्य रूप में

आज तक के जीवन विद्या शिविरों में १) व्यक्ति, २) परिवार, ३) समाज, ४) प्रकृति '- ऐसे ४ स्तर पर व्यवस्था' रूप में प्रयोग किया जाता/गया है| अथवा: १) स्वयं, २) शरीर के साथ, ३) परिवार, ४) समाज, ५) प्रक्रति, ६) अस्तित्व ऐसे '६ स्तर पर व्यवस्था' रूप में प्रयोग हुआ है|

इस लेख में

१) स्वयं,
२) <u>मानव संबंध</u> (परिवार, समाज),
३) <u>शेष-प्रकृति संबंध</u> (तीन अवस्था) एवं
४) अस्तित्व के रूप में रखा हैं|
- नोट्स का उपयोग करते समय इसको ध्यान में रखें|

इसके अलावा, वस्तु को

१) स्वयं [जीवन ज्ञान]
२) सम्पूर्ण अस्तित्व [अस्तित्व दर्शन ज्ञान] एवं
३) जीना, संबंधों को समझना - [मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान]

- ऐसे "३ ज्ञान विधी" के रूप में भी संबोधित कर सकते हैं|

अनुक्रमाणिका (Contents)

क	भूमिका:शिविर की आवश्यकता, शिविर क्या है, शोध वस्तु, शोध विधि|		11
1	**स्वयं को समझना: व्यक्ति में व्यवस्था**		
	1.1	मानव = जीवन(स्वयं) + शरीर [आवश्यकता, क्रिया, कार्यक्रम भिन्न]	35
	1.2	जीवन(स्वयं) में व्यवस्था	48
	1.2.1	कल्पनाशीलता(4.5 क्रिया) - परिचय, कार्य, व्यस्तता एवं समस्या	51
	1.2.2	उपाय: समझ की आवश्यकता: जीवन, मानव संबंध, प्रकृति संबंध, अस्तित्व	63
	1.3	शरीर के साथ व्यवस्था - स्वास्थ्य | आवश्यकता निश्चित - समृद्धि	72
2	**मानव-मानव सम्बन्ध:** [परिवार, समाज में व्यवस्था]		
	[2a.1] परिवार में व्यवस्था		83
	2a.1.1	मानव संबंध - एक वास्तविकता	87
	2a.1.2	संबंध में 9 स्थापित मूल्य: विश्वास, सम्मान, स्नेह.......प्रेम | 9 शिष्ट मूल्य	89
	2a.1.3	परिवार का स्वरुप: क्यों, क्या, कैसे? | 7 संबंध: परिवार में ३ संबंध | न्याय	108
	[2b.2] समाज में व्यवस्था		111
	2b.2.1	मानव लक्ष्य: समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व	115
	2b.2.2	५ आयामी योजना: शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादन, विनिमय, न्याय	116
	2b.2.3	परिवार, समाज का अंग है |अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था | सामाजिक नियम	126
3	**मानव-प्रकृति सम्बन्ध: प्रकृति में व्यवस्था**		132
	3.1	प्रकृति = परस्पर पूरक; प्रत्येक इकाई में रूप-गुण-स्वभाव-धर्म| प्राकृतिक नियम	134
	3.2	४ अवस्था: वस्तु, क्रिया, स्वभाव, धर्म, अनुषंगीयता | भ्रमित, जागृत मानव	136
4	**अस्तित्व में व्यवस्था:** सह-अस्तित्व		
	4.1	अस्तित्व = सह-अस्तित्व = व्यापक में संपृक्त प्रकृति	142
	4.2	सहअस्तित्व, विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति, भौतिक-रासायनिक ...	144
--	शिविर, सारांश| समझ = जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान		147
	***** **परिशिष्ट (Appendix)** *****		
(a)	**महत्वपूर्ण जानकारी**		
	a.1	<u>आगे के लिए मार्गदर्शन</u>: **'करना क्या है?'-** शिविर, पुस्तक, अध्ययन विधि...	**152**
	a.2	कुछ टिप्पणियाँ	154
	a.3	मध्यस्थ दर्शन वांगमय की सूची:- दर्शन, वाद, शास्त्र, संविधान, अन्य	160
	a.4	आगे समझने की वस्तु, शिविरों के स्तर-२, ३, ४ एवं "**अध्ययन प्रक्रिया**"	165
(b)	**अन्य जानकारी**		**171**
	b1	समझने के क्रम में एक व्यक्ति की यात्रा...	172
	b2	प्रस्तावित विकल्प: शिक्षा, सामाजिक धारा एवं वाद-विचार में	173
	b3	प्रचलित शब्द-अर्थ	178
	b4	***मुख्य शब्दों की परिभाषाएं*** (परिभाषा संहिता से)	179

(शिविर की आवश्यकता)

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

- वर्तमान जीने पर चर्चा|
  - निष्कर्ष - हम अतृप्त हैं |
- समस्या ४ स्तर पर है (व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति)| अतृप्ती के कारणों पर चर्चा |
  - निष्कर्ष - मानव को समझ नहीं पाना| समस्या का मूल कारण = मानव | मानव पर काम करना है
- मानव में समस्या के कारणों पर चर्चा (मानव को नहीं समझने के बारे में चर्चा): अस्पष्टता: लक्ष्य में, कार्यक्रम में या करने में | सुख के स्रोत तीन आयाम में, समस्या भी तीन आयाम में |
  - निष्कर्ष: स्वयं का, मानव का लक्ष्य स्पष्ट नहीं है |
- लक्ष्य स्पष्टता के लिए बौधिक-व्यावहारिक-भौतिक आवश्यकता पर चर्चा
  - **अभ्यास 1:** भौतिक आवश्यकता के अलावा सूची |
  - निश्कार्ष: भौतिक पक्ष आवश्यक है, पूरा नहीं| व्यवहारिक, बौधिक पक्ष (+आध्यात्मिक) की आवश्यकता| आज समझ पर ध्यान नहीं है
- बौद्धिक पक्ष, समझ पर चर्चा
  - निष्कर्ष: जीने के चारों आयाम पर हमें ध्यान देना है, समझ हमारी मूलभूत आवश्यकता है |

i) परिचय: <u>उपलब्धियाँ</u> एवं ध्येय (Achievement and goals)

Q **ii) चर्चा:** क्या आप तृप्त हैं ? क्या समस्याएं हैं ? आपके आसपास क्या समस्याएं है ?

व्यक्ति	परिवार	समाज	प्रकृति
....	....	....	....
अतृप्ति	अतृप्ति	अतृप्ति	अतृप्ति

इसे ऐसा लिख सकते हैं

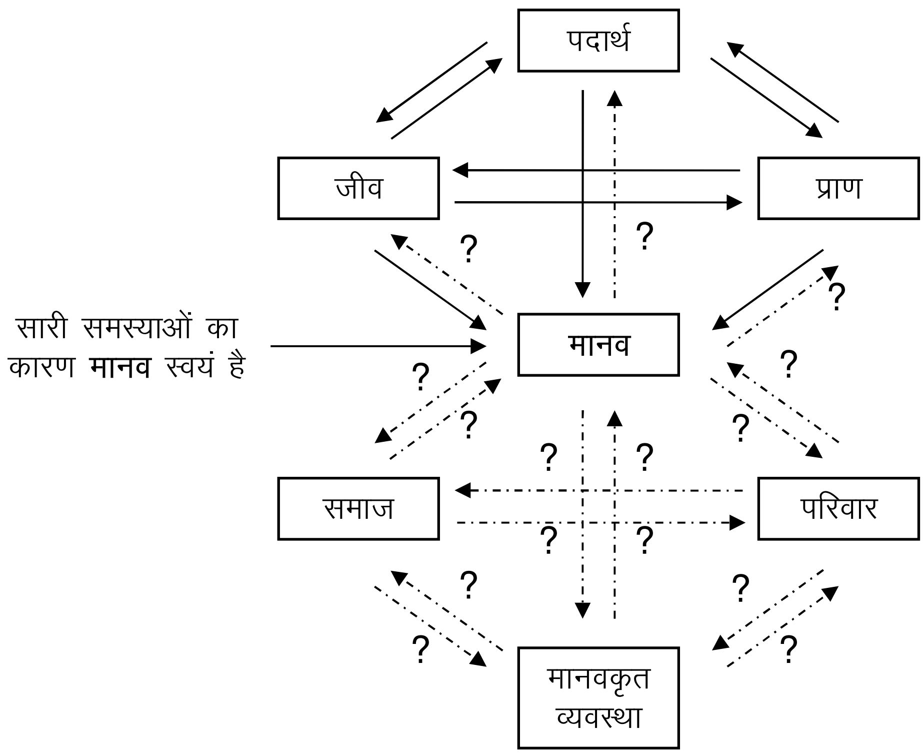

निष्कर्ष :– मानव पर काम करना है।

वर्तमान स्तिथि पर चर्चा: समाधान का अभाव| उदाहरण:लोहे को समझे हैं, पानी को समझे हैं.....जहाँ नियम समझ में आया हैं, वहाँ समस्या नहीं है|

Q

iii) यह समस्याएं क्यों है ? (मानव में **कहाँ है?**)

1. **चाहना**? (लक्ष्य)	→	2. कैसे करना है? (दिषा)/**कार्यक्रम**	→	3. करना (कार्य व्यवहार)	→	4. फल–परिणाम (अतृप्ति)
Desire/goal		How to do/ program		Action		

<u>समस्या या तो 3, 2 या 1 में है।</u>

चर्चा: दिन भर कुछ चलते रहता हैं, ऐसा करूँगा, कुछ हो जाएगा..बचपन से बुढापे तक

➢ आप क्या चाहते है यह स्पष्ट होना है। इसके लिए प्रस्ताव है

भौतिक →

- **मानव** के लिए आवष्यक है**,** **पूरा** नहीं
- **पषु** के लिए आवष्यक है**,** **पूरा भी**

Q

गाय घास खाकर तृप्त हो जाती है। क्या आप ऐसे तृप्त हो जाते है ? (केवल खाने से)

* यह प्रश्न पूछना इसीलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम आज मान चुके है कि 'केवल सुविधा से सब कुछ होगा'| पूरी आधुनिकता, विज्ञान, इसे ही को प्रोत्साहन दे रहा है| इसके अलावा "और कुछ" है या नहीं इसको पता करेंगे

*** <u>अभ्यास-१:</u>** <u>हम **भौतिक वस्तु** के अलावा क्या चाहते है</u> ?

1. सुख	*6. ....*
2. संबंध	*7. ....*
3. सम्मान	*8. ....*
4. प्रेम	*9. ....*
5. स्वयं को जानना	*10. ....*

Q

इतने को पूरा करने के लिए आप आज क्या कर रहे?

iv) अतः भौतिक आवश्यकता के अलावा हमें चाहिए

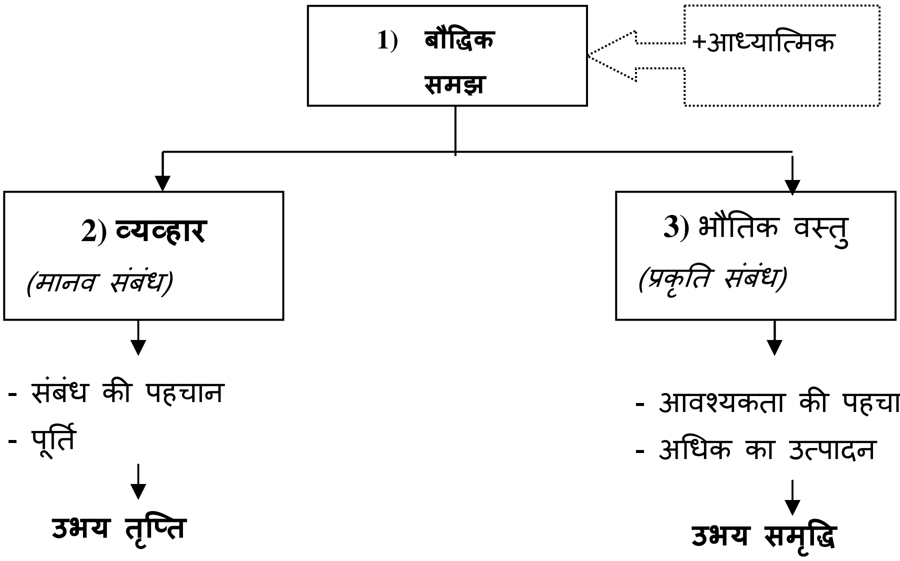

Q
- आपके परिवार में जो भी समस्या है, वह सुविधा के अभाव मे ज्यादा है या संबंध कें ?
- आप अपना समय सुविधा के लिए कितना और संबंध के लिए कितना लगा रहे है ?

Q
- यह तीनों चाहिए या इनमें किसी एक को छोड़ा जा सकता है ? **क्या 3)भौतिक वस्तु से 2)व्यव्हार-संबंध और 1)बौद्धिक समझ आएगा?**

Q
- अगर तीनों चाहिए तो क्या वरीयता होगी ?

v) <u>आज की स्थिति:</u>

- आज के **समय, अपने बच्चों** के लिए हम क्या सुनिष्चित कर पा रहें है ?

- *हमारा षिक्षा कार्यक्रम (Education System) क्या सुनिष्चित कर रहा है? / 16 से 18 साल में हमने अपने बारे मे कुछ देखा नहीं है / **अपनी ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया/***

मात्र भौतिक वस्तुओं से

- *समझ के अभाव में हम आवष्यकता को भी ठीक से पहचानते नहीं अतः सुविधा होते हुए भी समृद्धि का भाव नहीं होता। जैसे बिना पेंदी का गिलास मे चाहे जितना* ***दूध*** *भरें, कभी भरेगा नहीं*

    - चर्चा: आपमें से कितनो लोगों को पता है की उनके पास कितने जोड़ी कपडे है? -इनमे से कितने की आवश्यकता है? - क्या आपमें यह समृद्धि का भाव है?

समृद्धि से → दूसरे का पोषण → सदुपयोग → आवष्यकताएं निष्चित।

दरिद्रता से →दूसरे का शोषण → संग्रह → अनिष्चित आवष्यकताएं

- आज साधन की कमी आधुनिकता की उपज है| हर बच्चे को अभिभावक १५ वर्ष पढाते है, खिलाते है - तब तक 1) समझ को सुनिश्चित किया जा सकता है

संबंध में

- संबंध को अनदेखी करके चलते है| रोज तय करते है, कि आज नहीं लडूंगा, ठीक से रहूँगा, शाम तक और ही कुछ हो जाता है| आप करना नहीं चाहते है, ऐसा नहीं है, लेकिन कर नहीं पाते है|
- सारा समय दूसरे को निपटाने का सोचते रहते है|
- हमारी शिक्षा इसी की training दे रही है| प्रतिस्पर्धा के चक्कर में सारा समय दुसरे पर ध्यान रहता है| 'पड़ोसी जो खा रहा है, वही खाना है| मुझे अपने पड़ोसी से ज्यादा खाना है|' - समस्या, क्योंकि पड़ोसी कितना खायेगा, इसका पता नहीं ! क्यों खा रहा है, उसको भी ज्यादा पता नहीं!

1) समझ के बिना 2) संबंध और 3) भौतिक वस्तु अतिक्रमणात्मक (violative) हो सकते है|

Q

- *आज के समय में हमने 1) समझ को और २) संबंध को पूरी तरह अनदेखा किया हुआ है, और ज्यादा समय ३) भौतिक वस्तु (सुविधा) के लिए लगाया हुआ है|*
- *यह चीजें आपके लिए महत्वपूर्ण है या नहीं? क्या आप इसकी जाँच आज कर रहे है?*
- *भौतिक वस्तु (सुविधा) होने से हम आश्वस्त है, ऐसा भी नहीं है - इसमें भी हम तहलका मचा के रखे है|*

vi) भय किससे है?

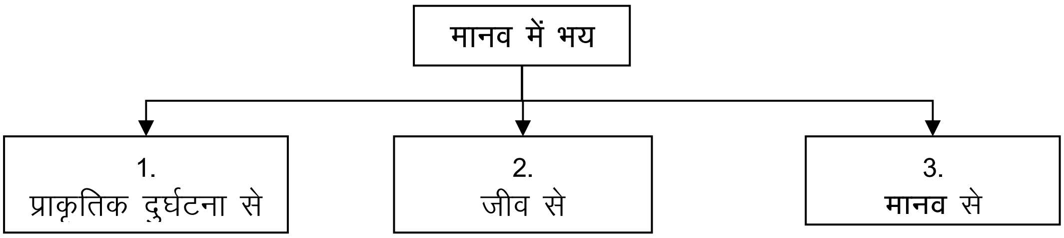

Q

- कौन सा भय ज्यादा है ?
- हम कहॅा काम कर रहें **हैं** ?
- आज जीव हमसे डरे हुए है (जंगल में बोर्ड लगा **है–वन्य** प्राणियों की रक्षा करें)
- अतः मानव-मानव संबंध **में** भय अधिक है। (मानव में अमानवीयता का भय)

Q

- आप आज कहाँ जी रहे है? मात्र ३) के साथ, २ के साथ, अथवा तीनो [1) समझ, 2) संबंध, 3) सुविधा] के साथ?

निष्कर्ष :– (1).समझ के बिना (2)व्यवहार और (3) भौतिक वस्तुएं संभव नहीं है

vii) चित्र में जोड़ें:: जीव चेतना और मानव चेतना

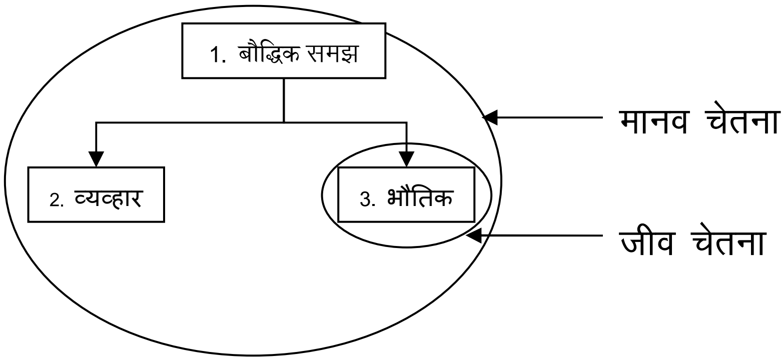

- **केवल 3) भौतिक वस्तु के साथ जीना = जीव चेतना** में जीना
  - (क्योंकि जीव/पशु भी इतना तो कर ही रहा है| हम उसी को विकसित रूप में कर रहे है: गाय सीधे खाती है, हम प्लेट में डाल कर खा रहे है)

-

- 1) समझ, 2) व्यव्हार (संबंध), 3) भौतिक वस्तु, तीनों के साथ जीना = मानव चेतना |

- *यह समझ क्या है, इसके हम अधिकारी हो सकते हैं कि नहीं यह हम इस षिविर में शोध करेंगे।*

निष्कर्ष
– हमें मानव पर काम करना है।
– मानव में समझ और संबंध के पक्ष पर काम करना है।
– समझ मानव की मूलभूत आवश्यकता है

इस शिविर में हम स्वयं को जानकर, अस्तित्व को जानकर, हम अस्तित्व के हर इकाई के साथ अपने संबंध को समझते है और उसके अनुसार जीते है

- आज के दिन, हम इन संबंधो को कुछ और माने हुए हैं। निर्वाह करने जाते है तो सफल नहीं होते।

  जैसे
  – मानव के साथ संबंध
  – जीवों के साथ संबंध
  – प्राण (पेड़ **पौधों**) के साथ संबंध
  – पदार्थ (मिट्टी पत्थर) के साथ संबंध

- **चर्चा, उदाहरण:** प्रत्येक पर

- **वास्तव में यह संबंध कैसे है, इस शिविर में हम पता करने का प्रयास करेंगे**

निश्चित मानवीय आचरण

अस्तित्व के हर इकाई के साथ संबंध को जान लिया, उस समझ के अनुसार हम जीते है, तो वह निश्चित आचरण (व्यवहार) होता है | इसको हम 'मानवीय आचरण' कहेंगे |

- आदमी को छोड़कर अस्तित्व में हर इकाई एक निष्चित आचरण में है। हम आचरण से ही किसी चीज़ को पहचानते **हैं** |

  जैसे – नीम का नीमत्व
  – गाय का गायत्व
  – लोहे का लोहत्व

- अगर **मानव** से पूछें तो वह भी **निश्चित** आचरण चाहता है।

Q जैसे – आप निष्चित आचरण चाहते है या अनिष्चित आचरण ? **आज क्या हैं?**
– यह अनिष्चितता **हम जो है, और** वास्तव में जो होना चाहते है, उसमें दूरी के कारण ही है
– निष्चितता में **ही** निरंतरता होती है।

उदाहरण:

- **बच्चा स्कूल से आता है, तो माँ उसे मारती है: कपडे गंदे थे: बच्चा समझ नहीं पाता है, कि इसको हो क्या गया?**
- **पति सुबह ऑफिस जाता है, शाम को चिड़चिड़ाता हुआ लौटता है: पत्नी को समझ में नहीं आता है कि इसकी तकलीफ क्या?**

यह स्वयं में **व्यवस्था** और संपूर्ण अस्तित्व के साथ व्यवस्थापूर्वक जीने की प्रक्रिया है।

स्वयं में **व्यवस्था** **<===>** अस्तित्व के साथ **व्यवस्था**

- ***ऐसा यदि समझकर जीते है, तो स्वयं में भी व्यवस्था एवं संगीत में होते है, और सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ व्यवस्था एवं संगीतपूर्वक जी पाते है***
- *जो सहीं है वह हमारे लिए सहज है। जो सहज है हमको स्वीकार होता है। हमारे लिए जो सहज-**स्वीकार** है हम उसकी मदद लेंगे इस षिविर मे सहीं को समझने के लिए*

स्वयं मे व्यवस्थित होते है, तो दूसरे के साथ व्यवस्था में जी पाते है।

- *व्यवस्था के लिए काम कर पाते है।*
- *वह स्वराज्य के लिए **स्त्रोत** बनता है।*

- इस षिविर में हम चीजों को स्वयं के अधिकार पर जॉचेंगे, **जानने का प्रयास करेंगे**।
- हम में से हर एक में जानने की क्षमता है, यथावत बनी हुई है। **समझने के लिए कोई विशेष योग्यता या पढाई की आवश्यकता नहीं है| हम मानव है, यह पर्याप्त है | इन ७ दिनों में, आप वास्तव में क्या होना चाहते है, कैसे हो सकते है, इसे पता करने का प्रयास करेंगे**
- हमारे लिए जो सही है, वह सहज है, हमारे लिए आरामदायक है।
- हमारी आधारभूत आवष्यकता जानने की है।
- **यह प्रस्ताव आपको बाहर से दिया जा रहा है| यह आपके लिए तभी उपयोगी होगा, जब आप इसे अपने अधिकार पर जांचेंगे, अन्यथा यह आपके लिए बोझ बन जायेगा| हम यह पता करने का प्रयास करेंगे की यह जांचना संभव है की नहीं, और ऐसे जाँच से प्राप्त उत्तर मान्यताओं से मुक्त है कि नहीं|**

ध्यान रखने की कुछ बात

1. **शब्द और अर्थ भिन्न है।**

शब्द	अर्थ
ध्वनि, लिपि है।	वास्तविकता **है**

- शब्द लिखना/बोलना/सुनना पर्याप्त नहीं है।
- इस षिविर में शब्दो का प्रयोग किया जाएगा। यह एक निष्चित अर्थ को इंगित करते है। ये जाने पहचाने लग **सकते** है। **यहाँ** इंगित किये जाने वाले अर्थ **को** समझने का प्रयास करें।
- इन शब्दो का आपने अपने में और कुछ मतलब जोड़ा **हो** सकता है। **उसे** (पूर्व मान्यता **को**) बीच में **ना लाए |** जो भी तुलना करना है बाद में करें।

2. **शब्द देखना, सुनना, और *ध्यान* से सुनना अलग अलग है।**

केवल शब्द सुनना hearing	ध्यान से सुनना listening
शब्द सुना और उसी के साथ प्रश्न बना लिया	अर्थ तक पहुँचने का प्रयास

<u>शोध वस्तु, शोध विधि प्रारंभ</u>

शोध वस्तु, शोध विधि

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

- **1) शोध वस्तु**

  1.1 चाहना? लक्ष्य? -क्यों जी रहे है?

  1.2 करना? कार्यक्रम? कैसे जीना है ?

- **2) शोध विधि:**
  - मानना नहीं, जांचना है | अपने अधिकार पर | सहज-स्वीकार है कि नहीं | जीकर देखना है |
  - प्रश्न को स्वयं में पूछना है, बाहर नहीं | **उदाहरण:** सम्मान या अपमान?; विश्वास या अविश्वास?
  - हमारे लिए जो सहज है, वह शाश्वत है, बदलता नहीं |
  - व्यवस्था ही हमें सहज-स्वीकार है | **उदाहरण:** दुखी स्मरण भूलना चाहते है | विरोध सोचने से दुखी होते है
  - समस्या अस्तित्व में नहीं, प्रकृत में नहीं, बाहर नहीं, हमारे में है |
  - अस्तित्व में सही को जानने की सम्भावना है |उसे निर्माण नहीं करना है | संगीत पूर्वक जीने का प्रावधान है | पहली बार हम authentic (विशुद्ध, प्रामाणिक) हो पाते है
- **1) शोध वस्तु: 1.1: लक्ष्य:**
  - ***अभ्यास १*** : chart(*भौतिक वस्तु (सुविधा)* के अलावा आवश्यकता): इन सबसे क्या चाहते है (सुख)
  - ***लक्ष्य = सुख, निरंतर***
  - सुख, दु:ख, परिभाषा
- **1) शोध वस्तु: 1.2: कार्यक्रम:**
  - सुखी होने का स्तर: ४ (व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति)
  - इनमे से कुछ जोड़ना-घटाना है?
  - सुख-दु:ख चार स्तरों पर है, इनमे ***व्यवस्था समझना है, जीना है***
- **1) शोध वस्तु: 1.3: कैसे जीना:**
  - **समाधान, समृद्धि**

1 शोध वस्तु (content of study)

1.1 चाहना ? लक्ष्य ? - *क्यों जी रहे है ?*

1.2 कार्यक्रम ? - *क्या करना है?* कैसे जीना है ?

Q
- क्या हमारे लिए यह प्रष्न महत्वपूर्ण है ?
- *ध्यान से देखिये। हमारे जीने के 3 सबसे महत्वपूर्ण प्रष्न है*

Q
- अगर ये 3 प्रष्नो के उत्तर हमारे पास उपलब्ध हो, तो क्या महत्वपूर्ण प्रष्न बचते है ?
- *आज हमने कोई लक्ष्य माना हुआ है, कार्यक्रम माना हुआ है*
- *system ने कुछ कार्यक्रम माना हुआ है।*

2. शोध विधि

2.1 प्रस्ताव है — जो भी कहा जा रहा है। माने नहीं

जॉचें: — **अपने अधिकार पर**
- शास्त्र के आधार पर नहीं X
- यंत्र के आधार पर नहीं X
- दूसरे के आधार पर नहीं X

2.2 जॉचें - **निरीक्षण करें, अपने अधिकार पर**

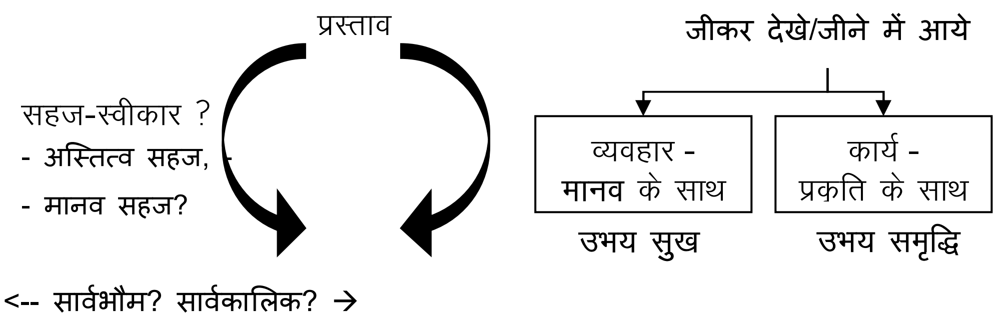

1) अपने पर ध्यान

- प्रष्न को अपने **में पूछना है**, बाहर नहीं ।
- अपनी ही बात करनी है।
- हम सभी इसे कर सकते है |

Q
- उदा. 1. आपको व्यवहार में सम्मान स्वीकार है या अपमान ?
  2. विष्वास स्वीकार है या अविष्वास?
- *हमारे लिए जो सहज है, वह हमें स्वीकार होता है। जैसे– गुस्सा। प्राकृतिक नही है। क्योकि हमें स्वीकार नही होता। हम उसकी निरंतरता चाहते नहीं।*

Q
- ***क्या जलन का भाव होना सहज है?***

- *हमारे लिए जो सहज है, हमारे में शाष्वत है, यथावत intact, invariant है–बदलता नहीं।*
- *आज भी, सहीं गलत का हमें इसी से पता चलता है।*

ii) जांच:

जॉच – अगर कुछ सहज-स्वीकार है, लेकिन जीने में उभय सुख, समृद्धि नहीं हुआ तो उसे मानिये नहीं, खुला रखें, जांचते रहिए।

उदाहरण 1 *जैसे हमको व्यवहार में सम्मान सहज है, स्वीकार होता है परंतु इसके अनुसार जीने **से** उभय सुख नहीं होता है। उसे मानिये नहीं जॉचते रहिए। अतः या तो सम्मान पूर्वक जीना हमारे लिए सही नही है, या हम सम्मान को और कुछ माने है। जो वास्तव में नहीं है।*

उदाहरण 2 *कई **चीजें** जीने में तो अच्छी लगती है पर हम उसे स्वीकारे नहीं रहते। जैसे कॉलेज के मित्रो के साथ गाली गलौज के साथ बात करना अच्छा लगता है। लगता है इससे उभय सुख है। परंतु यह हमारे लिए सहज स्वीकार नहीं है। हम इसकी निरंतरता नहीं चाहतें।*

iii) व्यवस्था सहज-स्वीकार है

- *हमारे पास कोई दुखदायी स्मरण है तो हम उसे भूलना चाहते है। उसकी निरंतरता नहीं चाहते।*
- अव्यवस्था की सोच या स्मरण हमें स्वीकार नही। इसलिए क्योंकि हमें अव्यवस्था सहज नहीं। व्यवस्था **की** सोच में ही हम आराम में है।
  - *हम जैसे ही कोई गलत/विरोधी बात सोचते है, उसी क्षण दुखी होते है। उसके आधार पर व्यवहार करते है। फिर दुखी होते हैं।*
- *समस्या अस्तित्व में नहीं है, प्रकृति में नहीं, समस्या मानव में है।*

- *मानव व्यवस्था में होना चाहता है, **उसे** स्वीकारता है, हो नही पाता, यही दुख है।*

निष्कर्ष : व्यवस्था में होना ही मानव के लिए सहज है उसी को मानव स्वीकारता है।

Q
1. जब आप में अपमान का भाव होता है, तो **आप** सुखी होते है या दुखी ?
2. जब आप अपमान के भाव को व्यक्त करते है, तो क्या होता है ?
   हम ऐसे समझते है, तो आष्वस्त होते है, ऐसे जीते है, तो आष्वस्त होते है।
   जैसे – विष्वास समझ में आ गया, तो उसके लिए अलग से श्रम नही करना पड़ता है। वह हमारे से बहता है
   - आज के दिन हम अन्यथा **प्रशिक्षित** (ट्रेनं) होने के लिए पैसे देते है जैसे मैनेजमेंट में।
   - **आज पैसा देकर दुसरे पर शासन करना सीख रहे है|- जबकि यह हमारे ही दुःख का कारण बन जाता है|**

- शंका, अविष्वास से हम उसी क्षण दुखी होते है। अगर जलन सहज है, वह हमें स्वीकार होगा। हम उसको निरंतर चाहेंगे। परंतु स्वीकार नहीं होता। निरंतर जलन में हम रह नहीं सकते। अतः क्लेष हमारे लिए सहज नहीं है।
- दूसरा मेरे **जैसा** है, यह अगर दिख गया तो हम उसका शोषण नही करेंगें
- आज हमारे पास 'हमारा अपना' कुछ भी नहीं है।

विषुद्ध / प्रामाणिक होना authentic(ऐसे होना है)	उधार / नकल करना borrowing (ऐसे है)

<u>iv) अस्तित्व:</u>

- <u>अस्तित्व में संगीतपूर्वक जीने का प्रावधान है।</u> अस्तित्व में <u>कोई संघर्ष नहीं है| अस्तित्व में संगीतमयता है|</u> उसे मैं समझ सकता हूँ| समझता हूँ, तो सुखी होता हूँ - ऐसे सुखी होकर संगीतमयता में जीता हूँ |
- समस्या अस्तित्व में नहीं है, समस्या प्रकृति में नहीं है: समस्या मानव में है: मानव ही व्यवस्था में नहीं है| होना चाहता है, - समझ पूर्वक हो सकता है |
  - *अस्तित्व में सही को जानने की संभावना है। उसे निर्माण नही करना है*

*** इसी के साथ यह वस्तु सार्वभौम ? सार्वकालिक हैं क्या? इसकी जाँच करना है|**

[(i) सार्वभौम, (ii) सार्वकालिक, (iii) जीने में आये, (iv) समझा सके]

- इस **शोध** विधि से हम **शोध** वस्तु
  1.1) चाहना; 1.2) कार्यक्रम; एवं जीने का स्वरूप, को जाचेंगे

1.1) चाहना/लक्ष्य: क्यों जी रहे है ?

a) प्रश्न: आप क्यों जी रहे है?

अभ्यास - १ : *भौतिक वस्तु (सुविधा)* के अलावा आवश्यकता:

सुविधा के अलावा हमारी आवष्यकताओं की **जो** सूची **बनी है, उसे** देखें: **इन सब में क्या चाहते** है?

1. सुख
2. संबंध
3. सम्मान
4. प्रेम
5. विष्वास

} से सुख — अतः सुखी होना ही चाहते है

Q

- क्या ऐसा कोई कार्यक्रम/जगह है जिससे हम सुखी नहीं होना चाहते है?

सुख कैसा/कितना चाहिए ? हर पल, हर क्षण – निरंतर सुख

- हमें सपने में भी दुख स्वीकार नहीं है।

मूल चाहत = लक्ष्य = निरंतर सुख

Q

- क्या हर **मानव** के लिए जन्म से ऐसा ही है, या इसे अलग से सिखाना पड़ता है ?

सुख =

- *"स्वीकृति के भाव में जीना ही सुख है"* / हर स्थिति परिस्थिति में सामंजस्य होना, उसके साथ जीना ही सुख है

दुख =

- *अस्वीकृति में जीना, अंतर्विरोध में जीना ही दुख हे।*

Q **आपके लिए सुख-दुःख की यह परिभाषा सही है, या नहीं, पता कीजिये?**

b) सुख के उदाहरण, चर्चा:

- *अंतर्विरोध में जीने के कुछ उदाहरण*

1) ए.सी. में बैठे है पर साथ में बैठा व्यक्ति पसंद नहीं है।
2) कोई बैठा भी नहीं है, स्वयं में ही विरोध का विचार बना ..
3) सुविधाएं इकट्ठी कर लिये, संबंधों को अनदेखी किये है| संबंध ठीक नहीं है, तो *भौतिक वस्तु (सुविधा)* का भी बँटवारा हो जाता है
4) बढ़ियां सुविधा घर में उपलब्ध है, संबंध में परेशानी है: वह दिन कैसे बीतेगा?
5) तलाक देने का अधिकार है, या संबंध में जीना अधिकार है? क्या सहज-स्वीकार होता है?
6) विश्वास पूर्वक जीना हमारी मूलभूत आवश्यकता है| और बच्चे को सिखाते है: 'किसी पर विश्वास मत करो' - बच्चा अपने पिता से शुरू करता है!
7) 'जीना एक संघर्ष है'|
8) इस सब के रहते, भगवान को काम सौंपते रहते है: 'यह करो, यह मत करो, उसको निपटाओ...'

<u>चर्चा: आज के दिन:</u>

- मैं सुखी होना चाहता हूँ, यह भी हमको बहुत स्पष्ट नहीं है|
- कहीं न कहीं भागे जा रहे है: कहाँ जा रहे है, क्यों जा रहे है, इसका कोई अता पता नहीं है|
- सारा कार्यक्रम बाहर से तय हो रहा है:
- उदाहरण:
- सेल फोन के एड में कुत्ता आ जाता है: ध्यान (meditation) करते समय: यहाँ भी चैन से बैठने नहीं देते!
- अस्पताल: Dont worry, get your heart checked up in 5 mins! - भागे जा रहे है, इसमें heart समस्या हो रहा है !...

<u>1.2) कायर्क्रम, कैसे जीना?</u>

मै किस स्थिति परिस्थिति में जीता हूँ?

चार स्तर पर समस्याएं है, इसे हम पहले देख चुके है:
इतने से मै जुड़ा हूँ यह मेरे सुखी दुखी होने की जगह हे

- व्यक्ति में
- परिवार में
- समाज में
- प्रकृति में

उदाहरण/चर्चा: ४ स्तर पर किसी में भी समस्या होने से दुखी होते है

हमारा सारा सुख दुख इन चार स्तरों पर है।

Q क्या इसमें कुछ जोड़ा जा सकता है/कम किया जा सकता है?

इन **चारों** स्तरो को समझना है, इसी में जीना है**,** अन्यथा निरंतर सुख संभव नहीं है|

सुखी होना = स्वयं में व्यवस्थित होना, सामंजस्य होना:

- हम यह पाते है, की हमारी सुखी होने की चाहत, संगीतमयता, सामरस्यता में होने की चाहत है, व्यवस्था में होने की चाहत है ।
- यदि हमने कोई अंतर्विरोधी बात को मान लिया है, हम फँस जाते है| हमारी स्वीकृति और अस्तित्व, इसके अनुसार नहीं है – इसीलिए दुखी होते है | यदि हमारा प्रयोजन अस्तित्व के प्रयोजन से मिलता है, तब हमें तृप्तिदायक उत्तर प्राप्त होते है
- मानव या तो अपने मानने से चलता है, या जानने के अनुसार चलते है| हमें मानने से जानने की ओर जाना है

सुखी होना और जिज्ञासा तृप्त होना: चर्चा: हमारे जीने से जुड़े ३ महत्वपूर्ण प्रश्न

1. **मैं क्यों हूँ, कैसे हूँ?**
2. **मेरे आसपास जो भी हैं, क्यों हैं, कैसे हैं?**
3. **इन सब के साथ मेरा संबंध क्या हैं? कैसे जीना हैं?**

४ 'स्तर'	**३ महत्वपूर्ण प्रश्न**	**समझने की वस्तु**
व्यक्ति	मैं क्यों हूँ, कैसे हूँ? : [मानव का अध्ययन]	१) स्वयं को समझना
परिवार	इन सब के साथ मेरा संबंध क्या हैं? कैसे जीना हैं? [मानवीय आचरण, प्रयोजन, सम्पूर्ण संबंधों का अध्ययन]	२) मानव संबंध समझना - (*परिवार एवं समाज में*)
समाज		
प्रकृति		३) प्रकृति संबंध समझना
४ अवस्था: मानव, जीव, प्राण, पदार्थ	मेरे आसपास जो भी हैं, क्यों हैं, कैसे हैं? [अस्तित्व समग्र का अध्ययन]	४) अस्तित्व को समझना

अर्थात, यह सब क्यों है? कैसे है? समझना।

- अतः हमारा सुख समझने पर निर्भर है। समझ से ही हम 'समाधानित' हो पाते है। इसी से हम **समृद्धि** पूर्वक जी पाते है।
- व्यवस्था (4 स्तरो पर) को समझना, व्यवस्था में जीना ही सुख है।
- यही हमारा कार्यक्रम है।

अतः

1.1 चाहना ? लक्ष्य ? क्यों जी रहें है ? = निरंतर सुख, समृद्धि

1.2 करना ? कार्यक्रम क्या है ? = 4 स्तर पर व्यवस्था को समझना और जीना:

- स्वयं (व्यक्ति)
- मानव सम्बन्ध (परिवार, समाज)
- प्रकृति संबंध
- अस्तित्व

अर्थात, चाहना ? लक्ष्य ? क्यों जी रहें है कैसे जीना ? = बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि

लक्ष्य

निरंतर सुख,

के लिए →

कार्यक्रम

4 स्तरों में व्यवस्था को समझना और जीना,

1. व्यक्ति में
2. मानव संबंध (परिवार, समाज)
3. प्रकृति संबंध
4. अस्तित्व

→ ***परिणाम***

बौधिक समाधान
भौतिक समृद्धि

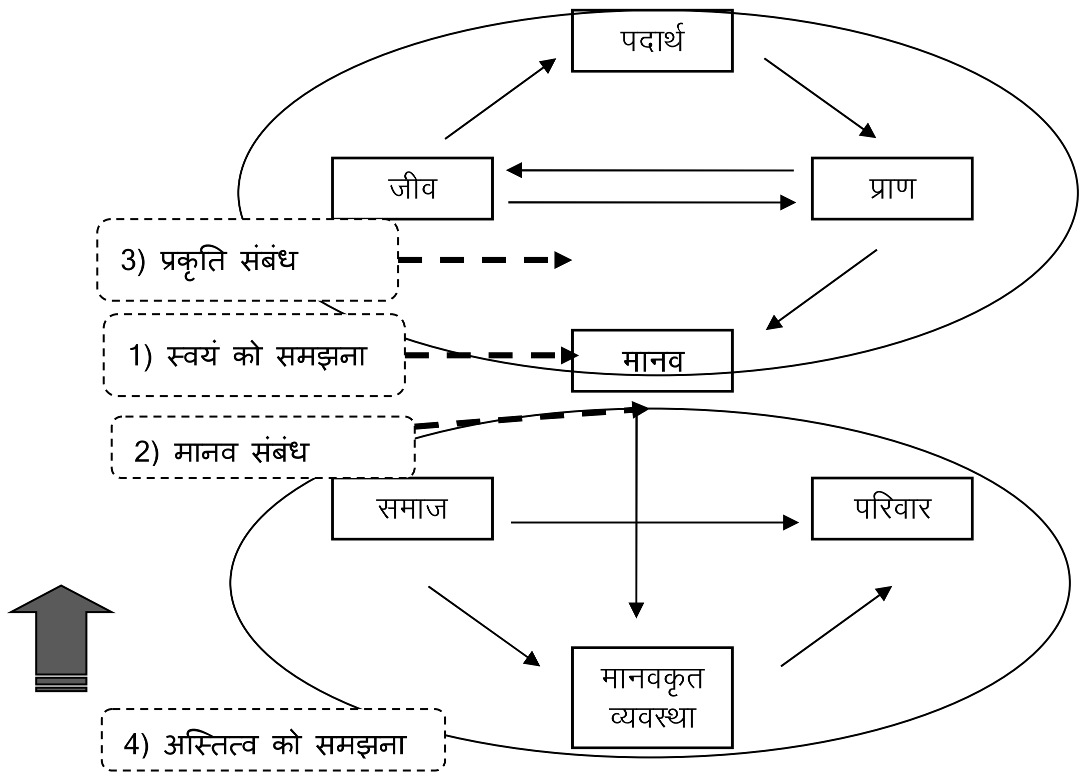

** संबोधन करने वालों (प्रबोधक) को सूचना: शिविर को ऊपर दिए क्रम से कर सकते हैं, अथवा 1, 4, 2, 3 (स्वयं, अस्तित्व, मानव संबंध, प्रकृति संबंध) - इस विधी से भी रक सकते हैं

हम आने वाले ६ दिनों में इन विषयों पर चर्चा करेंगे:

व्यक्ति में

- मैं क्या हूँ, कैसा हूँ?
- सुख-दुःख का मतलब क्या है? मेरे में कहाँ होता है?
- मेरे जीने का क्या लक्ष्य है? मैं क्या जानना चाहता हूँ?

परिवार में

- मानव संबंध क्या है?
- इनमे अपेक्षाएं क्या है? समस्याएं क्यों है?
- परिवार क्यों है? कैसे है?

समाज में

- समाज का लक्ष्य क्या है?
- इसमें व्यवस्था कैसे संभव है?
- आज की समस्याएं क्यों है?

प्रकृति में

- में क्या वास्तविकताएं है?
- क्या इसमें कोई नियम है, या यह अनिश्चित है?
- अस्तित्व का कोई प्रयोजन है या नहीं? इसमें मानव का क्या प्रयोजन है?

इन सभी मुद्दों को हम <u>अपने अधिकार पर जांचेंगे</u>...

1) स्वयं को समझना:

1.1) व्यक्ति में व्यवस्था - प्रारंभ

मानव = जीवन(स्वयं) + शरीर

('जीवन')

1) व्यक्ति में व्यवस्था: मानव = जीवन(स्वयं) + शरीर

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

- **अभ्यास - २:** : मानव की आवश्यकताएं: शारीरिक और मानसिक
    - इन दोनों में अंतर बताएं
- शारीरिक, मानसिक: दोनों चाहिए या किसी एक से मुक्त हो सकते है?
- **निष्कर्ष**: मानव को समझने के लिए दोनों को समझना पड़ेगा |
- प्रस्ताव: मानव = जीवन(स्वयं) + शरीर
- **अभ्यास -३:** (इच्छा सूची)
    - इच्छा सूची में जीवन(स्वयं) और शरीर की आवश्यकताओं को छांटना
    - अभ्यास का अवलोकन: इच्छाएं सीमित है; "मैं" से सम्बंधित ज्यादा है; स्वयं में अपने इच्छाओं के प्रति अस्पष्टता;
        - सारे इच्छाएं समझ, व्यव्हार (संबंध) या *भौतिक वस्तु (सुविधा)* से जुड़ा है |
        - हमारे सारे इच्छाएं सुखी होने के अर्थ में है
- **chart1: मैं-शरीर आवश्यकताएं**: आवश्यकता, अवधि, मात्रा, पूरा कैसे होगा
    - **दोनों पूरा होना है:** खाने पे बुलाया, सम्मान नहीं दिया..
    - **अदल -बदल होता नहीं** : खाना निरंतर, और बीच- बीच में अपमान ...
    - **आज:** मैं की आवश्यकता को शरीर से पूरा करने का प्रयास
- **अभ्यास -४:** मानव में होने वाले क्रियाओं की सूची:
    - जानबूझकर होने वाले, अपने आप होने वाली
    - जानबूझकर होने वाले से केवल जीवन(स्वयं) में होने वाले, मैं+शरीर में होने वाले
    - मैं से शरीर को सूचना |
    - उदाहरण: खेलते समय चोट, उपवास रखना, मार्केट में माँ को बच्चे की आवाज़ सुनाई देना |

  - कौन सोता है? जीवन(स्वयं) में सोचना, कल्पना करना, सुखी, दुखी होना, शरीर सोता है, या विश्राम में है
- **अभ्यास #5**: <u>स्वयं में मानना-पहचानना-निर्वाह करना, शरीर में पहचानना-निर्वाह करना</u> | उदाहरण:
  - शब्द: गुस्सा करना देना: तमिल में, हिंदी में
  - स्पर्श: डॉक्टर ने सुई लगाईं
  - रूप: ट्रेन में किसी पहचान के व्यक्ति के लिए जगह बनाना
  - रस: लड्डू खाया, फिर पता चला कि माँ ने भेजे है
  - गंध: किसी को अगरबत्ती की लगी, किसी को परफ्यूम की
  - शरीर से जीवन(स्वयं) को सूचना, जीवन(स्वयं) में मानना, निर्णय लेना | शरीर से पूरा होता है
- **chart 1**: (जीवन(स्वयं) - शरीर आवश्यकता) में जोड़ना है:
  - जीवन(स्वयं) में मानना-पहचानना-निर्वाह करना, शरीर में पहचानना-निर्वाह करना
  - जीवन(स्वयं) = चैतन्य; शरीर = जड़
- आज की गलत मान्यता: जीवन(स्वयं) = शरीर | सुविधा= सुख | सामान = सम्मान
- मानव के अध्ययन के लिए दोनों पक्षों को समझना पड़ेगा: जीवन(स्वयं) और शरीर
  - (कार्यक्रम: 1) व्यक्ति में, जोड़ना: 1a) जीवन(स्वयं) , 1b) शरीर
- **chart 2**: जीवन(स्वयं) और शरीर में कार्यक्रम
- **घर में अभ्यास:** स्वयं के क्रियाओं पर ध्यान दें: कौनसा जीवन(स्वयं), जीवन(स्वयं) +शरीर, केवल शरीर में हो रहे हैं...
- **इस भाग का सारांश**

1) **व्यक्ति** में व्यवस्था

1.1) अभ्यास - २: <u>मानव की आवश्यकताएँ</u>

मानव की आवष्यकताएॅ क्या है ? सूची बनाएॅ

मानसिक/मन की आवष्यकता	शारीरिक/षरीर की आवष्यकता
सम्मान स्नेह विश्वास प्रेम	कपड़ा मकान भोजन पानी ....

चर्चा से: शारीरिक और मानसिक आवष्यकताओं मे अंतर

क्र.	मानसिक/मन की आवष्यकता	शारीरिक/षरीर की आवष्यकता
1.	भावनात्मक	भौतिक
2.	अमूल्य	खरीद सकते है
3.	निरंतर	क्षणिक
4.	सब के लिए एक	आवश्यकता सबके लिए अलग
5.	ऑखो से नज़र नही आती	ऑखों से नज़र आती है

शारीरिक आवष्यकताओं से मुक्त हो सकतें **हैं** क्या ?

- क्या मानसिक आवष्यकताओं के बिना चल पाएगा ?
- अत: मानव को समझना है, तो इन दोनों पक्षों को समझना पड़ेगा:

- इसके लिए प्रस्ताव है:–

मानव = स्वयं (मैं) ⟷ (+) शरीर *सूचना*

Q

- आप जब रसगुल्ला खाते हैं तो आपको क्या मिला ? शरीर को क्या मिला ?
- शरीर के साथ कुछ भी करते है उसे भोगने वाला ***मैं*** ही हूँ।
- इसलिए '***मैं***' को भी समझना होगा

उदाहरण

क्रिया	शरीर में	**स्वयं('मै)'** में
दुकान की मिठाई खायी	पोषण	स्वाद
अगर पता चला कि मिठाई मॉ ने बनाई है तो	पोषण	स्वाद + भाव/स्वीकृति

- अतः शरीर और 'मै' में सूचना का आदान प्रदान है।

1.2) अभ्यास -३: <u>अपनी इच्छाओं की सूची बनाएँ</u>

इच्छा
1. बड़ा घर 2. गाड़ी 3. पैसा 4. घूमना 5. .... 6. ....

❖ इच्छाओं की लिस्ट में कौन सी इच्छा **"जीवन(स्वयं)"** के लिए है कौन सी "शरीर" के लिए:

इच्छा	मै के लिए	शरीर के लिए
1. बड़ा धर	बड़ा	घर
2.	....	....
3.	....	....

शरीर की आवष्यकताओं को भी '***मैं***' ही पहचानता है

लिखने के बाद अवलोकन

1. इच्छाएँ असीमित नहीं है।
2. जीवन(स्वयं) से संबंधी इच्छाएँ अधिक है, शरीर संबंधी कम है।
3. हम अपनी ही इच्छाओं के बारे में अस्पष्ट है
4. पैसे से अधिक से अधिक शरीर का स्वास्थ्य बनाएं रख सकते है
5. जीवन(स्वयं) /स्वयं की इच्छाएं संबंधित है:
    - समझ – स्वयं से अस्तित्व तक
    - संबंध – स्वयं से अस्तित्व तक
6. सारी इच्छाएँ सुखी होने के अर्थ में ही है. यही हमारा लक्ष्य है

optional

अवलोकन:

- सुविधा के अलावा आवश्यकता = मानसिक आवश्यकता; हमारे मूल चाहने से जुड़ा हैं (अभ्यास १, २) जबकी अभ्यास ३ (इच्छा सूची) इस मूल चाहने को पूरा करने हेतु कार्यक्रम है
- हमने कीया क्या? : कार्यक्रम को लक्ष्य मान लिया है | इसमें उपलब्धि ढूँढते रहे।
  – लक्ष्य पीछे रह गया, लक्ष्य को भुलावा दे दिया।
- लक्ष्य में हम सब एक जैसे हैं, कार्यक्रम अलग अलग मान लिया है
- होना क्या चाहिए?: – लक्ष्य को समझा जाए, उसके लिए कार्यक्रम बनाया जाए।
- लक्ष्य: निरंतर सुख, समाधान, समृधी पूर्वक जीना
- कार्यक्रम दोहराया:

व्यक्ति → (स्वयं(मैं))

परिवार, समाज → (मानव संबंध)

प्रकृति → (प्रकृति संबंध)

–इसमें व्यवस्था को समझना

– हर स्थिति, परिस्थिति–व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना

– यही सुख है।

1.3) chart #1: स्वयं(मै) - शरीर आवश्यकताएं

क्र.	आधार	स्वयं(मै)	शरीर
1	आवश्यकता	सुख, सम्मान, विष्वास, समृद्धि	भोजन, कपड़ा, मकान सुविधा
2	आवश्यकता की अवधि	निरंतर	सामयिक
3	आवश्यकता की मात्रा	मात्रा नहीं, गुणात्मक	सीमित, मात्रात्मक
4	आवश्यकता पूरी कैसे होगी	सही समझ, भाव	भौतिक रासायनिक वस्तु
5	विभिन्नताएं	सबके लिए एक जैसा	सबके लिए अलग अलग
6	**भार**	भारहीन, आँखों, इन्द्रियों मे आता नहीं	भारयुक्त, आँखों मे, इन्द्रियों मे आता है

[क्र: १ से ५ तक पहले बताया]

- 'मै' की आवष्यकता पूरी होने के लिए पैसा/धन की आवष्यकता नहीं है। केवल समझ से ही हो सकता है/होगा।
- दोनो ही आवष्यक है, अनिवार्य है – सुख भी, सुविधा भी
- दोनो चाहिए
  - आपको खाने **पर** बुलाया – सम्मान दिया, खाना नहीं। X
    – खाना दिया, सम्मान नहीं। X
- अदल बदल होता नहीं – स्वयं में सम्मान बंद हुआ –निरंतर न होने से समस्या
  – षरीर **को** भोजन देते रहे –निरंतर होने से समस्या
- इन दोनो प्रकार की आवष्यकताओं को पहचान कर, उन्हे पूरा करना है।
- <u>आज की समस्या</u> **जीवन(स्वयं)** की आवष्यकताओं को शरीर से पूरा करने का प्रयास करते है। यह संभव नहीं है।

- <u>अवलोकन:</u>
  - *भौतिक वस्तु (सुविधा)* के अलावा आवश्यकताएं (अभ्यास-१ में जो बनाया था), और मानसिक आवश्यकताएं, (अभ्यास -२), दोनों एक ही है |
  - अत: सुविधा के अलावा आवश्यकताएं = मानसिक आवश्यकताएं = जीवन(स्वयं) की आवश्यकताएं|
  - आज इसकी अनदेखी की है
  - लक्ष्य में केवल सुविधा ही है।

निष्कर्ष:
– आज के दिन हमने जीवन(स्वयं) की और शरीर की आवश्यकता का गोला बना लिया है क्योकि स्वयं को शरीर मानकर जी रहें है। इसलिए जीने में सुविधा से अधिक कुछ दिखता नही।

1.4) अभ्यास- ४:– मानव में होने वाली क्रियॉएं– सूची बनाएं

जान बूझ कर होने वाली क्रियाएं	अपने आप होने वाली क्रियाएं
1. सोचना 2. समझना 3. गुस्सा होना 4. बोलना	पाचन सांस लेना दिल धड़कना बाल बढ़ना
ऐच्छिक : **जीवन(स्वयं)** ही नियंत्रित करता है; **जिम्मेदारी लेता हूँ**	**मैं** नियंत्रित नहीं करता परंतु **'स्वयं'** की स्वीकृति के साथ **होती** है।

केवल स्वयं में होने वाली क्रियाएं	क्रियाएं जिसमें जीवन(स्वयं)' और शरीर दोनो शामिल है
1. सोचना 2. इच्छा करना 3. सपने देखना 4.	बोलना चलना काम करना ....
केवल **'जीवन(स्वयं)'** में हो रहा है	**'जीवन(स्वयं)'** मे निर्णय, शरीर द्वारा **व्यक्त**

मानव में होने वाली क्रियाओं को तीन प्रकार से देख सकते हैं:

1. केवल स्वयं में होने वाली क्रियाएं
2. क्रियाएं जिसमें 'मै' और शरीर दोनो शामिल है
3. शरीर में स्वतः होने वाली क्रियाए '**जीवन(स्वयं)**' की स्वीकृति के साथ

मै से सूचना शरीर को **जाती** है। शरीर से सूचना **'जीवन(स्वयं)'** लेता है।

उदाहरण:

1. खेलते समय चोट लगना, पता नहीं चलता बाद में ध्यान **जाता है** |
2. उपवास रखना– शरीर पर 'मैं' हावी हो गया
3. मार्केट में **माँ** को ही बच्चे की आवाज़ सुनाई देती है।
4. जब बीमार होते है तो क्या **अपने** विचार करने की क्षमता कम हो जाती है ?
5. क्या आपको **अपने विचारों** का कोई भार लगता है ?

कौन सोता है?

सोते समय: जीवन(स्वयं)	**सोते समय:** शरीर
सोचना/कल्पना करना डरना या खुष होना	श्वसन–प्रष्वसन यथावत बना रहता है
'मै' आराम में नहीं है।	आराम करता है

नींद में Response लेना/ शरीर से **'जीवन(स्वयं)'** में सूचना जाना

. हमारा नाम लेने पर | "आग" चिल्लाने पर | टॉयलेट लगने पर

- नींद **खुलने पर** 'इस दुनिया' में लौटने के लिए समय लगता है।

1.5) अभ्यास ५: जीवन(स्वयं) शरीर में अंतर: **मानना**

उदाहरण: रस्सी को सांप मान लेना; दूकान में हमारे मानने के अनुसार चीजें दिखती हैं

← -

जीवन(स्वयं)	शरीर	उदाहरण: वातावरण में
भाषा अनुसार पहचानना-निर्वाह करना दोस्त - अनजान व्यक्ति अनुसार	(शब्द) : ध्वनि	गुस्सा किया, तमिल, हिंदी में
स्वयं में दर्द | डॉक्टर को सहयोगी के रूप में माना | दूसरे किसी के साथ ऐसा नहीं है | शरीर से दोनों स्थितियों में खून निकलेगा	(स्पर्श): खून	डॉक्टर ने सुई लगाई
पहचान के व्यक्ति के लिए जगह बनाना, अन्यथा नहीं	(रूप) : प्रतिबिम्ब	ट्रेन में किसी को देखा
स्वाद | अगर माँ ने बनाया हो तो भाव भी | दूसरे को केवल स्वाद, भाव नहीं	(रस) : पोषण	मिठाई खाये
अगर कीमती मानते है, तो वाह वाह करना | नहीं मानते है तो उसे अगरबत्ती कहना	(गंध): नाक में	परफ्यूम
निष्कर्ष: ← जीवन(स्वयं) में **मानने** के आधार पर पहचानना - निर्वाह करना बदलता है | ↓ **निर्णय** जीवन(स्वयं) में होता है →	पहचानना - निर्वाह हमेशा एक सामान शरीर से पूरा होता है	← एक ही input से, →

- उदाहरण: यदि मैंने आपका अपमान किया: शरीर में क्या होता है? जीवन(स्वयं) के स्तर पर क्या होता है? दुखी कौन होता है?

1.6) जोड़ें: chart 1: जीवन(स्वयं) -शरीर आवश्यकता में 6th और 7th बिंदु

क्र.	आधार	स्वयं(मै)	शरीर
1	आवश्यकता	सुख, सम्मान, विष्वास, समृद्धि	भोजन, कपड़ा, मकान सुविधा
2	आवश्यकता की अवधि	निरंतर	सामयिक
3	आवश्यकता की मात्रा	मात्रा नहीं, गुणात्मक	सीमित, मात्रात्मक
4	आवश्यकता पूरी कैसे होगी	सही समझ, भाव	भौतिक रासायनिक वस्तु
5	विभिन्नताएं	सबके लिए एक जैसा	सबके लिए अलग अलग
6	**क्रिया**	**(जानना*) - मानना - पहचानना - निर्वाह करना**	**पहचानना-निर्वाह करना**
7	**प्रकार**	**चैतन्य**	**जड़ (भौतिक -रासायनिक)**

*जानना अभी पूरा हुआ नही है। यह पूरा होना है |

*** मानने की क्रिया जहाँ दिखती है, उसे “**चैतन्य**” कहते है ***

- हमको अपने ही बारे में पहली चीज पता नही और इतने सालो से जी रहे है !

आज गलत मान्यताएं

- शरीर = **स्वयं** X
- सुविधा = सुख X
- सामान = सम्मान X

क्या मानव एक संसाधन है?

- स्वयं को शरीर मान लिया | सुविधा भौतिक वस्तु है, | इसलिए मानव को संसाधन मान लिया
- स्वयं = शरीर इसलिए सुविधा = सुख | इसलिए **केवल** ***भौतिक वस्तु (सुविधा)*** से सुखी होने का प्रयास है।

अतः मानव के अध्ययन के लिए स्वयं और शरीर **दोनों** को समझना पड़ेगा।

जोड़ना: कार्यक्रम में 1)व्यक्ति में 1a) जीवन(स्वयं) और 1b)शरीर जोड़ना

1. स्वयं → **1**a) **जीवन(स्वयं)**
2. **मानव संबंध** (परिवार, समाज)
3. प्रकृति **संबंध**
4. अस्तित्व

1.7) chart2:जीवन(स्वयं) - शरीर कार्यक्रम

जीवन(स्वयं)	शरीर
1. मै हूँ |	1. मेरा शरीर है |
2. मै जीना चाहता हूँ |	2.शरीर का साधन की तरह प्रयोग करता हूँ।
3. मै सुखपूर्वक जीना चाहता हूँ |	3. शरीर के पोषण, संरक्षण सदुपयोग के लिए सुविधा आवश्यक है।
4. '4 स्तर पर **व्यवस्था**'* **को** समझना, व्यवस्था में जीना ही मेरा कार्यक्रम है।	4. सुविधा का उत्पादन, संरक्षण, सदुपयोग मेरे कार्यक्रम का एक भाग है।

** चार स्तर पर व्यवस्था =*

1. *स्वयं को समझना (स्वयं में व्यवस्था)*
2. *मानव-मानव सम्बन्ध समझना (परिवार, समाज में व्यवस्था)*
3. *मानव-प्रकृति सम्बन्ध समझना (प्रकृति में व्यवस्था)*
4. *अस्तित्व को समझना*

- उदाहरण:–
  बड़ी कार में बैठ जाने से:

शरीर के लिए → स्पर्ष सीट का गति प्रदान हुई

"मै" के लिए → सम्मान

मानव = जीवन(स्वयं) +शरीर = सारांश (आवश्य बताएं)

1. हमारी समस्याओं का मूल कारण= स्वयं को शरीर मान लेना ही है
2. स्वयं की आवष्यकता= समझ व संबंध

   शरीर की आवष्यकता= सुविधा/पोषण, संरक्षण
3. शरीर की आवष्यकता जीवो में **भी** पूरी हो रही है।

   ''बीमार चिड़िया दिखती नही'' मानव इसे भी ठीक से कर नहीं पा रहा है।
4. सुविधा **अपने** कार्यक्रम **का एक भाग है**, शरीर के स्वास्थ्य के अर्थ में।
5. आज हम स्वयं/'मै' की आवष्यकता को अनदेखी कर रहें है। हमारा सारा ध्यान सुविधा पर है
6. **जीवन(स्वयं) का कार्यक्रम = ४ स्तर पर** व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना

घर में अभ्यासः–

a. अपनी इच्छाओं की सूची बनाइए। इसमें **कौनसे** 'मै' के लिए, शरीर के लिए, चिन्हित कीजिए।
b. इन क्रियाओ पर सतत ध्यान दीजिए
   1. केवल **जीवन(स्वयं)** मे होने वाली क्रियांए।
   2. केवल शरीर में होने वाली क्रियांए। (मै की स्वीकृति के साथ)
   3. मै, शरीर **दोनों** में होने वाली क्रियांए।

---

1) स्वयं को समझना - व्यक्ति में व्यवस्था

- 1.2) जीवन(स्वयं) या 'जीवन' में व्यवस्था प्रारंभ

जीवन(स्वयं) में व्यवस्था

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

- **कल्पनाशीलता: 4.5 क्रिया का परिचय** (किसी एक उदाहरण से)
    - **आस्वादन** क्रिया: रूचि, मूल्य, लक्ष्य मूलक = ३ तरह से सुखी होने का प्रयास
    - हर **चयन** किसी आस्वादन के लिए है
    - आस्वादन का नाम = **मन**, चयन: सुखी होने के **आशा** से है
    - **चित्रण**: होता है | चित्रण, सुखी होने की इच्छा है; चित्रण का नाम **इच्छा** है
    - ऐसे चित्रण/इच्छा के लिए **विश्लेषण (**चित्रण के टुकड़े करना, analysis**) |** विश्लेषण का नाम **विचार** है
    - ऐसा विश्लेषण किसी **तुलन** के आधार पर (दृष्टी: प्रिय-हित-लाभ)
    - शोध विधि में a) सहज-स्वीकार के बगल में **b) 'स्वयं में क्रिया देखना'** जोड़ें
- **4.5 क्रियाएँ कैसे चालित है** (उदाहरण सहित)
    - बाहर से अंदर: चयन-आस्वादन पूर्वक विश्लेषण, ऐसे तुलन-विश्लेषण के लिए चित्रण (इच्छा) हमारे में बन गयी
    - अंदर से बाहर: इच्छा पूर्तिके लिए तुलन पूर्वक विश्लेषण, पश्च्यात, आस्वादन-चयन
- **4.5 क्रियाओं में व्यस्तता:**
    - चित्रण में मान्यता, विचार में व्यस्त, आस्वादन में व्यस्त = दिन भर होता है
- **4.5 क्रियाओं में रहते हुए 4 मुख्य समस्याएं**: (उदाहरण सहित)
    - ***1. मान्यतावश जीना:*** इच्छा बाहर से तय हो रहा है, अपने अधिकार पर नहीं | हमारा Remote बाहर है
    - ***2. सुख की निरंतरता नहीं*** है:
        - कार्यक्रम, इच्छाएं बदलती रहती है - बोरियत
        - इन्द्रियों से सुख भासता है, रहता नहीं
    - ***3. इच्छा-विचार-आशा में अंतर-विरोध:*** = दोहरा व्यक्तित्व, दिखावे की आवश्यकता
    - ***4. सच्चाई पूरी समझ आती नहीं***: जीवन(स्वयं) समझ में आता नहीं; 'संबंध' समझ में नहीं आता है; अस्तित्व पूरा समझ में आता नहीं

- **<u>उपाय:</u>**
    - चिंतन/साक्षात्कार; बोध-संकल्प; अनुभव-प्रमाण को लिखा
    - अच्छी खबर: 5 क्रिया (ऊपर का ब्लाक -**B1**) शाश्वत है, बदलता नहीं | नीचे के 5 क्रियाओं (Block **B2**) को 'ऊपर के 5' के अनुसार चलना है
    - <u>अभी,</u> मान्यतावश जीते है, या शरीर-संवेदना वश जीते है | इच्छा-विचार-आशा का कोई स्थाई आधार नहीं है
    - ***समझ की आवश्यकता:***
        - <u>तुलन:</u> प्रिय-हित-लाभ की जगह, मानव संबंध-व्यवस्था-सच्चाई [न्याय-धर्म-सत्य] का होना है | **रूप-गुण-स्वभाव-धर्म चर्चा**
        - अथवा, स्वयं, मानव संबंध, प्रकृति संबंध, अस्तित्व को समझना है| (4 स्तर पर व्यवस्था को समझना) | ऐसे होने से:
        - <u>चिंतन/साक्षात्कार</u> में: निरंतर रहने वाली वस्तु पहचान में आना
        - <u>बोध:</u> में: जानना, व्यवस्था समझ में आना |
        - <u>अनुभव</u> में: जानने का तृप्ति बिंदु |
        - ऐसा होता है, तो नीचे के 5 क्रियाओं (Block B2) ऊपर के 5 क्रियाओं के (Block B1) अनुसार चलते है| यही स्वयं में संगीत है, सुख है |
- 1.2) अध्ययन विधि में नीचे जोड़ें: भास्-आभास-साक्षात्कार-बोध-अनुभव
- chart 2 - जीवन(स्वयं) -शरीर कार्यक्रम में जोड़ना:
    - 5th बिंदु: **मैं दृष्टा-कर्ता-भोक्ता हूँ ; शरीर साधन है**
    - 6th बिंदु: **जीवन** (जीने की आशा है, इसलिए 'जीवन' नाम दिया)
- जीवन(स्वयं) कि 10 क्रियाओं के ऊपर जोड़ा: **'जीवन'**

1a) मानव मे व्यवस्था

कहाँ देखना है?:

जैसे – मैने कहा यह मेरे हाथ में पेन है। इसे कहॉ देख रहें है ? (**बाहर**)

अब कहा, आपको गुस्सा है – इसे कहॉ देखेगें ? (**स्वयं में**)

उदाहरण: <u>कल्पनाशीलता</u>

''एक बड़ा सा मैदान है। उसमें हरी घास है। एक काले रंग की गाय घास खा रही है। बगल में एक हरा भरा पेड़ है। उसमें आम के फल भरे है। गाय का बछड़ा उसके नीचे खेल रहा हैं।

Q
- आपमें क्या हुआ ? कल्पना बनी, शरीर को केवल सूचना मिली।

''एक बड़ा सा मैदान है। उसमें टूटे फूटे घर है। गोलियों की बौछार हो रही है। एक काली गाय मरी पड़ी है। आम का पेड़ टूटा हुआ है। गाय के बछड़े के पैर गोलियों से भरे है। बगल में एक बच्चे की लाष पड़ी है।

Q
- आपमें क्या हुआ ? कल्पना बनी

अवलोकन:

1. बाहर से शब्द कहें, मैने– आपके शरीर(कान) पर ध्वनि पड़ी।– आपमें कल्पना बनी।
   अगर आप हिन्दी नहीं जानते तो यह कल्पना नहीं उभरती।
2. दोनों उदाहरण में, कौन से में आपको अपने मे ज्यादा ठीक लगा ?
   इसे **कल्पनाषीलता** कहते है। इसे अब **समझेंगे** ।
3. मै एक एक कर के नाम लेता हूँ, उसे आप अपने में देखें:

देखने का मतलब *<u>समझने</u>* से है

देखना
- ऑखों द्वारा (यह पर्याप्त नहीं हैं।)
- स्वयं (मै) में /से देखना **है**

* कल्पना आँखों से अधिक है:> आँखों से जो चित्र देखते है, उससे अधिक कल्पना में आता है, समझ में आता है|

जीवन(स्वयं) में क्रियाएँ

1) कल्पनाशीलता का परिचय (4.5 क्रिया)

आस्वादन

जैसे– रसगुल्ले का स्वाद, ठंड, गरमी आदि का स्वाद लेते है।

- यह सुख की चाहना हमारे में हर क्षण है, या कुछ ही समय बना है ?

मानव 3 प्रकार से सुखी होने का प्रयास करता हैं:

इन्द्रियों से	भाव से	लक्ष्य से
शब्द, स्पर्ष, रूप, रस, गंध	**मानव** संबंध	**व्यवस्था, प्रयोजन**
(सुविधा)	(संबंध)	(समझ)
रूचि मूलक	**मूल्य मूलक**	**लक्ष्य मूलक**

आस्वादन

1. रूचि मूलक 2. मूल्य मूलक 3. लक्ष्य मूलक

Q

- हम आज किस में ज्यादा समय दें रहें है?
- निरंतरता की संभावना किस में है ?
- सारा कार्यक्रम, ध्यान कहाॅ है ?

- हर क्षण, हर पल सुखी होने का कार्यक्रम बना है।

- इसी को मन की चंचलता कहते है, क्योंकि मन सुख के लिए शोधरत **रहता** है।

Q

- **आस्वादन** क्रिया का नाम **मन** है
- जैसे इस षिविर में जो ध्यान दे रहें है, वह क्या आस्वादन है?

चयन

- आपको यह बात अगर ठीक नहीं लगी, तो आपका ध्यान और कहीं चले जाता है।
- मतलब हर समय **चयन** भी हो **रहा** है।

मन ← आस्वादन → **चयन**
क्रिया का नाम — इसके लिए

उदाहरण

- **अच्छा गाना सुना**
- **अच्छा स्वाद**
- **सुगंध/दुर्गन्ध**
- a/c **में बैठना**

} रूचि मूलक } सुखी, दुखी होते **ही** रहते है

- संबंध को पहचानना: **विश्वास, सम्मान, स्नेह...** } मूल्य मूलक
- समझना है / समझाना है } लक्ष्य मूलक

मन – आस्वादन (→ रूचि, मूल्य, लक्ष्य) चयन – **आषा**

शरीर ↕ (सूचना)

- हर चयन किसी आस्वादन के लिए है।

चित्रण

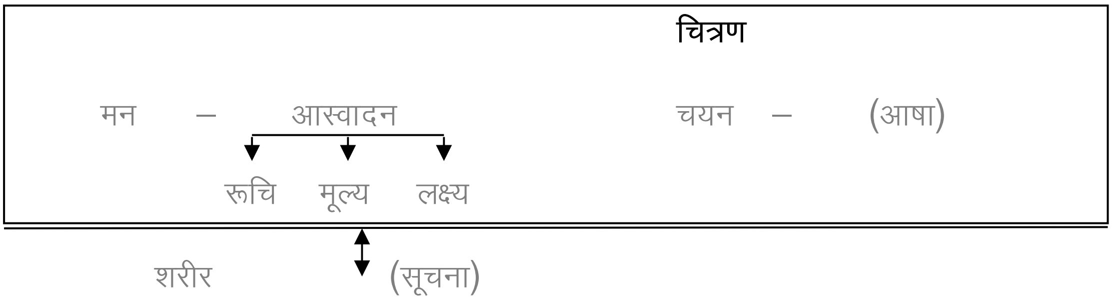

- हर समय हर पल आपमें चित्र बनता ही रहता है।

	बाहर का चित्र	अंदर का चित्र
दिन में/जागते समय	√	√
रात में/सोते समय	X	√

उदाहरण

- *जैसे आपने किसी को फोन किया इस षिविर के बारे में बताया*
- *उसे शब्द रूप में इनपुट मिला*
- *उसमें एक चित्र उभरा*
- *उसने उस चित्र को **अपने** सुख के अर्थ में पहचाना*
- तब यही उसकी **इच्छा** बनी

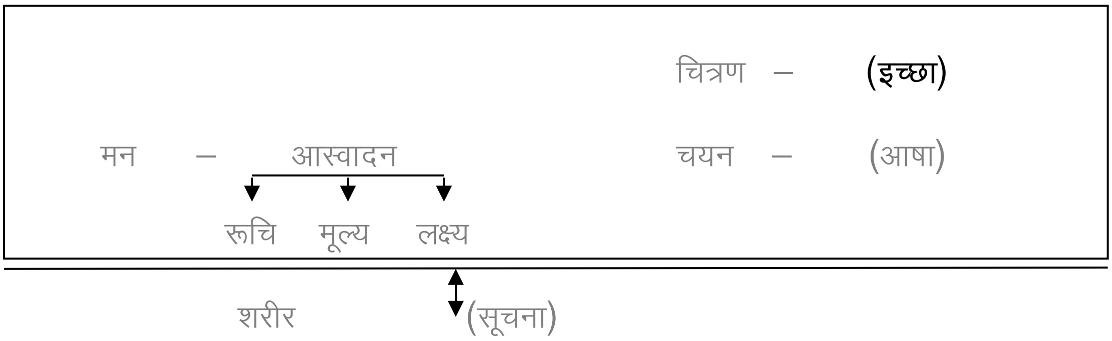

- *उसे सूचना भले ही बाहर से मिली हो पर अंदर में जब वह चित्र उसे अपने सुख के अर्थ में दिखा, तब ही उसकी स्वीकृति बनी / **तभी वह उसकी इच्छा बनी***

यह हमारे साथ दिन भर हो रहा है

1. *बाहर से सूचना मिलती है।*
2. *स्वयं में उसका चित्र बनता है।*
3. *इस चित्र से सुखी होने की आषा **जगती है***
4. *अब यह मेरी इच्छा कहलाएगी।*

- चित्रण मेरे सुखी होने का आधार है। इसी का नाम <u>इच्छा</u> है। हमारी इच्छाएं 'चित्रण' के रूप में होती है| जैसे, "बड़ा आदमी बनना" एक **<u>इच्छा</u>** है, इसके मूल में एक **<u>चित्र</u>** है|

विष्लेषण

- इच्छा बन गई अब क्या करते है ?
- जैसे दोस्त षिविर में आना चाहता है तो पूछता है– कहॉ है ?, कैसे आएंगे ?, कब आना है ? आदि आदि।
- यही **विष्लेषण** है।

चित्र को **फैलाना, उसके टुकड़ों में जाना** ही **विष्लेषण** (analysis) है| इसे हम **'विचार'** कहते है

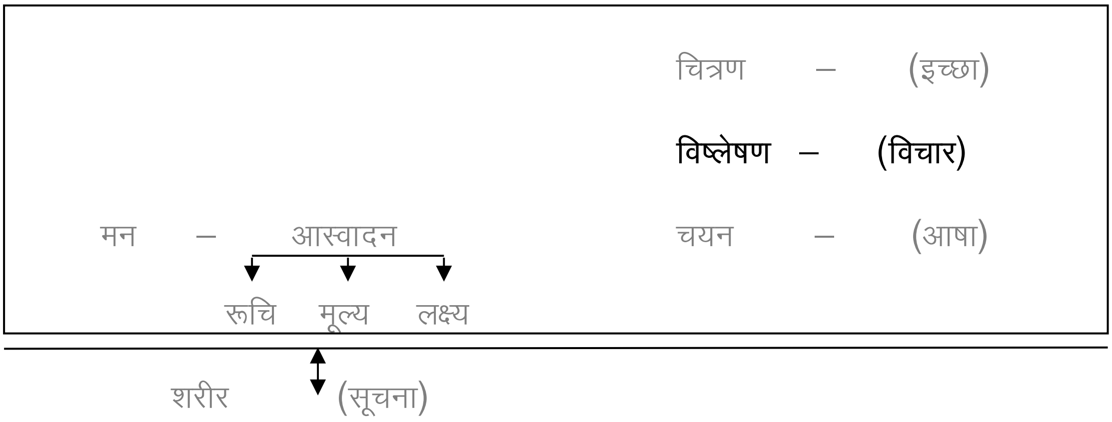

तुलन

- जैसे चयन के मूल में आस्वादन है, उसी तरह विष्लेषण के मूल में भी एक क्रिया है।

उदाहरण:– जैसे आपने जब दोस्त को षिविर करने के लिए कहा तो उसने पूछा

प्रश्न	दृष्टि	अर्थ
1. क्या खाना अच्छा मिलेगा ?	प्रिय	इन्द्रियों के लिए
2. क्या योग सिखाएंगे ?	हित	स्वास्थ्य के लिए
3. क्या **व्यापार में तरक्की मिलेगी?**	लाभ	धन के लिए

- फिर आपने कहा ''यहॉ आने से अपने से **आपका अपनी** पत्नी **से** का संबंध ठीक हो जाएगा। - तो वह अलग विधि से सोचता है।
- इसका मतलब है विष्लेषण के पीछे कोई **दृष्टि** काम कर रही है।
- इसी क्रिया को **तुलन** कहते **है**
- **विष्लेषण का आधार तुलन या तुलन की दृष्टियॉ है।**
- तुलन में "दृष्टि" के अनुसार विष्लेषण बदलता है।

<u>**इतनी सारी क्रियाएँ**</u> <u>हमारे अंदर हो रही है हमने इन्हें बनाया नहीं है।</u>

<u>यह जो भी बात हो रही है, उसे हमें स्वयं में देखना है| यह 'बाहर' देखने से नहीं मिलेगा |</u>

अध्ययन विधि में जोड़ें: '<u>1) स्वयं में क्रिया देखना</u>' : *जो भी 'स्वयं' के बारे कहा जा रहा है, उसे स्वयं में ही सीधे क्रिया रूप में देखना है|*

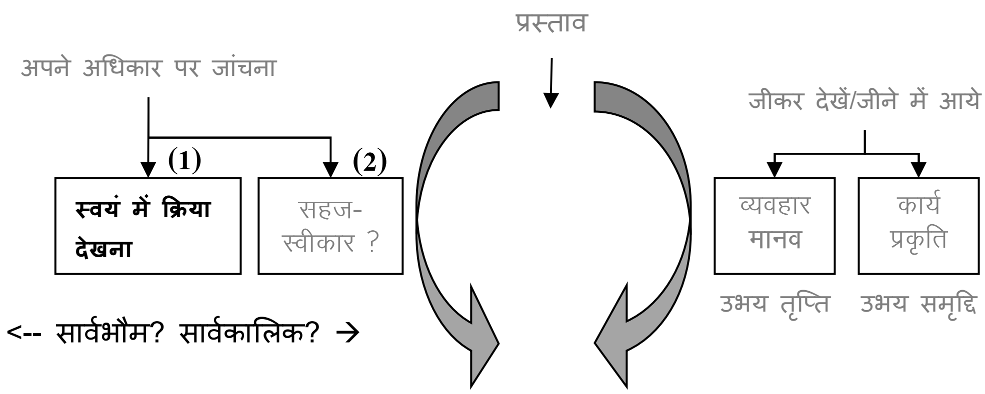

(2) 4½ क्रिया कैसे चालित है

चित्रण – (इच्छा)

विश्लेषण – (विचार)

– तुलन → प्रिय, हित, लाभ

मन – आस्वादन → रूचि, मूल्य, लक्ष्य

चयन – (आषा)

स्वयं में कल्पनाशीलता

शरीर ↕ (सूचना)

(1). बाहर से अंदर (इच्छा बनना)

जैसे एक मोटर साईकल देखी। उसका रंग पसंद आया।	आस्वादन
↓ उसके बारे में सोचा → स्पीड अच्छी लगेगी / चलने से पैर खराब हो रहे है ठीक होंगे / पैसे कितने लगेंगे?	तुलन के आधार पर विश्लेषण
प्रिय, हित, लाभ ↓ मुझे सम्मान मिलेगा, मुझे मोटर साईकल चाहिए (यह मेरे मे इच्छा रूप में स्थापित हो गई।)	चित्रण या इच्छा

- अब मै इस इच्छा से चालित हूँ।
- इच्छा स्वयं में लम्बे समय तक बनी रहती है।
- इसकी पूर्ति कें लिए हम कार्यक्रम बनाते हैं।
- फिर चयन करते है और मोटर साईकल ले लेते है

(2). अंदर से बाहर

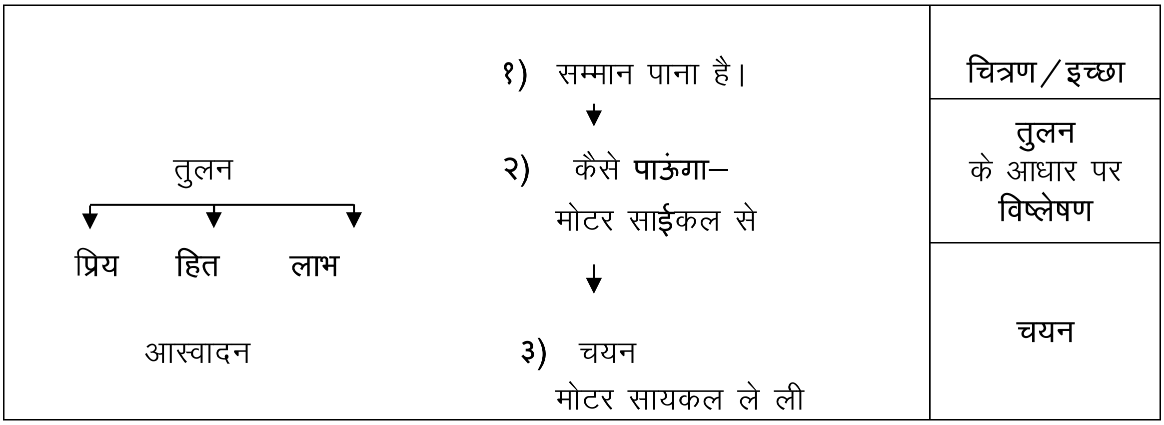

(3) 4½ क्रियांओ मे व्यस्तता

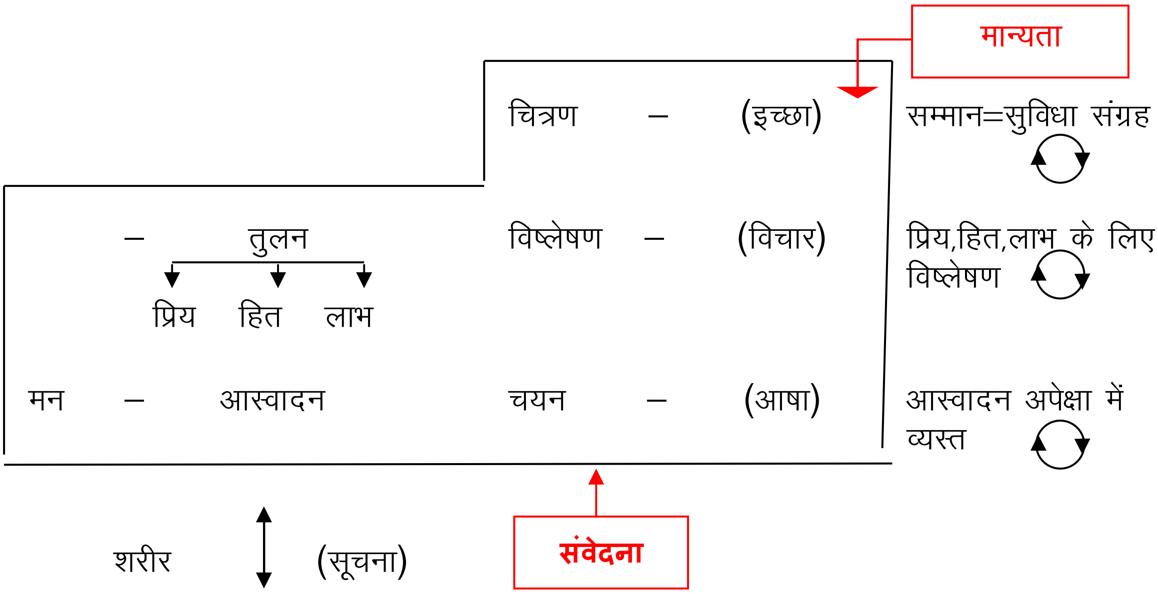

- हमारा इच्छा-विचार-आशा या तो <u>मान्यता</u> से चालित है, या <u>संवेदना</u> से
- दिन भर हम इसमें व्यस्त रहते है |

उदाहरण

- 'मुंगेरी लाल के हसीन सपने' जैसे
- इस क्लास में भी ऐसे ही होता है!
- हम बाईक चलाते, गाड़ी में इस तरह व्यस्त रहते है

Q **प्रश्न:** यह क्रियाएँ आपमें निरंतर हो रही है या नहीं, इसे स्वयं में सीधे देखें|

*नोट: * 'चित्रण' **क्रिया** में पॅचो ज्ञानेंद्रियों से मिली सूचनाओं को ग्रहण करना, रिकार्ड करना **भी** होता है।*

(4) 4½ क्रियांओ मे समस्या

1. मान्यतावष जीना:

'अपना' बहुत कम है

- हमारी इच्छाएॅ बाहर से तय होती है। हमारा रिमोट कंट्रोल बाहर है।
- विज्ञापन इसी का फायदा उठाता है

उदाहरण - विज्ञपान, दूसरों से तुलना करना

1. बैंक – 'गर्व के साथ रिटायर हो जाइए'।
2. कोल्ड ड्रिंक : 'जिन्दगी हो तो ऐसी' – कैसी का पता नहीं !!
3. टी वी : Neighbours envy owners pride
4. गाड़ी : Rule the road
5. Mall: Shop, Eat, Celebrate! - सुख को सुविधा माना है इसलिए इसे खरीदने को बोल रहे है
6. बोलने का ढंग (अंग्रेजियत), फटे हुए कपडे, बाल रंगना, चम्मच उठाके खाने का तरीका, दूसरों के जूते देखना |
7. आधुनिकता में सारे लोग एक जैसे दिखते है| यह अभी नया धर्म-शास्त्र है
8. श्रेष्टता:बाल नहीं बनाना

निष्कर्ष

- हम सारी जिन्दगी किसी दूसरे/बाहर से तय की हुई इच्छाओ की पूर्ति में लगा रहे है।
- इसका स्टॉक हर किसी को लेना है। हर कोई स्टॉकिस्ट है। इसमें पट्टा/property right दूसरा ले नहीं सकता।
- स्वयं में जो मान्यताएं है, हमें इनके प्रति सजग होना है| यह मेरे में है, पहले यह दिख जाये: इसके पश्च्यात, इसे रखना है की नहीं, मेरे लिए उपयोगी है या नहीं, इसे तय करना होगा|

- हमें अपनी ही इच्छाओ के प्रति स्पष्टता नहीं है।
- इसलिए हम उसे पाकर भी अधूरे में रह जाते है। थोड़े साल बाद खालीपन रहता/लगता है।
- इसलिए सारा पाकर भी खालीपन सा लगता है।

2. सुख/तृप्ति की निरंतरता नहीं है।

a. कार्यक्रम बदलता रहता है।

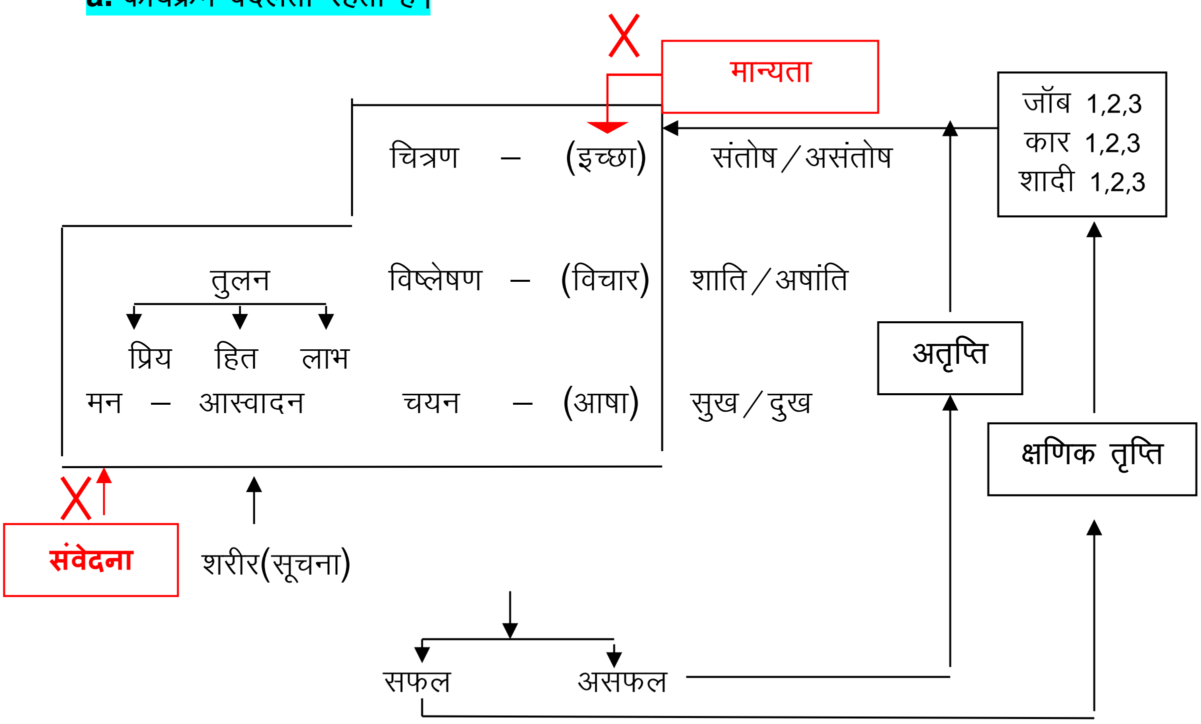

b. शरीर संवेदना से सुख **भासता** है। सुख रहता नहीं।

उदाहरण – यदि गुलाब जामुन लगातार खाया

२ खाया -	आवश्यक व रूचिकर	सुख भासता है
४ खाया -	अनावश्यक व रूचिकर	
६ खाया -	अनावश्यक व अरूचिकर	यह **अब** दुख का कारण बनता है!
१० खाया -	अनावश्यक व असहनीय	

- "बाह्य वस्तु के संपर्क से शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध इन्द्रियों में होने वाले संवेदना के आस्वादन से मिलने वाले सुख की निरंतरता नहीं है

- आज हम भी पशु जैसे आस्वादन के लाइन में लगे है!

- आज पांचो इन्द्रियों से, संवेदनाओं से सुखी होने का प्रयास इसीलिए है, क्योंकि सुखी होने का दूसरा कोई स्रोत हमारे पास नहीं है| जब समझ और संबंध से सुखी होने की सभावनाएं आ जाती है, तो इन्द्रियों से सुखी होने की निर्भरता क्रमश: नियंत्रित हो जाती है|
- आज सबका सुख इसीलिए अलग लगता है, क्योंकि 5 इन्द्रियों **से** आस्वादन **मात्र** को सुख माना है। इसमें अनगिनत संभावनाएं है
- **सुख को "सामंजस्य" के अर्थ में पारिभाषित करने के बाद ही, सुख सभी के लिए एक है- यह समझ में आता है|**
- मात्र इन्द्रियों पर निर्भरता सुखी होने के लिए एक **गरीब उपाय** है| मात्र चयन-आस्वादन में जीना, पशुओं के लिए ठीक है, क्योंकि वह शरीर को बनाये रखने से तृप्त है| मानव, "समझ" और "संबंध" से ही सुखी होता है

अत: मान्यतावश जीना, अथवा शरीर संवेदना अनुसार जीना दोनों ही **परतंत्रता** है

3. स्वयं में अंतर्विरोध

a) इच्छा-विचार-आशा में अंतर्विरोध:

इ.1 इ.2 इ.3 -	इच्छाओं में अंतर्विरोध (कपड़ा से सम्मान -- **साधारण जिंदगी**)
वि.1 वि.2 वि.3 -	भाई के साथ संबंध निर्वाह करना है – पैस **लेना** है।
आ.1 आ.2 आ.3 -	क्या खाना है निर्णय नहीं कर पाना

- हम आज अंतर्विरोध का गोला बन चुके है

उदाहरण: किसी जगह में एक शिक्षक की इच्छा: 'जीते जी अपार सम्पदा, मरने के बाद मोक्ष!'

b) दोहरा व्यक्तित्व

हर इच्छा के अनुसार हमारा एक अलग व्यक्तित्व दिखता/लगता है:

इच्छा 1	इच्छा 2	इच्छा 3
पैसे से सम्मान पाना है।	शासन पूर्वक जीना है।	सिम्पल लिविंग होना है।
"मैं-1"	"मैं-2"	"मैं-3"

- हम सुबह कुछ, दोपहर को कुछ, शाम को ओर ही कुछ होते है

उदाहरण:

- दिल्ली में बच्चे से यह बात कहने पर, अपने पिताजी को पागल कहा !
- हम लोगों में अनिश्चित आचरण है | यही पागलपन है !

4. सच्चाई/वास्तविकता का कुछ ही आयाम समझ में आता है

- यह आता नहीं:
  1. जीवन(स्वयं) की समझ
  2. जीने का प्रयोजन: मानव-मानव संबंध, मानव-प्रकृति संबंध की समझ
  3. अस्तित्व सम्पूर्ण की समझ

निष्कर्ष: इस प्रकार, हम या तो मान्यताओं से चालित है, या संवेदनाओं से| ऐसे होते, हमारा सारा कार्यक्रम अनिश्चित है, एवं इनमे अंतर्विरोध होगा ही| इसीलिए हम अपने अधिकार पर कोई भी चीज नहीं कह पाते है

Q अभी तक जो चर्चा हुई है, क्या यह क्रियाएँ आँखों मे आते है? ५ संवेदनाओं मे आते है?

(5) उपाय? – रास्ता : जानना/समझ की आवश्यकता

जोड़ें: *'जीवन(स्वयं)' के क्रियाओं में चिंतन, बोध, अनुभव, प्रमाण, संकल्प क्रियाएँ :*

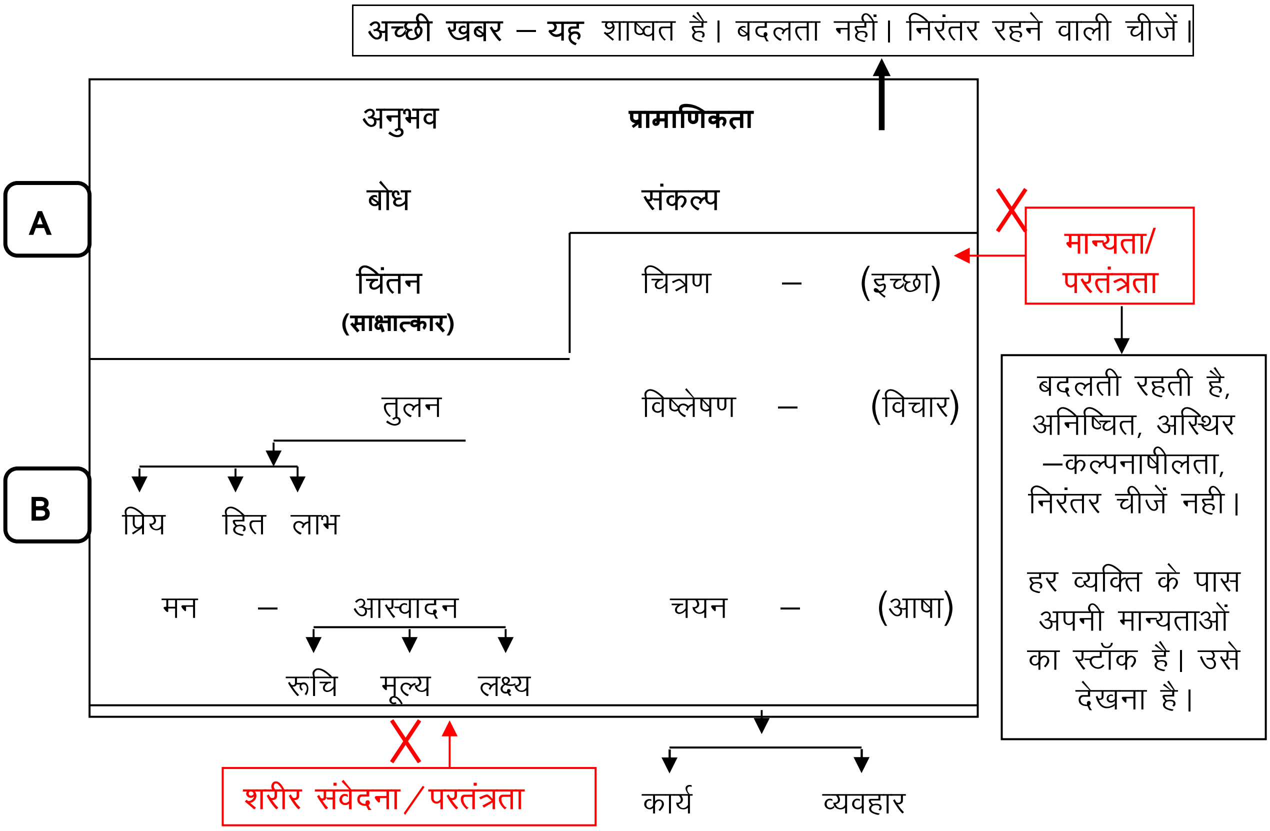

- अच्छी खबर– ऊपर का ब्लॉक **(Block A)** शाष्वत **है,** बदलता नहीं है। नीचे की क्रियाएं **(Block B)** ऊपर के ब्लॉक के अनुसार होना है।

- यही 5 क्रियांए**-** ऊपर का ब्लॉक **(Block A)** "सहज-स्वीकार" का आधार है। परंतु (नीचे के 4½ क्रियांओं में जीते हुए, अथवा**(Block B)** में जीते हुए)यह 5 क्रियांए **(Block A) आज** व्यक्त नहीं है ।

- *ऐसे होते हुए भी हमें आज सही गलत का पता चलता है। (जैसे 'संबंध में सम्मान स्वीकार होना न कि अपमान'। 'संबंध में जीना सहज है न कि विरोध मे')। क्योंकि 4½ क्रियाओं* **(Block B)** *में **सच्चाई हर मानव में "सूक्ष्म इच्छा" के रूप में बना ही है/** इसी के सहारे शुरू करते, चलते हम सच्चाई **तक पहुँचते है***

- अतः ऊपर की 5 क्रियाएं अव्यक्त रहते हुए भी हमको **नीचे के** 4½ क्रिया **(Block B)** में सच्चाई <u>भासता है</u>**, <u>आभास</u> होता है** । सच्चाई ही हमें सहज **-** स्वीकार **होती** है।

- इसी से आज भी हमको सही-गलत का पता चलता है| ऊपर के ५ क्रियाओं में (Block B1) कोई भी गलत चीज जा ही नहीं पाती| उसके अस्वीकृति का हमको अपने में, गहरे में, पता चलता ही है| सामने वाले को भले ही पता न हो, हमको अपने में, गहरे में, पता तो चलता है| जैसे विरोध अस्वीकार होता है, विश्वासघात अस्वीकार होता है| 'यह गलत है' - हमको अपने में पता ही चलता है| यह बात यदि नहीं होती, सच्चाई तक हम पहुँच भी नहीं सकते थे!
- आज तक इसको हम अनदेखी करके चल रहे है, और इसके विपरीत ढेर सारी मान्यताओं को ओढ़ लिया है, उनको सही मान लिया है, जो स्वयं हमारा दु:ख का कारण बन गए है| अत: हमारा 'चाहना' जब इसके अनुकूल होगा, तभी सुख की सम्भावना बनती है |

मात्र नीचे के **(Block B) क्रियाओं में जीना = स्वयं को शरीर मानकर जीना = जीव चेतना**

१० क्रियाओं का स्पष्ट ज्ञान रहना, = (Block B), (Block A) का स्पष्ट ज्ञान रहना = जीवन(स्वयं) और शरीर का स्पष्ट ज्ञान रहना

= मानव चेतना

घर में पढ़ने हेतु

1. *नीचे के Block-B में "सही की अपेक्षा, चाहत", हर मानव में "सूक्ष्म इच्छा" के रूप में बना ही है / (इच्छा या चित्रण के रूप में)/ जैसे, न्याय-धर्म-सत्य को न जानते हुए भी, 'यह चाहिए' यह प्रत्येक व्यक्ति में बना रहता है।*
2. *नीचे के ५ (Block B) क्रियाओं में जीते हुए सही का* ***भास, आभास*** *होता ही है / सर्वप्रथम, कल्पना, इच्छा, विचार रूप में सत्य स्वीकार होता है/*
3. *ऊपर के 5 क्रियाएँ (Block A), सुप्त रहते है, अव्यक्त है:- इनमे सच्चाई का, सही की, निरंतरता की अपेक्षा बनी ही रहती है/ इसी के प्रभाव से नीचे (Block B), के क्रियाओं में भी सही के ओर उन्मुखता, सही का प्यास बनी रहती ही है /*
4. *कोई भी गलत कल्पना, अव्यवस्था की कल्पना ऊपर के क्रियाओं में स्वीकार होता नहीं, और इसका संकेत हमको 4½ क्रियाओं में मिलता ही है: हमको अपने में पता लगता है / जैसे अव्यवस्था, विश्वासघात का सोच, इच्छा, हमें अपने में स्वीकार नहीं होता है/ इस तरह यह स्वयं में ही अंतर्विरोध बना रहता है/*

समझ का रास्ता

समझने के लिए पहला कदम मानव संबंध, व्यवस्था एवं सच्चाई के 'तुलन' के साथ ही हो पाता है:

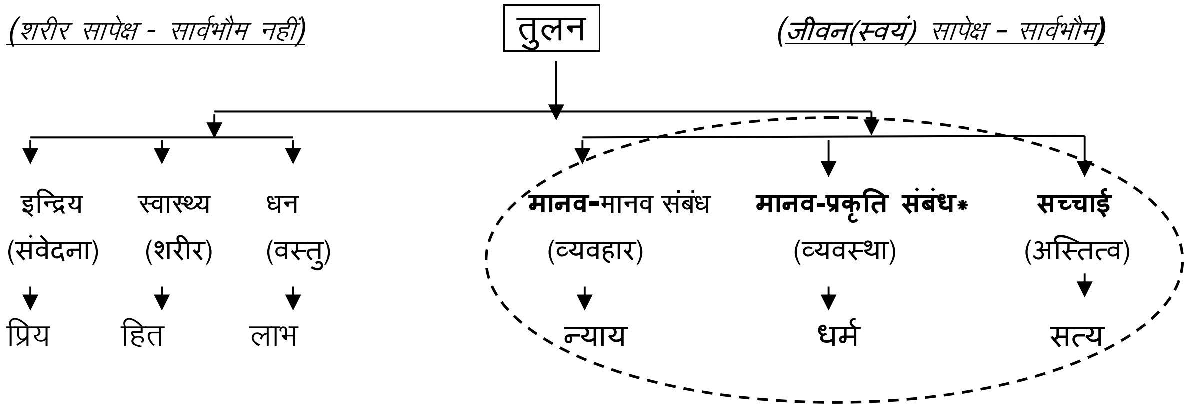

** यहाँ प्रकृति से आशय: चारों अवस्था से है। मानव, जीव, प्राण एवं पदार्थ, और इनमें अंतर्संबंध*

इसी को निम्नलिखित रूप में देख सकते है:

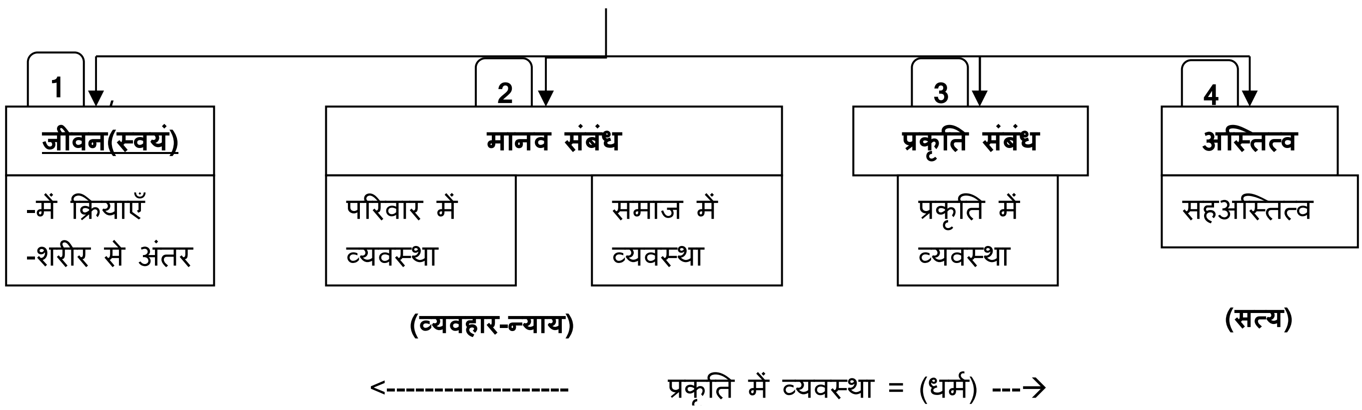

इन **4 चीजों** पर हमारा ध्यान चले जाये - यह निरंतर रहने वाले चीजें है:

** इसके पहले हम जिन चीजों पर ध्यान दे रहे होते हैं, उनका कोई निरंतरता नहीं होती (प्रिय-हित-लाभ संबंधी वस्तुएं)*

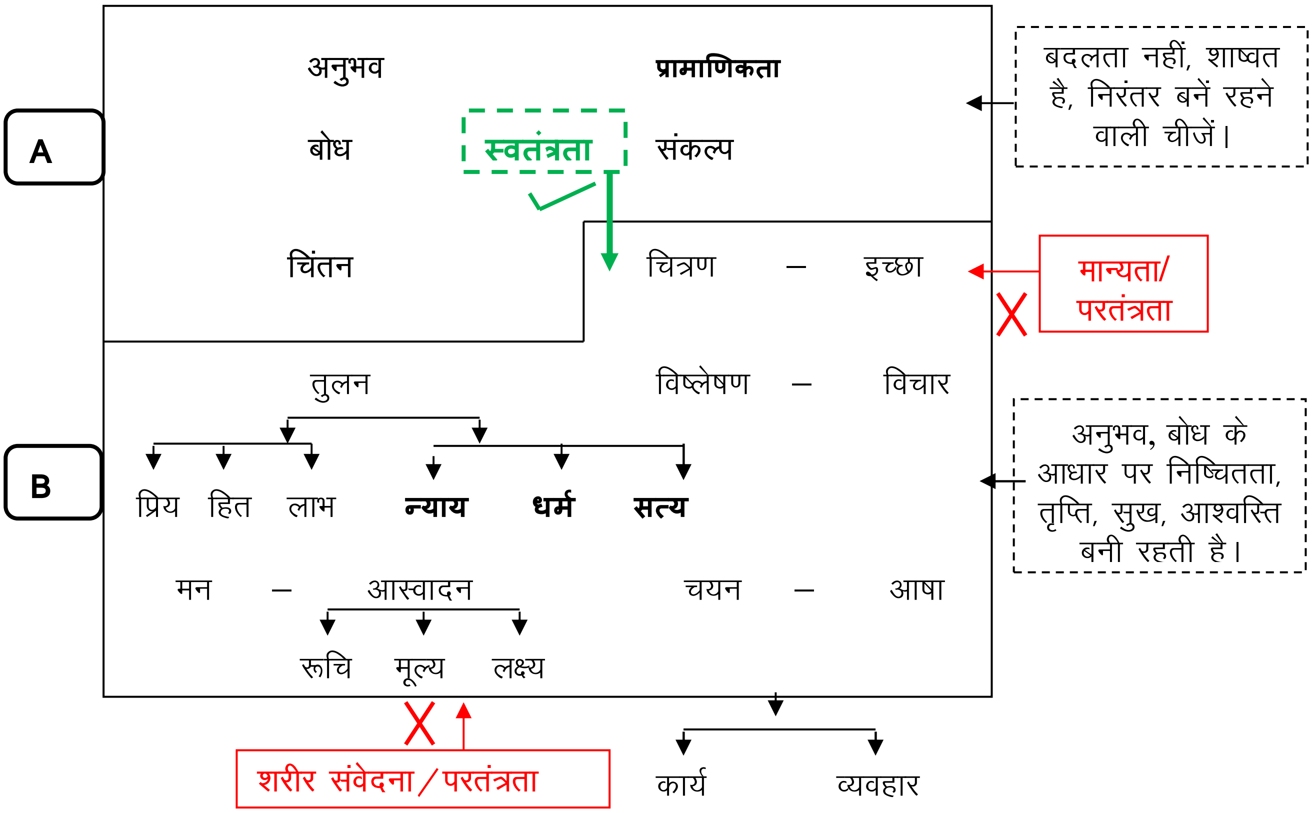

इन चार निरंतर रहने वाली चीजों (जीवन(स्वयं) , मानव संबंध, प्रकृति संबंध, सह-अस्तित्व) को समझने का प्रयास यदि सटीक हो, तो:

- **साक्षात्कार (चिंतन) में**
  - निरंतर रहने वाली चीजों की पहचान होती है स्वयं (जीवन), न्याय, धर्म, सत्य का पहचान; इसमें प्रयोजन स्पष्ट होना
- **बोध में**
  - साक्षात्कार में जो वस्तु पहचाना, वह बोध में पक्का होता हैं, निश्चय होता है| वस्तु में अंतर्संबंध स्पष्ट होता है | व्यवस्था समझ में आता है, हम वास्तविकता को 'जानते' हैं, ज्ञान होता हैं
- **अनुभव में**
  - जानना पूरा होता है: तृप्त होते है, ज्ञान पूरा होता है

- ❖ **ऐसा समझ होने से 'नीचे' का B block 'ऊपर' के A block के अनुसार चलना शुरू करता है: यही सामंजस्यता है, सुख है|**

- ❖ **अत: ऐसी 'समझ' से हम 'समाधानित' होते है, और सुख पूर्वक जी पाते है | हमारे सभी प्रश्नों का उत्तर हमें अपने अधिकार प्राप्त होता है, हम उनके प्रति शंका मुक्त होते है, 'जानना' होता है |**

** नोट: समझने के क्रम में साक्षात्कार - जीवन(स्वयं) के 'चिंतन' क्रिया में होता है*

- **साक्षात्कार-बोध-अनुभव** निरंतर रहने वाली **वस्तुओं** (न्याय-धर्म-सत्य) का ही होता है। इसलिए आज तृप्ति नहीं है –क्योंकि हम निरंतरता चाहते है और हमारे पास कुछ भी निरंतर नही है।
- "जानने"` का **तात्पर्य** जो सार्वभौम हो, सार्वकालिक हो, और हमेशा हमारे में यथावत बना रहे।
- Block B एवं Block A अविभाज्य है| इन्हें अलग नहीं किया जा सकता| यह स्वयं में होने वाले अविभाज्य क्रियाएँ है - जैसे आप से कोई भी क्रिया को अलग किया नहीं जा सकता: जैसे विचार को अलग कर दिया, या इच्छा को अलग कर निकाल दिया, और उसके बाद आप सोच ही नहीं पाएं, इच्छा ही खत्म हो जाये, ऐसा होता नहीं है.

****

ऐसे "समझ" के लिए **<u>अध्ययन</u>** की आवश्यकता है|

<u>इस लेख में पृष्ठ 153-161 में "मार्गदर्शन -करना क्या है?' -लिखा हुआ को पढ़ें एवं "परिशिष्ट (Appendix)" में "अध्ययन प्रक्रिया" -सम्बन्धी सूचना (पृष्ठ 165) पढ़ें |</u>

<u>शिविर में 'भास' होता हैं| 'आभास' भी हो सकता हैं| साक्षात्कार-बोध-अनुभव के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता हैं, जिसके लिए अध्ययन बिंदु परिचय शिविर तथा मध्यस्थ दर्शन वांग्मय का विधिवत अध्ययन अनिवार्य है | अध्ययन शिविर में मध्यस्थ दर्शन के १२ पुस्तकों का नियमित अभ्यास-अध्ययन होता हैं|</u>

****

<u>घर में पढ़ने के लिए नोट:</u>

#१) अनुभव, बोध के पश्च्यात चिंतन में प्रयोजन स्पष्ट होता है। अब इच्छा (चित्रण) - चिंतन से प्राप्त निश्चित प्रयोजन के लिए होता है। अतः अब चित्रण(इच्छा) को चिंतन का आधार मिल गया/जो पहले नही था – हमारे इच्छाओं में निश्चितता आ जाती है, यह अब स्वयं के अधिकार पर तय किया हुआ रहता है| ऐसे निश्चित चित्रण(इच्छा) के लिए तुलन पूर्वक विश्लेषण, और ऐसे विश्लेषण के लिए मन में आस्वादन पूर्वक चयन होता है| सारे क्रियाओं में सामरस्यता, संगीतमयता हो जाती है: हमारे सारे जिज्ञासा तृप्त, लक्ष्य निश्चित एवं हमारा आचरण निश्चित होता है | यही निरंतर सुख है|

#२) तुलन की दृष्टियाँ:

- प्रिय = ५ इन्द्रिय सापेक्ष
- हित = शरीर स्वास्थ्य, पोषण सापेक्ष
- लाभ = वस्तु/सेवा सापेक्ष - श्रम से अधिक वस्तु पाना; अथवा कम देकर ज्यादा लेना
- न्याय = मानव संबंध, व्यवहार सापेक्ष - मानवीयता, समबन्धों में पूरकता
- धर्म = "समाधान" सापेक्ष = क्यों, कैसे का उत्तर = "व्यवस्था" (मानव जात में, चारों अवस्थाओं में) | * यहाँ "धर्म" से तात्पर्य "मानव धर्म" हैं |
- सत्य = अस्तित्व सापेक्ष =किसी चीज का 'होना', वस्तु, अविनाशियता

6) जोड़ें: शोध विधि में - भास, आभास, साक्षात्कार, बोध, अनुभव;
<u>अनुमान-सहमति=B2 और समझ-जानना = B1</u>

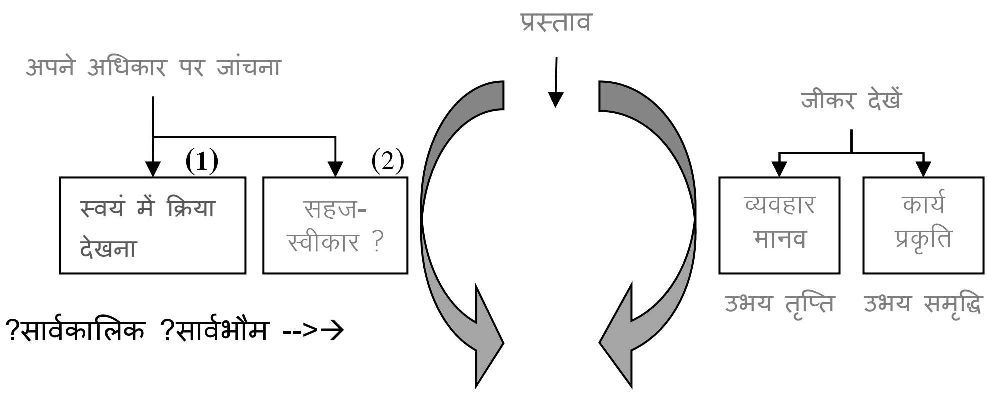

अनुमान, सहमति – **भास** – **आभास** — **A**

समझ, जानना – **साक्षात्कार** – बोध – अनुभव — **B**

- *अतः जो सार्वभौम है वह सही है, वही मेरे लिए सहज है, स्वीकार्य है।* ***अन्यथा वह मात्र मान्यता है।***

जोड़ें: *पहले दिन बनाये चार्ट में 'समझ' जोड़ें:*

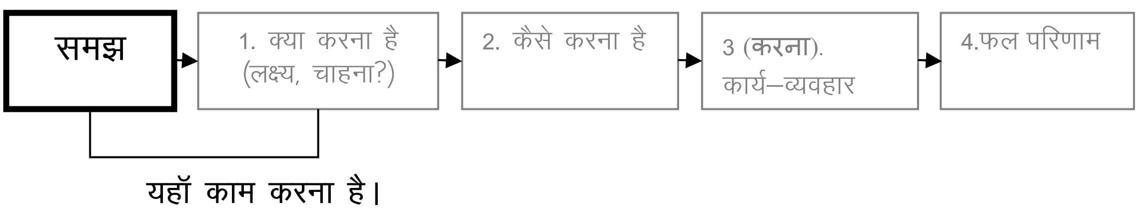

(7)जोड़ें: chart2: <u>जीवन(स्वयं) - शरीर कार्यक्रम</u> में 5th और 6th बिंदु:

जीवन(स्वयं)	शरीर
1. मै हूँ	1. मेरा शरीर है
2. मै जीना चाहता हूँ	2.शरीर का साधन की तरह प्रयोग करता हूँ।
3. मै सुखपूर्वक जीना चाहता हूँ	3. शरीर के पोषण, संरक्षण सदुपयोग के लिए सुविधा आवश्यक है।
4. व्यवस्था **को** 4 स्तर पर समझना, व्यवस्था में जीना ही मेरा कार्यक्रम है।	4. सुविधा का उत्पादन, संरक्षण, सदुपयोग मेरे कार्यक्रम का <u>एक भाग</u> है।
5. मैं दृष्टा, कर्ता, भोक्ता हूँ	**5. शरीर साधन है**
6. चैतन्य ("जीवन")	**6. जड़**

** अत: मानव को केवल जीने से तृप्ति नहीं है| वह सुख पूर्वक जीना चाहता है| इसके लिए समझ की आवश्यकता है|

जीवन(स्वयं) में जीने की आशा है, इसीलिए नाम **'जीवन'** दिया|

**** जोड़ें:** जीवन(स्वयं) की दस क्रियाओं के ऊपर **'जीवन'** लिख दें | अत: मानव चैतन्य (जीवन) एवं जद (शरीर) के संयुक्त रूप में हैं|

***

*<u>नोट:</u> जीवन क्रियाँए, साक्षात्कार, बोध, अनुभव **एवं** समझने की प्रक्रिया **पर** विषुद्ध जानकारी के लिए मध्यस्थ दर्षन **वांड़मय** देखे। **विशेष रूप में 'संवाद' नामक पुस्तक पढ़ें|***

***यहाँ दी** हुई सूचना प्रारंभिक षिविर हेतु है।*

***

स्वयं(मैं) - **जीवन** मे व्यवस्था

सारांश (आवश्य बताना है)

- मानव जीवन(स्वयं) अथवा जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में है|
- जीवन(स्वयं) में दस क्रियाएँ है, जिनमे से आज की स्थिति में केवल ४.५ क्रियाएँ व्यक्त है| इसी को 'कल्पनाशीलता' कहते है |
- जीवन(स्वयं) चैतन्य इकाई है, इसे **'जीवन'** नाम दिया |
- **'४.५ क्रियाओं' में जीते हुए समस्या:**
    1. मान्यतावश जीना
    2. सुख की निरंतरता नहीं है
    3. अंतर्विरोध-दोहरा व्यक्तित्व
    4. सच्चाई (सत्य) के कुछ ही आयाम समझ में आते है
- **उपाय:**
    1. पहला कदम:
        i. स्वयं के प्रति सजग होना - अपने इच्छा-विचार-आशा के प्रति
        ii. उनका मूल्यांकन:
            - कार्यक्रम का: अपने अधिकार पर तय है, या मान्यतावश?
            - दुसरे के बारे सोच: सहज-स्वीकार है?
        iii. होना क्या चाहिए? इसमें शोध:
            - कार्यक्रम: क्यों जी रहा हूँ?
            - दुसरे के बारे सोच: पूरकता सहज स्वीकार है?
    2. दूसरा कदम:
        - **समझ** की आवश्यकता: साक्षात्कार-बोध-अनुभव की आवश्यकता:
        - जीवन, मानव संबंध, प्रकृति संबंध, सह-अस्तित्व को समझना. इस के लिए - **अध्ययन** करना: *इस लेख को 'करना क्या है': शिविर समापन के पश्च्यात देखें* (पृ 161)

1) व्यक्ति में व्यवस्था

- 1.3) शरीर के साथ व्यवस्था प्रारंभ

१) व्यक्ति में व्यवस्था-(1.3) शरीर के साथ व्यवस्था

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

स्वास्थ्य:

- जीवन(स्वयं) में संयम होने से शरीर में स्वास्थ्य होता है|
- संयम की परिभाषा | शरीर अपने मैं एक व्यवस्था| उसके होने, रहने के लिए हम कुछ नहीं कर रहे है| केवल उसे पहचानकर निर्वाह करना है
- स्वास्थ्य = संयम+आहार+विहार+प्राणायाम/आसन या श्रम और औषधि

समृद्धि:

1. परिभाषा: आहार, वस्त्र, घर, साधन की आवश्यकता सीमित है| आज भी आवश्यकता से अधिक है |
    - समृद्धि = दुसरे का पोषण, दरिद्रता = दुसरे का शोषण
2. प्रकृति में पहले से पर्याप्त है, उदाहरण
3. सुविधा से अधिक से अधिक शरीर का स्वास्थ्य, गति प्रदान करना होता है
    - भय-असुरक्षा, सुविधा मात्र से जाता नहीं: चोर का उदाहरण | भय स्वयं में है, इसीलिए स्वयं पर काम करना है
4. समस्या: स्वयं को शरीर मान लेना | स्वयं की निरंतर सुख की आवश्यकता को शरीर से पूरा करने का प्रयास, जो होता नहीं |
5. उपाय: समझ के लिए प्रयास, संबंध समझने, स्वीकारने का प्रयास.
6. शोषण, भ्रष्टाचार - युद्ध का चक्र
7. जोड़ें: सुविधा के आधार पर जीना = जीव चेतना| समझ, संबंध, सुविधा के साथ जीना = मानव चेतना = table
8. **अभ्यास:** सुविधा की आवश्यकता: शरीर स्वस्थ, स्वयं का सार्थक कार्यक्रम, या

    मान्यतावश?

1b) शरीर के साथ व्यवस्था

मानव	=	**जीवन(स्वयं)**	**+** **<====>**	शरीर
		जीवन	सूचना	

- केवल सूचना का आदान–प्रदान है। भौतिक **रासायनिक** वस्तुओं का नहीं।
  उदाः जब रसगुल्ला खाते है तो आपको क्या मिलता है?
- (चार्ट 1 को फिर **दोहराया**)

मानव	–	जीवन(स्वयं)	शरीर
		↓	↓
		चैतन्य	जड़
		↓	↓
		संयंम	स्वास्थ्य

Q अगर शरीर 'मै'/जीवन का साधन है तो शरीर की देखभाल कौन करेगा?

संयंम – स्वयं(मै) में शरीर के पोषण संरक्षण सदुपयोग की जिम्मेदारी स्वीकारने का भाव
↓ आहार ↓ घर/कपड़ा ↓ साधन

- **संयम में दो भाग है:**

पहचानना	**बनाये रखना**
(भोजन, पानी...)	**(शरीर में स्वास्थ्य को बनाए रखना)**

- **शरीर अपने आप में एक व्यवस्था है।**
  - Q पाचन के लिए आप क्या करते है ? आप खाना खाते और पचता नही ंतो आप क्या कर लेते ?
  - Q खून दौड़ने के लिए आप क्या करते है ? खून नहीं दौड़ता तो आप क्या कर लेते ?
  - Q निष्कासन के लिए आप क्या करते है ?

- शरीर की आवष्यकताओं को पहचानना है और निर्वाह करना है।
  - *आज के दिन हम शरीर से इंद्रिय सुख की निरंतरता पाने का प्रयास करते है, तो बीमार पड़ते है*
  - *गाय, कुत्ता, बिल्ली को स्वस्थ रहने के लिए कुछ विषेष करना नहीं पड़ता और आदमी लाखो अस्पताल बनाए बैठा है।*

स्वास्थ्य – अंग प्रत्यंगो की व्यवस्था बने रहना।
- शरीर (मै) जीवन के अनुसार कार्य कर रहा है।

स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी

1. *संयम*
2. *आहार विहार*
   - पारंपरिक खाना
   - शरीर के आवष्यकता अनुसार (क्या पचता है / नही पचता है।)
   - निष्कासन ठीक रहे।
   - ऋतु के अनुसार भोजन (खटाई, रोटी, चावल कहॉ और कब खाना)
3. *आसन, प्राणायाम*, व्यायाम, खेलना
4. ***औषधि*** – a). प्राणावस्था से b). रस रसायन से

समृद्धि

- जीवन में व्यवस्था और शरीर के साथ व्यवस्था को हम समझ लिए अब हम समृद्धि की बात कर सकते है।

1. समृद्धि की परिभाषा

पोषण	संरक्षण	सदुपयोग
↓	↓	↓
आहार	वस्त्र,घर	साधन गाड़ी
↓	↓	↓

सीमित सीमित सीमित -- *अत: आवश्यकताएं सीमित है*

> **समृद्धि:** परिवार की आवश्यकता से अधिक का उत्पादन/प्राप्ती के भाव.

Q

- a) आहार
  - भोजन कितना चाहिए?
  - **हम आज तक कितने दिन भूखे रहे है?**
  - **किसी भी समय, आपके घर में आवश्यकता से अधिक आहार के लिए** ***भौतिक वस्तु (सुविधा)*** **उपलब्ध है कि नहीं?**

Q

- b) वस्त्र
  - संरक्षण के लिए कितने कपड़े चाहिए ?
    - **१ ऋतु काल के लिए ३ जोड़ी: १ वर्ष में १२ जोड़ी**

Q

  - **और** सम्मान के लिए कितने चाहिए ?
    - व्यक्ति हमारी नहीं कपड़े की तारीफ कर रहें है।
    - उसे भी कुछ **क्षणों** में भूल जाता है।

Q

  - **आपके पास कितनी साडियां है? कितनी चप्पलें?**
  - **आज के दिन, कपड़ों को** संभालते संभालते दुखी होते है। चयन करते है दुखी होते है।

- c) घर
  - एक व्यक्ति को कितना स्क्वायर **फीट** की आवष्यकता है? - **१० x १० = १०० स्क्वायर फीट**
  - **७ लोगों के परिवार के लिए = ७०० स्क्वायर फीट**

- d) साधन
  - मोबाइल कितना समय इस्तेमाल करते है? कितने समय **तक** उपलब्ध रहता है?
  - गाड़ी कितने समय तक इस्तेमाल करते है? कितने समय **तक** उपलब्ध रहती है?
  - **आवश्यकता से अधिक गाडियॉं उपलब्ध है की नहीं?**

Q
- आपके पास आवष्यकता से अधिक कपड़ा, भोजन, सामान, है- क्या **इसमें** समृद्धि का भाव है?

<u>समृद्धि</u> = आवष्यकताएं निष्चित। → दूसरे का पोषण → सदुपयोग

= अभाव का अभाव

<u>दरिद्रता</u> = अनिष्चित आवष्यकताएं → दूसरे का शोषण → संग्रह →

= अभाव ही अभाव = **बिन पेंदी का गिलास !!**

उदाहरण

कंपनी मालिक	500 करोड़
कंपनी मालिक	30,000 करोड़

<u>2) प्रकृति में पर्याप्त है।</u>

उदाहरण–

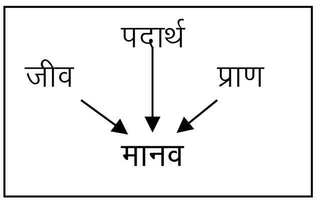

- *अपने देष में दो लाख "साधू" **रोज खाते है***
- *1 करोड़ कुत्ते **खाते है***
- ***चींटी भी, हाथी** भी अपना पेट भरता है।*
- *शेष तीनो अवस्था मानव की आवश्यकता से कई गुना अधिक है।*
  - *किसी भी अवस्था के प्रकट होने से पहले उसकी आवष्यकताएं पूरी होती है।*
  - *मानव शरीर की आवष्यकता पहले से अस्तित्व में पूरी हो चुकी है।*
- *गॉव कानपुर 200 परिवार, 15 टेक्टर 50मोटर सायकल 10 लाख गुटका 7 लाख लीगल फीस*

3. सुविधा से अधिक से अधिक क्या मिल सकता है?

शरीर के लिए

स्वास्थ्य ← → गति प्रदान करना

- इससे अधिक कुछ मिलता नहीं |

- **गलत मान्यताएं:** हम मान लेते है कि
  - सम्मान मिलेगा → जलन पैदा करता है
  - सुख मिलेगा → क्षणिक होता है।
  - सुरक्षा मिलेगी → संग्रह होता है।

भय और सुरक्षा:

1. – सुरक्षा का मतलब हम आष्वस्त है।
2. *'कल क्या होगा' का डर बना रहता है। (हम सोचते है– "कुछ भी हो सकता **है**" !! ?)*
3. ***उदाहरण:***

   जैसे घर में चोर घुस जाता है और कुछ भी किये बिना चले जाता है हम डर जाते है, मरके जिन्दा होते है, जबकि शरीर सुरक्षित है।
4. *अगर हम भयभीत है तो अपने पर काम करना होगा हम अपने बारे में कुछ न करें, केवल अपने आस पास वस्तु इकट्ठा कर लें- इससे ज्यादा कुछ होता नहीं- केवल संग्रह !!*

- आज जीने के लिए सुविधा बढती जा रही है, जीने की इच्छा कम हो रही है।

4. समस्या क्या है?

- स्वयं **को** शरीर मान लिया
- **जीवन(स्वयं) में** अपने निरंतर सुख, सम्मान, आष्वस्ति, अभयता की जरूरत को सुविधा से पूरा करने का प्रयास, जो कि सीमित है।
- **अर्थशास्त्र:**
  - क्या शरीर की कोई ऐसी आवष्यकता है, जो असीम है? आधुनिक अर्थषास्त्र यहीं फंसा है।
  - **आवश्यकताएं अनंत, साधन सीमित: सभी दरिद्र रहने के लिए बाध्य है!**

- आज हमारी सुविधा की आवष्यकता मान्यतावष तय होती है।

5) क्या करें?

- स्वयं('मै)' **या** '**जीवन**' और शरीर की आवष्यकताओ को समझा जाए, **उन्हें** पूरा किया जाए

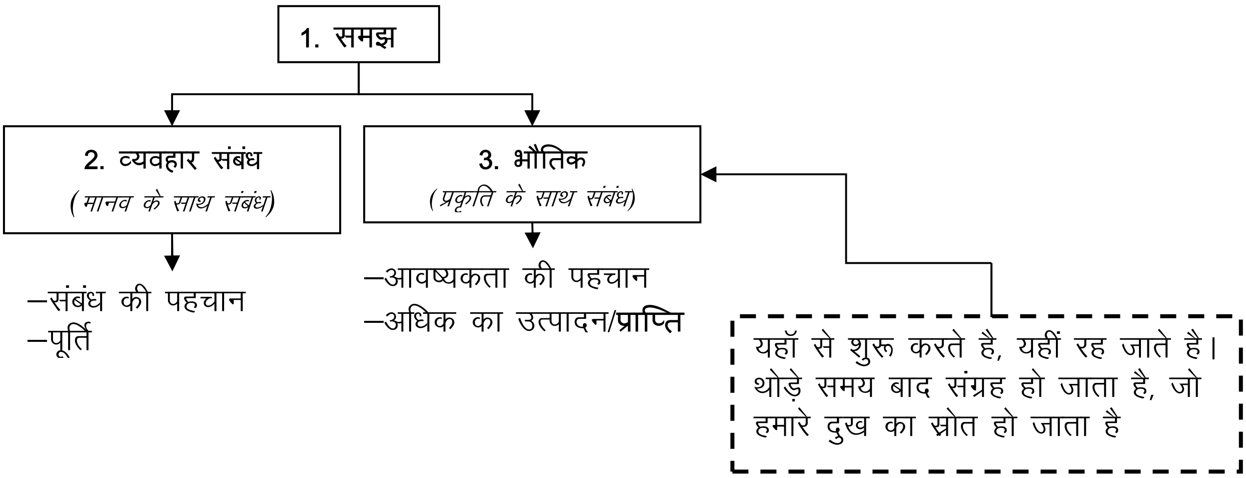

अकेले नाम की चीज अस्तित्व में नहीं है। परिवार में ही आवष्यकताएं तय, निष्चित हो पाती है। हम संबंधों में जीकर ही आश्वस्त हो पाते है |

- आज भी हम अकेले में कुछ नहीं बना रहें है। इसमें हजारों लोगों का हाथ है। बटन से लेकर अनाज, गाड़ी, घर....

6) पैसा और भौतिक वस्तु (सुविधा): कहॉं से सोचना शुरू करते है?

- हम कहॉ से सोचना शुरू करते हैं ?

1. **पहले** सुविधा क्यों चाहिए, **इसपर स्पष्ट होना**
2. **पश्च्यात** आवष्यकता तय होना
3. **पश्च्यात**, सुविधा **का चयन करना**
4. पैसे/धन की आवष्यकता **निर्धारित होना**

- हम '4.पैसे' से '1.क्यों चाहिए' में जाते है या '1.' से '4.' में जाते है ?
- **हम** सुविधा या वस्तु से तृप्त **होते है**, या पैसे से? पैसे से सोचना अनिष्चित है।
- **उदाहरण:**
  - **जैसे हमारे पास बैंक में ४०,००० रूपए है, कैसे लगता है? इसकी तुलना में, ४०,००० रूपए के अनाज, फल, सब्जी, कपडे, उपलब्ध हो, तो कैसे लगेगा?**

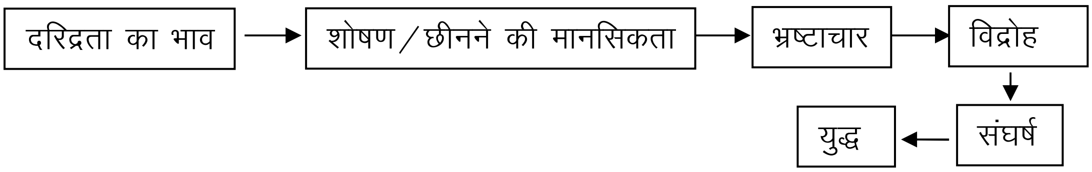

<u>उदाहरण</u>: एक अधिकारी की खर्च : 25% कपडे, २५% इलेक्ट्रोनिक उपकरण, २५% शिक्षा, २५% घूमने में....खायेंगे क्या?..इसके लिए भ्रष्टाचार |

<u>नोट: यदि त्याग/भोग पर प्रश्न हो:</u>

<u>भोग</u>	**<u>सदउपयोग</u>**	**<u>त्याग</u>**
उत्पादन नहीं करेंगे, लेकिन उपभोग करेंगे	उत्पादन भी_करेंगे, उपभोग भी करेंगे (निश्चित)	उत्पादन भी नहीं करेंगे, उपभोग भी नहीं करेंगे

Q आपको क्या स्वीकार होता है?

(7)चित्र को दोहराया: जीव चेतना और मानव चेतना

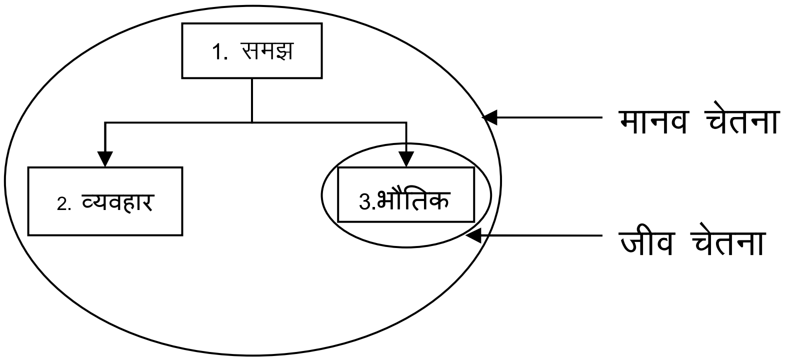

***** केवल** भौतिक वस्तु (सुविधा) **के लिए जीना = जीव चेतना में जीना (इतना तो जीव भी कर ही रहे है)***

***** समझ, व्यवहार (संबंध),** भौतिक वस्तु (सुविधा) **के साथ जीना = मानव चेतना में जीना***

जीव चेतना	मानव चेतना
सुविधा संग्रह	समृद्धि
शोषण	पोषण

Q **आप किस में जी रहे है? जीव चेतना में, या मानव चेतना में?**

(8)घर में करने के लिए अभ्यास –

अपने लिए सुविधा की आवष्यकता की सूचि बनाए और देखे कहॉ आता है:|पश्च्यात आपके पास जितनी सुविधाएं है, इनका आंकलन करें, की यह कहॉं आतें है:

सुविधा की आवश्यकता

पोषण, संरक्षण (शरीर स्वास्थ्य)

जीवन(स्वयं) का सार्थक कार्यक्रम
- समझने-समझाने
- सीखने-सिखाने
- संबंध निर्वाह

- दूर्गमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन

मान्यतावश
- इन्द्रिय सुख/मनोरंजन
- सम्मान के लिए
- असुरक्षावश संग्रह

व्यक्ति में व्यवस्था: शरीर के साथ: सारांश (अवश्य बताना है)

स्वास्थ्य:

- शरीर अपने में एक अद्भुत व्यवस्था है |
- यह प्राकृतिक विधि से उपलब्ध है|
- स्वयं में समझ होने से शरीर में स्वास्थ्य अपने आप होता है | इसे सरल विधि से सुनिश्चित किया जा सकता है |

समृद्धी:

- स्वयं को शरीर मानने से सुविधा की आवश्यकता असीम लगती है|
- स्वयं की तृप्ति के लिए अलग कार्यक्रम है, शरीर के लिए अलग|
- सुविधा की आवश्यकता निश्चित होने से समृद्धि की सम्भावना बनती है |
- प्रकृति में पहले से अधिक उपलब्ध है ही | हाथी भी जीता है, चींटी भी जीती है
- परिवार के आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने से यह संभव है |
- सुविधा से अधिक, हम संबंधों में जीकर ही आश्वस्त, तृप्त होते है

2) मानव-मानव सम्बन्ध समझना:

मानव-मानव सम्बन्ध समझने, मानव क्यों है, कैसे है, पहले इसे समझना होगा | तभी "मानव सम्बन्ध" को समझ पायेंगे |

2. मानव-मानव संबंध

रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

संबंध:

- मानव संबंध है | इसे बनाना नहीं है | हर मानव के साथ है | इनमे अपेक्षाओं को पहचानकर पूरा किया जा सकता है | मानव-मानव संबंध में ९ स्थापित मूल्य है:

विश्वास:

- परिभाषा, अभ्यास: #6 चाहना, योग्यता | चाहने पर शंका करने से हम घायल होते है
- अस्तित्व में दोनों कि पूर्ति का प्रावधान है |
- हम व्यवहार से नहीं, उसे संभाल नहीं पाते है, तो पीड़ित होते है |
- (चेतना के तालिका में जोड़ना): चाहने पर शंका = प्रतिक्रिया: में जीना = जीव चेतना | जिम्मेदारी के साथ जीना = मानव चेतना
- विश्वास को बाहर, दुसरे से पाना नहीं है, स्वयं में होता है, तो व्यक्त करते है |

सम्मान

- अभ्यास: #7 कार्यक्रम, लक्ष्य, क्षमता एक : आज सम्मान का आधार: शरीर
- अधिमूल्यन, अवमूल्यन, अमूल्यन
- भेद: शरीर सापेक्ष, सुविधा सापेक्ष, मान्यता सापेक्ष - हर भेद एक सामाजिक आंदोलन
- आज सम्मान पाने के लिए: कपडे, साधन, इत्यादि | इनका परिणाम: सम्मान पाने के तरीके से दूसरा दूर हो जाता है |
- उदाहरण: घर के बाहर पहचान की आवश्यकता नहीं| जहाँ संबंध है, वहाँ हम आराम में होते है|
- दो व्यक्ति में: भिन्नता: समझ के स्तर पर श्रेष्ठता हो सकती है |

स्नेह:

- सम्बन्धी को स्वीकारना: "संबंध", खून का रिश्ता नहीं है|
- आज: विश्वास, सम्मान की गहरी समस्या है | विश्वास, सम्मान के बिना स्नेह संभव नहीं है
- **अभ्यास #8**: मैं और दूसरा:
- प्रतिस्पर्धा: की training: दूसरा दूर जाता है| हम में विरोध का भाव होता है| तनाव में होते है| प्रतिस्पर्धा का आधार: भय और प्रलोभन - किसी को स्वीकार नहीं है|
- अस्तित्व में संघर्ष नहीं है, विरोध नहीं है |
- आप एक के साथ, अनेक के साथ या हर एक के साथ संबंध में जीना चाहते है? - जहाँ हम संबंध पहचानेंगे, वहाँ शोषण नहीं करेंगे |
- विश्वास, सम्मान, स्नेह कोई काल्पनिक चीज नहीं है| यह भौतिक वस्तु से ज्यादा ठोस है| आप जो चाहते है: विश्वास, सम्मान, स्नेह यदि हमारे पास है, तो झगडा नहीं करेंगे
- जोड़ना: जीव चेतना में प्रतिस्पर्धा, मानव चेतना में पूरकता, संबंध है |

ममता:

- समझ के साथ ममता है| स्वयं में स्वीकृति के आधार पर संबंध है, केवल बोलने से नहीं

वात्सल्य:

- समझाने योग्य वस्तु को समझाना|

गौरव:

- श्रेष्ठ व्यक्तियों के प्रति

श्रद्धा:

- श्रेष्ठ के अनुरूप होने में स्वयं का प्रयास: पूजा

कृतज्ञता:

- स्वयं के समझ के लिए जिन्होंने सहायता किया

प्रेम:

- हर इकाई के साथ संबंध: अनन्यता |

९ 'शिष्ट मूल्य'

- स्थापित मूल्य होने से शिष्ट मूल्य अपने आप बहते है| स्वयं में भाव होने से| अन्यथा दिखावा - शिष्टता है | संबंध - सारांश

परिवार का स्वरुप:

- परिवार क्यों = चर्चा | क्या = मानव लक्ष्य | कैसे =समबन्धों में 'न्याय' |
- ७ मानव संबंध: ३ परिवार में, उनका प्रयोजन | संबंध एक क्रिया |
- **न्याय की परिभाषा**
- हर मानव के साथ संबंध है, परिवार में जीने से न्याय प्रमाणित होता है|
- **परिवार केवल शरीर संबंध - अथवा वंश तक सीमित नहीं है**

2) मानव-मानव संबंध

मानव-मानव सम्बन्ध समझने, पहले मानव क्यों है, कैसे है, इसे समझना होगा | तभी "सम्बन्ध" को समझ पायेंगे |

चर्चा:

- **पानी को पहचाने हैं, उसके निश्चित नियम को| तभी उसके साथ जी पाते हैं|**
- **मानव को पहचानते हैं, जानते हैं, तो उसके साथ जीने के निश्चित नियाम समझ में आते हैं| मानव में मानने के अनुसार 'संबंध' बदलते हैं| जानने के साथ ही मानना निश्चित होता हैं, तभी पहचानना - निर्वाह भी निश्चित हो पाता हैं |**
- **अत: मानव के साथ 'व्यवहार के नियम', 'न्याय' को समझना आवश्यक हैं**

मानव संबंध - एक वास्तविकता

1. **मानव** संबंध है।
   - *इसे बनाने की आवष्यकता नहीं है।*
   - *केवल परिवार में नहीं है, हर **मानव** के साथ है।*
   - *जैसे ट्रेन में एक आदमी बगल में बैठ गया। तो हम उसके बारे में जानने को उत्सुक हो जाते है।*

   उदाहरण: पेड़ के नीचे आप बैठे है घड़ी पहने है। कोई व्यक्ति यादि आपसे समय पूछता है। आपके पास कितने उपाय है? इनमें से कौनसा उपाय आपको सहज-स्वीकार होता है? इसमें, मजे की बात यह है कि 'समय बताना है, या नहीं बताना है,' - इस निर्णय बिंदु से बच नहीं सकते - <u>उसके साथ संबंध में आप अनुबंधित है</u>

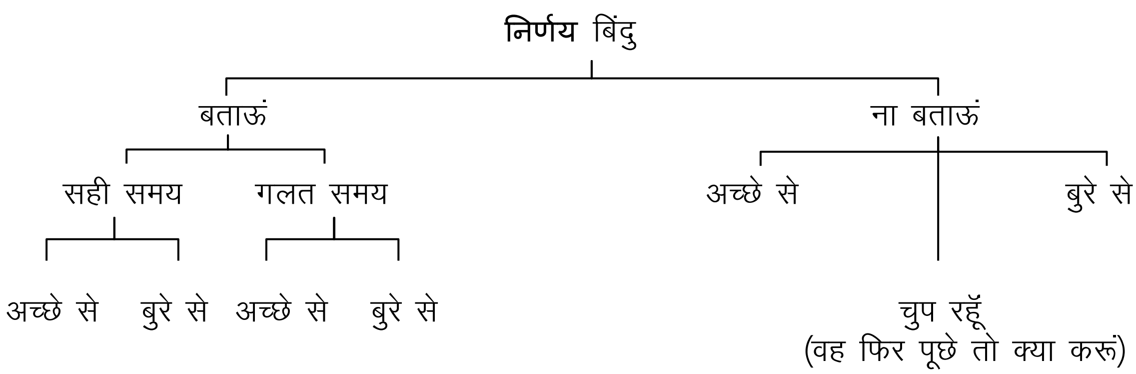

*अतः अस्तित्व में संबंध है। शास्वत है, **इसे बनाना नहीं है**, इससे हम भाग नहीं सकते। हम इसमें प्रतिबद्ध है।*

Q
- **मानव-मानव में** संबंध **का आधार स्वयं (जीवन) है, या शरीर?**
  चेहरा जल जाने पर क्या हम बेटे को नकार देते है ?

2. संबंध **में अपेक्षाएं है:** – स्वयं (जीवन) का स्वयं (जीवन) से

Q
- किसको अपेक्षा है ?
- किससे अपेक्षा है ?

3. अपेक्षाओ को पहचाना जा सकता है।

Q
- **यह अपेक्षाएं** असीमित नहीं है !
- **यह अपेक्षाएं** निष्चित है

4. अपेक्षाओं का निर्वाह किया जा सकता है।

- मेरे में भाव है तो व्यक्त कर सकता हूँ।
- निर्वाह करने से उभय सुख होता है।
- **आज कि स्थिति: शरीर ही संबंध का आधार, सुविधा पर ध्यान**

Q
  - आज हमारे संबंधो में **स्वयं (जीवन)** आधार है या शरीर ?

    10 बार बोलना पड़ता है '**मैं**' तुम्हारा **पिता** हूँ

- संबंधो मे/के लिए बहुत कम भौतिक–रासायनिक वस्तुओं की आवष्यकता पड़ती है।
- आज हम यह मानते है, हमसे कहा जाता है कि पैसा **मात्र** हो जाए बाकी सब ठीक हो जाएगा
- जबकि वास्तव में समझ, संबंध में भाव के लिए कोई भौतिक वस्तु की जरूरत नहीं है। इस षिविर में हमारे आपके बीच क्या **कोई** भौतिक वस्तु लग रही है?
- समझ है तो विष्वास, सम्मान के लिए कोई शर्त नहीं है। आप मानव है यह पर्याप्त है। यह विष्वास, सम्मान कोई खरीदी वस्तु नहीं है, कोई मानी हुई वस्तु नहीं हैं। समझ से है।
- जहॉ संबंध पहचानते है। हम आराम में होते है।
  घर में पहचान के लिए अच्छे कपड़े नहीं लगते– अपनो के साथ दिखावा नहीं होता।
  मित्र के साथ रहना और उसके साथ मार्केटिंग करना। कौन सा अधिक आरामदायक है?

- घर में अभ्यास

आपके घर में समस्याओं की सूची बनाइए
- जो सुविधा के अभाव के कारण है।
- **जो** संबंध के अभाव के कारण है।
- **कौनसा ज्यादा है?**

आज हम इतना करते है फिर भी **दूसरा** षिकायत **करता** है कि **वह** तृप्त नहीं है। वह इसलिए तृप्त नहीं है क्योंकि 'मैं' के स्तर पर अतृप्ति बनी रहती है। हम मैं के लिए कुछ करते नहीं

संबंधो में अपेक्षाएं 9 स्थापित "मूल्यो" के रूप में पहचानी गयीं हैं।

1. विष्वास -- *आधार मूल्य, संबंध का पहचान ---*
2. सम्मान – *संबंधों में कैसे व्यक्त हो, निर्वाह ---*
3. स्नेह – *संबंधों में कैसे व्यक्त हो, निर्वाह ---*
4. ममता -- *पूरकता ----*
5. वात्सल्य -- *पूरकता ----*
6. गौरव -- *अपने से श्रेष्ठ के प्रति --*
7. श्रद्धा -- *अपने से श्रेष्ठ के प्रति --*
8. कृतज्ञता -- *अपने से श्रेष्ठ के प्रति --*
9. प्रेम -- *पूर्ण मूल्य ---*

1. विष्वास :– आष्वस्त होना–दूसरा मेरे सुख के अर्थ में है। ऐसा स्पष्ट होना, समझ में आना

1.1) परिचय

चर्चा:

- कब आश्वस्त होते हैं?
- भौतिक चीजों पर आश्वस्ति| जैसे, घर के निश्चित आचरण पर विश्वास, तभी उसमे रह पाते हैं| छत के प्रति विश्वास|
- आज हम मानव पर विश्वास करते हैं या नहीं? विश्वास का आधार क्या हो? - रूप-गुण-स्वभाव-धर्म (आवश्यकता अनुसार इसपर चर्चा)
- विश्वास में, "मानव कैसे है?" - यह तय करते हैं|

- **हम विश्वास पूर्वक जीना चाहते हैं, अस्तित्व में इसका प्राविधान हैं| हमारी स्वीकृति एवं अस्तित्व का डिजाईन एक ही हैं|**

- मै जब आष्वस्त होता हूँ तब आराम में होता हूँ। नही तो भयभीत रहता हूँ

Q

- हम कब आष्वस्त होते है? जैसे ट्रेन में, बस में ? जब दूसरे पर शंका न हो।
- उदाहरण: अलग दिखने वाला व्यक्ति मेरे साथ बैठे तो।
- दूसरे देष का, रंग का दूसरा मेरे जैसा है यह दिखने से मै आष्वस्त होता हूँ।
- आपस में समानता क्या है यही ढूँढते रहते है। किसी से मिले तो यही प्रयास रहता है।
- **आज के दिन**, हमारी आष्वस्ति बढ़ जाती है जब हमें पता चलता है कि सामने वाला व्यक्ति
  1. अपने देष का है |
  2. अपने माने हुए धर्म का **है** |
  3. अपनी भाषा बोलने वाला है |
  4. अपनी जात का है |
  5. अपने गॉव का है |
  6. अपनी जान पहचान का **है** |
  7. अपने घर का है |

(1.2) अभ्यास #6: एक एक प्रष्न पर चिन्ह लगाइए

	चाहना / (Intention)	**योग्यता / (Competence)**
1a	मै स्वयं को सुखी करना चाहता हूँ ?	1b -- हमेंशा कर पाता हूँ ?
2a	मै दूसरे को सुखी करना चाहता हूँ ?	2b -- हमेंशा कर पाता हूँ ?
3a	दूसरा स्वयं को सुखी करना चाहता है ?	3b -- हमेंशा कर पाता है ?
4a	दूसरा मुझे सुखी करना चाहता है ?	4b -- हमेंशा कर पाता है ?

- यदि हम (1a) और (2a) **के प्रति** आष्वस्त है तो (3a) और (4a) के बारे भी हो सकते है।
- क्योंकि इस षिविर में आप 'मै' है और कोई और "दूसरा" है।
- उस कोई और के लिए वह "मैं" है और आप "दूसरे" है।
- अत:
  - **<u>इसी शिविर</u> में बैठे लोग स्वयं के चाहने के प्रति तो शंका नहीं करते है, परन्तु यहीं बैठे दुसरे पर: उनके <u>योग्यता</u> अनुसार उनके <u>चाहने</u> पर प्रश्न लगाये है, शंका कर रहे है - स्वयं की योग्यता भले ही कैसी भी हो! यहाँ बैठे पति पत्नी भी यही कर रहे है !**

चाहना / (Intention)	**योग्यता / (Competence)**
यह <u>मूल चाहना</u> है।	यह <u>करना है। योग्यता</u> है।

- योग्यता / कार्य–व्यवहार को देखकर हम मूल चाहत पर शंका करते है।
- अस्तित्व में संबंध में दोनो पक्षों की पूर्ति का प्रावधान है क्या ?
  अगर नहीं है, तो कुछ कर नहीं सकते। अगर है तो उसे समझा जा सकता है, जिया जा सकता है।
- अस्तित्व में जो सही है, हम दोनो को सहज है, स्वीकार होता है। जो गलत है दोनो के लिए असहज है, स्वीकार नहीं होता।

- **हमको** दूसरे के बारे शंका मुक्त कैसे होना बनता है ?
  - 1, 2 के बारे में शंकामुक्त हो तो 3, 4 के बारे शंका मुक्त होना बनता है।
  - **जैसे** हम अपने लिए कुछ अच्छा / बुरा कर रहे है दूसरा भी ऐसा ही कर रहा है।
  - <u>चाहने</u> में दोनो एक समान है। <u>करना/योग्यता</u> में अंतर **के कारण** है।

- आज समस्या
  - अस्तित्व को समझे नहीं |
  - अपने आप को समझे नहीं
  - संबंध को समझे नहीं।
  - सुविधा में व्यस्त है। न सुखी होते है, न समृद्ध **होतें है**!

- जो सहज है वही शाष्वत है। यही स्वीकार्य है हमको भी दूसरे को भी।
- दूसरे को नकारते है, तो अपने आप को ही नकारते है।
- आज की सबसे गहरी समस्या है यहः बाप–बेटे में, पति–पत्नी में, नाना–नानी में।
- हमें आज चोट कब पहुँचती है
  चाहने पर या योग्यता पर शंका करने पर ?

(1.3) उदाहरण

- बुजुर्ग को हार्ट अटेक होता है। पूछने पर जवाब मिलता है, पत्नी के बोलने से हुआ है। आप कब घायल होते है? दूसरे के कहने पर या **सुननेके पश्च्यात यह** मानने पर कि दूसरा ऐसा चाहता है
- दोस्त कॉलेज के अंदर गाली दे और बाहर गाली दे अलग-अलग प्रकार से स्वीकारा जाता है।

  हमारे **मानने** के अनुसार हम दुखी घायल होते है। शरीर घायल नही होता 'मै' ही घायल होता **है**।

- कोई आदमी कुछ बुरा कहता है फिर हमें पता लगता है कि वह पागल है।
  हम सभी का इतना ही हाल है न चाहते हुए करते है। यही अस्वीकृति है, यही दुख है।
  इस अर्थ में हम पागल है। क्योकि हम हमारे न चाहते हुए कुछ कुछ करते है।
- रिक्षे वाले के साथ हम पैसे को लेकर झगड़ते है। सब्जी वाले के साथ भी

- **अभी, हम अपने में बंद है, संबंध को नकारे रहते है, इस भय से कि सामने वाला हमारा फायदा उठा लेगा| वो भी इसी भय से बंधा है| फिर शिकायत करते है कि दूसरा प्रतिसाद नहीं दे रहा है....संबंध को नकारते है, तो हम स्वयं ही भयभीत होते है..**

- अगर हम दूसरे के चाहने के प्रति निष्चित है तो उसका सहयोग करेंगे।

(1.4) तकरार: उदाहरण: आप 'A' है | आपने किसी दुसरे को, 'B' को, कुछ करने के लिए कहा

आप / A		दूसरा / B	
चाहना	योग्यता = शरीर द्वारा व्यक्त ⟶	⟵ शरीर द्वारा व्यक्त = योग्यता	चाहना
चाहना +योग्यता =होना ⟶		⟵ चाहना +योग्यता =होना	

- *B ने कहा "कर नही पाया"*
- *आपको लगता है: B ने किया नहीं*

आप / A		दूसरा / B	
चाहना	योग्यता=शरीर द्वारा व्यक्त ⟶	⟵ शरीर द्वारा व्यक्त=योग्यता	चाहना
यह तो करना नहीं चाहता है जानबूझ कर ऐसा कर रहा है यह सोचकर आपने कुछ कहा ⟶ आपने शब्द सुना और आप मान लेते है योग्यता– यह ऐसा ही सोचता है मेरे बारे में चाहना – ऐसा ही सोचना चाहता है।		⟵ बी सोचता है "यह तो समझता ही नहीं है मै पहले से परेशान हूँ" फिर B ने कुछ कहा...	

Q

- हम व्यवहार से पीड़ित होते है या व्यवहार को संभाल नहीं पा रहे है इससे पीड़ित होते है? जैसे बच्चे के साथ ?
- मेरी अक्षमता ही मेरी पीड़ा है।
- *अत: बारंबार हम दूसरे की योग्यता अनुसार उसके मूल चाहत पर शंका करते है। दुखी होते है। परंतु हम अपने चाहने के प्रति आष्वस्त है। भले ही हमारी योग्यता कैसी भी हो।*
- *सामने वाले के साथ भी ऐसा **है***

आप / A		दूसरा / B	
चाहना	योग्यता=शरीर द्वारा व्यक्त ⟶	⟵ शरीर द्वारा व्यक्त=योग्यता	चाहना
इसे हम देख नहीं पाते है। हम परेशान होते है सोचते है "ऐसा कैसे कह दिया।" ⟶ हम वाइब्रेट होते है, रिटर्न गिफ्ट देते है		⟵ दूसरा तो अपनी स्थिति को व्यक्त कर रहा है कह रहा है "मै इस समय ऐसा हूँ" उसका वाइब्रेषन शरीर द्वारा व्यक्त होता है उसकी परेषानी और बढ़ जाती है।	

- जबकि **मेरे में** और **दुसरे** - दोनो मे ही वाइब्रेषन/आवेष **असहज है,** अस्वीकार्य है।

आप / A		दूसरा / B	
चाहना	योग्यता=शरीर द्वारा व्यक्त →	← शरीर द्वारा व्यक्त=योग्यता	**चाहना**
आप चाहते अच्छा है → पर योग्यता अनुसार व्यक्त होते है		← दूसरा भी चाहता अच्छा है पर उस समय की योग्यता अनुसार व्यक्त होता है	

आज कुत्तो का भी यही हाल है। दो कुत्ते या बिल्ली यू ही एक दूसरे को समझे बगैर झगड़ते रहते है !

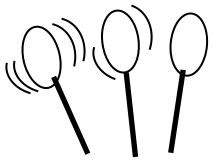

- एक चम्मच दूसरे पर लगता है तो **दोनों में वाइब्रेशन शुरू हो गया |**
- यह मेरे लिए समस्या हुआ या अवसर ? हर संबंध समझने समझाने के लिए अवसर है।
- **विश्वास = जानबूझकर कोई गलती करता नहीं | जानबूझकर / अनजाने में गलती करता है | सहीं मानकर ही गलती करता है | "मानबूझकर" गलती करते है |**

उदाहरण:–

- *एक बच्चे को हम पूरे समय विपरीत प्रशिक्षण देते है। – "किसी पर भरोसा मत करो। "*
- *जैसे **हमने सुना हैं,** हिटलर और उसका खाना। अपने ही भोजन पर वह विष्वास नहीं करता था – **पहले बिल्ली को खिलाया, १५ मिनट बाद यदि बिल्ली जिन्दा रही, स्वयं खाया!***

(1.5) जीव चेतना, मानव चेतना में भिन्नता:

1. घटना (जीव चेतना)	2. नियम (मानव चेतना)
संवेदना	**समझ** - (*किस नियम के **अंतर्गत** घटना घट रही है।*)
प्रतिक्रिया (reaction)	जिम्मेदारी (response)

चर्चा:

- बारिष हुई, तो गाय पेड़ के नीचे जाता है। आदमी जायेगा, फिर सोचेगा– अगली बार क्या करें?
- हम बच्चे के साथ 1.घटना/**प्रतिक्रिया** के साथ जीना चाहते है या 2.) नियम/**जिम्मेदारी** के साथ? **आज बच्चे को संबंध का, भाव का कुछ बताते नहीं है| फिर कहते है, बच्चा व्यवहार करना जानता नहीं |**

Q

➢ आप कहाँ है ? 1. - में या 2 में ?

उदाहरण:

1. शिविर का चौथा दिन: माँ घर गयी, बच्चे ने ग्लास तोड़ दिया था: बच्चे ने पुछा: मरोगी नहीं? - उस माँ का अनिश्चित आचरण !
2. बच्चा जब प्रश्न करता है, हम उसे डांटते है| यदि उसका प्रश्न ठीक नहीं है, तो उसके प्रश्न को ठीक करने की जिम्मेदारी मेरी है| बच्चों के साथ हम मेहनत से शुरू करते है, थोड़ी देर बाद हमारी अपनी क्षमता कम पड जाती है, और हम विचलित हो जाते है| बच्चे को ठीक कर रहे थे....खुद फँस जाते है !!

- हमें अस्तित्व के नियमों को समझना होगा| यह नियम मेरे आप के बनाये हुए नहीं है| यह अस्तित्व सहज है| इन्हें हम समझना चाहते है| यही हमारे लिए सहज-स्वीकार होते है; मानव के व्यवहार के नियमों को हमें समझना होगा| मनमानी करते है, तो समस्या में फसते है|

(1.6)आख़री 2 बिंदु जोड़ना:

1. जीव चेतना	2. मानव चेतना
घटना - संवेदना	नियम - समझ
प्रतिक्रिया	जिम्मेदारी
चंचलता अषिक्षित	आराम, आष्वस्ति शिक्षित
4.5 क्रिया	**10 क्रिया**
दुर्घटना के लिए रूकते है, फिर करते है।	*अस्तित्व के नियमों को समझे रहते है। दुर्घटना न आये इसके लिए काम करते हैं।*

(1.7)विश्वास: स्वयं में होना है, बाहर से पाना नहीं है

- आज हम दूसरे का विष्वास पाने के प्रयास में रहते हैं। जबकि हम आष्वस्त हुए तो विष्वास पूर्वक जी सकते है
- हम दूसरे की योग्यता अनुसार उस पर विष्वास करते है– यह हमारे लिए असहज है।
- हम दूसरे को स्वीकारे बैठे है। योग्यता अनुसार उसके साथ कार्यक्रम बनाते है। उसके योग्यता को बढ़ाने में सहयोगी होते है। यह सहज है, हमें स्वीकार्य है।

उदाहरण

Q

1. आप 21 डिग्री (AC) में बैठे हैं, जिसके साथ बैठे है उससे विरोध है तो क्या (AC) का मजा आता है।
2. कोई बैठा भी नहीं है किसी के बारे में अंतर्विरोध है और वह याद आ गया तो क्या (AC) का मजा आयेगा ?

- समस्या केवल भारत–पाकिस्तान मे नही, हमारे अंदर **अंतर्विरोध** का है।
- हम 'मै' की आवष्यकता को ध्यान में रखकर नहीं चलते है। इसलिए जितना भी करें दूसरा अतृप्त रहता ही है। **क्या हम आज दुसरे को अपने व्यवहार से संतुष्ट कर पाते है?**

जिस चीज को समझते है, उसके प्रति विश्वास होता है| मानव के प्रति विश्वास इसलिए नहीं है, क्योंकि मानव को समझे ही नहीं| संबंध को समझे ही नहीं| "स्वयं" को अनदेखी करके चल रहे है, संबंध को अन्देखी किये है| सुविधा पर लट्टू है; 'मुंगेरी लाल' जैसे व्यस्त है !

घर में अभ्यासः– कितने ऐसे लोग है **जिनके** चाहने पर हम हमेषा आष्वस्त रहते है। इसकी सूची बनाइए।

विष्वास की परिभाषा=संबंध निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यों के निर्वाह की निरंतरता

(1.8) जोड़ें: अध्ययन विधि में "सहज स्वीकार" के ऊपर: 'संबंध' *(जो भी 'संबंध' के बारे कहा जा रहा है, वह आपके लिए सहज-स्वीकार है कि नहीं, जांचे)| यदि आपके लिए सहज-स्वीकार है, सभी के लिए ऐसा है (**सार्वभौम**) है या नहीं?*

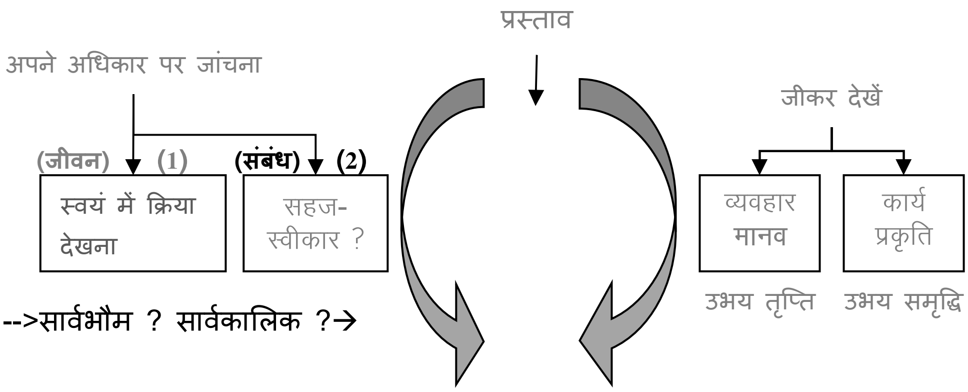

अनुमान, सहमति	– भास – आभास	B
समझ, जानना	– साक्षात्कार – बोध – अनुभव	A

2. सम्मान	=	सम्	+ मान
		(सम्यक / ठीक–ठीक	मापना / मूल्यांकन करना)

- मनुष्य का सम्मान "**जीवन(स्वयं)**" के आधार पर या शरीर के आधार पर?

2.1) अभ्यास #7

	मै	दूसरा	निष्कर्ष
1	मै सुखी समृद्ध होना चाहता हूँ	दूसरा भी सुखी समृद्ध होना चाहता है	लक्ष्य एक
2	मै व्यवस्था को समझकर, उसमें जीकर सुखी होता हूँ	दूसरा भी व्यवस्था को समझकर, उसमें जीकर सुखी होता है	कार्यक्रम एक
3	मै 10 क्रिया संपन्न हूँ	वह भी 10 क्रिया संपन्न है	क्षमता एक

- आज हमारे व्यवहार से दूसरा अपने को घायल महसूस करता है।
- Q कोई आपका मजाक उड़ाए, क्या आपको यह स्वीकार है ?
- आज की षिक्षा इसकी बात नहीं करती। हमको लोहे के गाड़ी में बिठायेगी, उसमें पावर स्टेयरिंग दे दिया उसमें बैठा आदमी दुखी हो रहा है इसका कोई ठिकाना नहीं।
- सम्मान की आवष्यकता निरंतर है।

उदाहरण

➢ आपको घर खाने पर बुलाया, खाना दिया, सम्मान नहीं, तो समस्या है।

2.2) आज क्या करते है:

- आज हम 3 चीज करते है

अधिक	- अधिमूल्यन	"मेरा बेटा कुछ भी कर सकता है" ।
कम	- अवमूल्यन	"किसी भी चीज़ के लायक नहीं ह" ।
कुछ का कुछ	- अमूल्यन	"मेरा बेटा गधा है" ।

बेटे को बोल दिया "राजा बेटा" - अब वह प्रजा ढूँढता है !

उदाहरण:

पति पत्नी के बींच झगड़ा हो गया।

➢ जोर से क्यों बोले?

➢ सबके सामने क्यों बोला?

➢ कमरे में बोलते तो ठीक होता !!!!

उदाहरणः— दूसरे का अपमान करना

1. पत्नी प्रष्न — क्या हो रहा है?
   पति — तुम्हारी काम की बात नहीं है।
   पत्नी — तुम को तो कुछ होष ही नहीं रहता।
   तुम ऐसे हो वैसे हो तुम्हारा खानदान ऐसा है।

- दिनचर्या में कितनी बार ऐसा करतै है हम ? **क्या हम बच्चों का सम्मान करते है?**
- सबसे बड़ी और गहरी समस्या आज यही है।

2.3) आज सम्मान के नाम पर क्या हो रहा है?

आज हम सम्मान के नाम पर भेद करते है।

भेद

- शरीर गत/षरीर सापेक्ष
  - लिंग
  - आयु
  - रंग
  - आकार
  - वंष
  - जाति
  - नस्ल
- साधन/सुविधा सापेक्ष
  - धन
  - पद
- मान्यता गत/मान्यता सापेक्ष
  - संप्रदाय
  - वाद
  - भाषा
  - हुनर

उदाहरण: हर एक भेद का उदाहरण ले सकते है | प्रतिदिन जीते समय कितनी बार हम ऐसे करते है?

- इसके आधार पर तुलना करते है।
- ऐसे करते हुए इसमें भी/समानता/संबंध ही ढूँढते है। कॉमन क्या है?
- किसी भी व्यक्ति से मिलते है, उसके साथ कॉमन बात/तालमेल का आधार ढूँढते हैं। तो हमें ठीक लगता है।

आज आंदोलन के कारण:

- आज के दिन संघर्ष भी इसी कारण है। सारे आंदोलन **भेद** के कारण है।
  - – जाति आंदोलन – नारी आंदोलन
  - – नस्ल आंदोलन – रंग भेद आंदोलन
  - – गरीबी आंदोलन – आरक्षण आंदोलन
  - – भाषा आंदोलन – रोजगार आंदोलन

- हम इसमें श्रेष्ठता को सम्मान मानते है। उसके लिए कुछ विषेष व्यवहार करते है।
  - – कलाकार का सम्मान
  - – धनवान का सम्मान
  - – पदवान का सम्मान

2.4) आज के दिन-पहचान की समस्या

- **पहचान की आवश्यकता - संबंध के अभाव में**
  - ➢ आज घर के बाहर हम पहचान बनाने का प्रयास करते है। **जहाँ संबंध दिखता है, वहाँ पहचान के लिए कोई विशेष प्रयास करना नहीं पढता|** घर में पहचान है, तो **नि:शर्त** unconditional स्वीकृति की अपेक्षा रखते है।
  - Q ➢ **पहचान, संबंध का बिगड़ा हुआ स्वरुप है|** अलग से पहचान की आवष्यकता संबंध का अभाव है। पहचान में/से भय मिलता है या आष्वस्ति मिलती है? निष्चित हो पाते **हैं** या अनिष्चित रहते **हैं** ?

- **रंग/रूप के आधार पर सम्मान:** आज सम्मान पाने के लिए: हमने अपने रंग/रूप को कुछ किया – परंतु इसमें निरंतरता नहीं है।
  - ➢ दूसरा हमारे **शरीर के** रूप की तारीफ करता है हमारी नहीं।
  - ➢ कहेगा "आप तो अच्छे दिख रहे है"– हम ऊपर चढ़ जाते है|
  - ➢ और अगले पल कह देता है - पर **उनके** जितना नहीं – तो हम झट से नीचे आ जाते है।
  - ➢ अतः हमारा रिमोट दूसरे के हाथो में है !!

- कपड़े या सुविधा से पहचान

Q

1. दूसरा वस्तु का आंकलन कर रहा है आपको नही। शरीर के संरक्षण के लिए कितने कपड़े चाहिए ? सम्मान सुनिष्चित करने के लिए कितने कपड़े चाहिए?
2. इन चीजो की अपनी कोई निरंतरता नहीं क्योंकि ये भौतिक है **इनसे** सम्मान अर्थात गुणात्मक वस्तु पाना असंभव है।
3. दूसरे के पास देने के लिए सम्मान है नही हम मांगते है। और दूसरे की भी यही हालत है। दोनो सम्मान के भिखारी बने रहते है।

- <u>आज सम्मान पाने के तरीके का परिणाम</u>
  आज हम जो सम्मान के लिए कर रहे है उससे

Q
  - दूसरा पास आयेगा या दूर जायेगा'– आप क्या चाहते है ?
  - उसमें आपके प्रति संबंध का भाव होगा या जलन होगी ? आप क्या चाहते है ?
  - हम तनाव/श्रम में रहते है या आराम में? आप क्या चाहते है ?

- जिनको हम अपना मानते **हैं,** घर में उनके साथ इतना सारा प्रयास करना नहीं पड़ता।
- कपड़े मंहगे नही पहनने पड़ते। बाल रंगने नही पड़ते। क्योंकि हम उनसे आष्वस्त है।
- आज घरो में यह संकट घुस गया **है,** पति–पत्नी में बहन–बहन में, एक दूसरे को कपड़ो से **सजाने** का प्रयास है।
- हम आज श्रम क्यों करते है ? - दूसरा हमें पहचान ले स्वीकार ले, **मात्र इतने के लिए** !

(2.5)"सम्मान", संबंध की स्वीकृति की बात है **|**

- यह बाहर से नहीं**,** अपने में, समझ से आयेगी, संबंध समझने से **होगा**
- ऐसा समझेंगे तो हम आराम मे आते है। दूसरे को परेषान नही करते, उसे **भी** आराम में लाते है **|**

<u>(2.6) यदि हम समान है, तो दो व्यक्तियों में अंतर, किस बात की हो सकती है?</u>

table में 4th बिंदु जोड़ें:

	मै	दूसरा	निषकर्ष
1	मै सुखी समृद्ध होना चाहता हूँ	दूसरा भी सुखी समृद्ध होना चाहता है	लक्ष्य एक
2	मै सही/व्यवस्था को समझकर और उसमें जीकर सुखी होता हूँ	दूसरा भी सही/व्यवस्था को समझकर और उसमें जीकर सुखी होता है	कार्यक्रम एक
3	मै क्रिया/बल/षक्ति संपन्न हूँ	वह भी क्रिया/बल/षक्ति संपन्न है	क्षमता एक
4	**कम/ज्यादा समझदार**	**दूसरे को समझता हूँ/समझाता हूँ।**	**केवल समझ में अंतर**
1, 2 या 3 के आधार पर समानता का सम्मान (**मानव होने के नाते**) 4 के आधार पर श्रेष्ठता की पहचान			

*सम्मान की परिभाषा *:– श्रेष्ठता/प्रतिभा की स्वीकृति, निरंतरता।*

* *"परिभाषा संहिता" में दिए परिभाषाओं के लिए लेख के अंत को देखें*

3. स्नेह–दूसरे को अपने संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव

(3.1) 'सम्बन्धी': परिचय

- संबंध/संबंधी को स्वीकारते है/समझते है, तो स्नेह **अपने आप** आता है।
- हमारे में, गहरे में दिखता है कि दूसरा हमारा संबंधी है।
- आज हम खून के रिष्ते को मानते है, जबकि
  - पति पत्नी खून का रिष्ता नहीं है
  - हमारे माता पिता का आपस में खून का रिष्ता नहीं है
  - शादी के बाद संबंध बनाने के लिए खून नहीं मिलाना पड़ता।

- आज विष्वास और सम्मान की गहरी समस्या हैं।
  - बरसों साथ रहते है, विष्वास, सम्मान होता नहीं।
  - उमर होते होते पति पत्नी मे चिढ़ क्यों आ जाती है?
  - अपने आपको झेल रहे थे, दूसरे को इतने साल झेला, साथ में शरीर भी तकलीफ दे रहा है। ये सब थोड़ी देर बाद चिढ़ में परिवर्तित हो **जाता** है।
  - तो हम आज <u>समझौते</u> में जीते है, <u>संबंध</u> में नहीं।
- **विश्वास**, सम्मान के बिना स्नेह संभव नहीं।
- यह विष्वास, सम्मान मेरे समझ का फलन है। कोई कल्पना या दबाव नहीं।
- इसके पहले हमारे **में** संबंध का भाव होता भी नहीं।

Q

- <u>विश्वास, सम्मान, स्नेह, **लेने की नहीं, देने की चीज है**| इसके लिए कोई शर्त नहीं है| यह निःशर्त है (unconditional) |</u>
- **आप दुसरे से unconditional (निःशर्त) स्वीकृति चाहते है या नहीं?**
- **दे पाते है या नहीं?**
- **सामने वाले के पास भाव है ही नहीं, स्वीकृति है ही नहीं, तो कहाँ से दे पायेगा?**

(3.2) अभ्यास #8:

	मै	दूसरा
1	मै गलती नहीं करना चाहता	दूसरा भी गलती करना नहीं चाहता
2	मै गलती कर बैठता हूँ–नासमझी में	दूसरा भी गलती नासमझी में करता है
3	गलती होने पर मुझे स्नेह पूर्वक अकेले में समझाया जाए	दूसरे को भी गलती होने पर स्नेह पूर्वक अकेले में समझाया जाए। **या सूली पर चढाएं?**
4	मै समझता हूँ तो दूसरे को समझाने की जिम्मेदारी लेता हूँ। स्नेह पूर्वक समझाता हूँ	दूसरा भी समझता है तो दूसरे को समझाने की जिम्मेदारी लेता है। स्नेह पूर्वक समझाता है।

Q

• क्या आप में यह भाव है? • क्या इसकी निरंतरता है?	यह भौतिक चीजो से ज्यादा ठोस है। इनमें निरंतरता होती है। भौतिक वस्तुओ में निरंतरता नही होती।

- समस्या भौतिक वस्तु में नहीं है। समस्या संबंध में भाव के न होने में है, **क्योंकि संबंध को कभी समझे नहीं ।**

- आज की विपरीत ट्रेनिंग:
  - ➢ हमारी सारी षिक्षा पद्धति हमारी अर्थात 'मै' की आवष्यकता को पहचानना नहीं सिखाती।

(3.3) प्रतिस्पर्धा

➢ हमको बचपन से प्रतिस्पर्धा की ट्रेनिंग मिलती है। दूसरे से आगे निकलना ही सिखलाया जाता हैं।

उदाहरण – 300 बच्चो की क्लास में पूछा गया

- कितने लोग प्रतिस्पर्धा चाहते है? – सारे हाथ उठे
- कितने लोगो को पता है प्रतिस्पर्धा मे तनाव होता है? – सारे हाथ उठे
- अब कितने लोगो को प्रतिस्पर्धा चाहिए? – 3 हाथ उठे।

Q

➢ प्रतिस्पर्धा करते समय हम दूसरे को कैसे देखते है?

- संबंधी के रूप में या विरोधी के रूप में?
- पोषण करने का सोचते है या शोषण करने का सोचते है?

Q

- इसमें आप श्रम मे होते या आराम में होते हो
- सृजन कौन सी स्थिति में ज्यादा संभव है,?

➢ प्रतिस्पर्धा में जीतने का आधार **भय और प्रलोभन** ही है

- यह किसी को स्वीकार होता नहीं
- इसलिए षिक्षा और जॉब श्रम है। जॉब मे आधी से अधिक उर्जा परपीड़ा मे **चली जाती** है।

(3.4) आखरी 2 बिंदु जोड़ना:

1. जीव चेतना	2. मानव चेतना
घटना - संवेदना	नियम - समझ
प्रतिक्रिया	जिम्मेदारी
चंचलता अषिक्षित	आराम, आष्वस्ति शिक्षित
4.5 क्रिया	10 क्रिया
प्रतिस्पर्धा	**संबंध, पूरकता**
सापेक्ष विश्वास	**निरपेक्ष, स्वयं में विश्वास**

(3.5) अस्तित्व में संघर्ष नहीं है:

- अस्तित्व में **कोई** संघर्ष नहीं है। **यह स्वयं सह-अस्तित्व है, व्यवस्था है**
- **इसीलिए संघर्ष किसी को भी स्वीकार होता नहीं |**
- विरोध हमको सहज नही है इसलिए स्वीकर नहीं है।
- आज हम यह मानकर शुरू करते है कि दूसरा झगड़ा करना चाहता है।
- आप जो चाहते है– विष्वास, सम्मान, **यदि हमारे पास है**, तो हम झगड़ा क्यों करें?

Q **अवलोकन:**

- क्या आपको कोई आज समझता है?
- बच्चो को लगता है मॉ–बाप समझते नहीं
- मॉ बाप को लगता है बच्चे हाथ से निकल गये।
- हम आज शरीर/सुविधा के लिए व्यस्त है 'मै' का कोई ठिकाना नहीं।
- इसलिए अकेलापन महसूस करते है।

(3.6) संबंध हर मानव के साथ है:

Q

- आप एक व्यक्ति के साथ संबंध पूर्वक जीना चाहते है या कुछ लोग के साथ या सभी के साथ?
- जहॉ हम संबंध पहचानते है वहॉ हम शोषण नहीं करते - जैसे घर में|
- हम संबंधो में जीकर **ही** तृप्त हो पाते है।

स्नेह की परिभाषा – न्यायपूर्ण व्यवहार में निर्विरोधिता

संबंध की परिभाषा = "पूर्णता के अर्थ में अनुबंध/सहज स्वीकृति"

4. ममता :– संबंधी के शरीर के पोषण संरक्षण का भाव (समझदारी सहित)

- अपने देष की मॉओ में इसका सप्लाई ज्यादा हैं
- ममता ज्यादा है समझ कम है।
- ममता को व्यक्त करने के लिए अलग अलग विधियों को अविष्कार किया जाता है।
- उदाहरण:
  - ➢ बच्चे की पीठ पर घूसा मारना वो "आ" बोले तो मुह में निवाला डाल देना
  - ➢ बच्चा जख्मी होता है तो मॉ बेहोष हो जाती है।

⁕ तृप्ति केवल संबंध समझने से **और** स्वीकारने से है।

- ➢ नर्स बच्चे की देखभाल करे या मॉ बच्चे की देखभाल करे |
- ➢ दोनो में से कोई भी तृप्त हो सकता है संबंध की स्वीकृति के आधार पर |

- संबंध के पहचान से ही मूल्य बहते है -
  - ▪ बोलने से, उपदेष देने से , **मात्र कामना करने से** आता नहीं |

- इसलिए "मूल्य षिक्षा" सीखने की या रटने की चीज नहीं है। "चेतना विकास" से ही होगा।

ममता की परिभाषा – स्वयं की प्रतिरूपता की स्वीकृति, उसकी निरंतरता

---

5. वात्सल्य: संबंधी को समझदार बनाने का भाव

- वात्सल्य अपने आप बहता है।
- समझने योग्य वस्तु को समझाना:- **४:स्तर पर व्यवस्था को समझाना**
- आज **हमारा सारा ध्यान**
  - ➢ **पढाना**
  - ➢ **सिखाने पर है**
- आज इसकी भरपाई करनी है
  - ➢ समझाना
  - ➢ मै सुखी हुआ दूसरे को भी सुखी बनाने का प्रयास |

वात्सल्य की परिभाषा = समाधान/समृद्धि के अर्थ में पोषण संरक्षण।

---

6. गौरव = जिन्होंने भी सही समझ, ज्ञान और सही जीने के लिए प्रयास किया हो, उनके प्रति भाव

*गौरव **की परिभाषा** = श्रेष्ठ/विकसित की पहचान एवं उनके अनुरूप होने में उत्साह और निरंतरता।*

---

7. श्रद्धा = श्रेष्ठता की स्वीकृति का भाव, समझदारी की ओर गतिषीलता

- श्रेष्ठ समझदारी के अर्थ में हैं।

(7.1) <u>श्रेष्ठता और विषेषज्ञता में अंतर</u>

<u>श्रेष्ठता (Excellence)</u>	**<u>विषेषज्ञता (Specialty)</u>**
सभी श्रेष्ठ हो सकते है।	विषेष कुछ ही हो सकते है।
श्रेष्ठता **निरपेक्ष** है	विषेषज्ञता सापेक्ष है
दुसरे के पोषण का सोचते है		**शोषण का सोचते है**	

<u>(7.2) पूज्यता</u>

- अगर श्रद्धा है तो पूज्यता का भाव आता ही है।
  - पूजा करना
    - गुणात्मक परिवर्तन के लिए सक्रियता |
    - **स्वयं** श्रेष्ठ बनने का प्रयास |
    - केवल शुभ कामना और पहचान मात्र नहीं; **वैसा** होने में उत्साह, हमारा **<u>स्वयं का</u>** प्रयास |
    - हम ऐसा श्रेष्ठ बने, प्रमाण प्रस्तुत करें।
  - <u>आज **की पूजा की स्थिति:**</u>
    - पूजा के नाम पर हम भगवान को काम सौपते रहते है |
    - "ये करो - ऐसा करो - ऐसा मत करो" और हम वैसे ही बने रहते है अपने आप में| स्वयं **सुधरने का कोई प्रयास** नहीं करते |

श्रद्धा की परिभाषा – श्रेष्ठता की ओर प्रवृत्ति, संकल्प सहित गति

---

8. कृतज्ञता = जिन्होने मेरी श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया, उनके प्रति भाव

- आज षिक्षको का कहना है कि छात्रो में कृतज्ञता नहीं है।
  - वह इसलिए नहीं है क्योकि कोई स्थायी या निरंतर वस्तु छात्रो को दिया नहीं है।
  - सीमित वस्तु सुविधा, सूचना, हुनर देकर **हम** असीमित वस्तु = कृतज्ञता की अपेक्षा करते है, **जो मिलता नहीं!**

कृतज्ञता की परिभाषा – जिस किसी से भी समझदारी और उन्नति के लिए सहायता मिली उसके प्रति स्वीकृति

---

9. प्रेम–पूर्णता में रति

- अस्तित्व में हर ईकाई के साथ संबंध को देख पाना व स्वीकारने का भाव प्रेम है।
- स्वीकारने से **अनन्यता** आती है

  अनन्यता - ना–अन्य, कोई दूसरा नहीं

❖ शिष्ट मूल्य:

optional

	स्थापित मूल्य		शिष्ट मूल्य	शिष्ट मूल्य का संक्षिप्त परिभाषा
1	विश्वास	1	सौजन्यता	सहकारिता, सहयोगिता
2	सम्मान	2	सौहार्द्रता	स्पष्टता से मूल्यांकन
3	स्नेह	3	निष्ठा	मानवीय विचार, व्यवहार
4	ममता	4	उदारता	तन, मन, धन अर्पण
5	वात्सल्य	5	सहजता	प्रमाण प्रस्तुत करना
6	गौरव	6	सरलता	तनाव रहित अंगहार, प्रकाषन
7	श्रद्धा	7	पूज्यता	गुणात्मक परिवर्तन के लिए सक्रियता
8	कृतज्ञता	8	सौम्यता	स्वयं का नियंत्रण
9	प्रेम	9	अनन्यता	पूर्णता के लिए पहचान– प्रमाण

- स्थापित मूल्य – जो स्थिति में बना है।
- शिष्ट मूल्य – जो **परस्परता** में व्यक्त होता है।
- स्थापित मूल्य होने पर ही षिष्ट मूल्य व्यक्त होता है।

❖ संबंध, मूल्यों पर सारांश:

Q

- क्या इन 9 मूल्यों के बाद हमारे पास और कोई अपेक्षा है?
- क्या यह 9 **मूल्य** हमारे लिए सहज है ? क्या इनके **साथ जीने** से उभय सुख होगा?
- इसमें केवल "ममता" की पूर्ति के लिए "सुविधा" की आवष्यकता पड़ती है।
- समझ के लिए, भाव के लिए, कोई सुविधा की आवष्यकता नहीं पड़ती है।
- अतः मूल्यों की पूर्ति हेतु सुविधा की आवष्यकता नगण्य है।
- केवल संबंध की स्वीकृति की जरूरत है, **समझ की आवश्यकता है |**
- हम अपने बारे में कभी ख्याल किये नहीं। अपने आप से अनजान है। अपने संबंधो से अनजान है।
- इन भावों को <u>पैदा नहीं करना</u> पड़ता है, सिखाना नहीं पड़ता है। संबंध **समझते, स्वीकारते** है, तो यह **मूल्य** अपने आप बहतें है|
- **विश्वास**, सम्मान खोने की चीज नहीं है। अगर हमने इसे खोया तो यह हमारे पास कभी था ही नही। केवल समझौता कर रहें **थे**।
- अगर मूल में विष्वास है, तो राय में मतभेद हो सकता है पर इससे घायल नहीं होंगे।

- **विश्वास को "<u>आधार मूल्य</u>" कहा है| प्रेम को <u>"पूर्ण मूल्य"</u> कहा है| विश्वास वह चीज जहाँ हम तय करते है कि मानव कैसा है?..**

2) मानव संबंध
2.1) परिवार में व्यवस्था - परिवार का स्वरुप

○ मानव–मानव संबंध की बात हो चुकी है, अब हम परिवार की बात **कर सकते** है।

(a) निम्नलिखित दोनों प्रश्नों पर चर्चा:

- (क्यों) – मानव शरीर परम्परा (निर्माण, पोषण, संरक्षण)
  – षिक्षा का अवसर (समाधान –समझ)
  – समुद्धि (हुनर)

- (क्या) – निष्चित **मानव** समूह जो **मानव** लक्ष्य के लिए परस्पर पूरक है।
  ⁎ जन्म संबंध अर्थात् सीमित व्यक्तियों का समुदाय जिसमें प्रत्येक व्यक्ति मानवीयता पूर्ण आचरण करते हुए संबंधों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह पूर्वक परस्पर भौतिक समृद्धि, बौद्धिक समाधान के लिए पूरक है

मानव लक्ष्य:

1	2	3	4
समाधान	समृद्धि	अभय	सह–अस्तित्व
हर व्यक्ति में	हर परिवार में	समाज में	चार अवस्थाओं में

- (कैसे) – संबंधो की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

(b) ७ मानव संबंध है, जिनमे से प्रधान रूप में परिवार के सीमा में ३ संबंध है:

	संबंध (**संबोधन**)	क्रिया - (व्यक्ति नहीं)
1	पति–पत्नी	परस्पर पूरक
2	माता–पिता, पुत्र–पुत्री	पोषण–संरक्षण, उपयोगिता–पूरकता
3	भाई–बहन	सहयोग
4		
5		
6		
7		

⁎ क्रिया के अनुसार नामकरण या संबोधन है।

उदाहरण:

- जहाँ पोषण क्रिया है, उसे माँ कहेंगे| माँ पुरुष या स्त्री, दोनों हो सकते है| घर का व्यक्ति भी, कोई और भी |
- जहाँ परस्पर सहयोग हो, उसी को भाई-बहन कहेंगे
- जहाँ उपयोगिता-पूरकता हो, उसी को पुत्र-पुत्री कहेंगे

आज की समस्या:

- हम नाम तो दे देते है, परन्तु वह क्रिया रहता नहीं|
- उदाहरण:
    - पति पत्नी कहते है, परन्तु परस्पर पूरकता की निरंतरता नहीं है |
    - भाई-बहन नाम है, परन्तु सहयोग की निरंतरता नहीं है |

(c) परिवार में न्याय:

संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति होने से न्याय हुआ|

** मूल में हर मानव के साथ संबंध की स्वीकृति रहता है, रोज उठने बैठने वालों के साथ प्रयोजन के अर्थ में संबंध पहचानने से, मूल्य बहते है, तो न्याय हुआ / इसके केन्द्र में जीवन या जीवन(स्वयं) रहता है*

(d) समृद्धी

- भौतिक आवष्यकताएं परिवार में ही निष्चित हो पाती है। इसलिए समझ के बाद **(समाधानित होने के पश्च्यात)** आवष्यकताओं से अधिक उत्पादन से ही समृद्धि संभव है।
- अकेले व्यक्ति में आवष्यकता निष्चित हो नहीं पाती है। अकेला व्यक्ति व्यवस्था का आधार नहीं होता।

परिवार में व्यवस्था - सारांश (समय होने से बताना है)

- **संबंध**
  - है, हर मानव के साथ है| इसे बनान नहीं है |
  - संबंध का आधार **जीवन, या जीवन(स्वयं) है** - शरीर, सुविधा अथवा मान्यता नहीं

- **परिवार**
  - में जीते हुए मानव लक्ष्य, प्रयोजन के अर्थ में ७ संबंध है, जिसमे से परिवार में प्रधान रूप में ३ संबंध है | हर संबंध एक क्रिया है, जिसका एक निश्चित प्रयोजन है | क्रिया होने से नाम है| जैसे "पोषण" क्रिया का नाम माँ है |
- **मूल्य बहते है**
  - विश्वास, सम्मान, स्नेह, - यह मूल्य 'बाहर' से लेने की चीज नहीं है| यह समझ का फलन है, संबंध स्वीकारने का फलन है| संबंधों को प्रयोजन के अर्थ में पहचानता हूँ, तो यह मूल्य अपने आप बहते है|
- **मूल में स्थापित मूल्य** होने से शिष्ट मूल्य अपने आप व्यक्त होते है|
  - इसके लिए कोई विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है| हम स्वयं भी तृप्त रहते है, दुसरे को भी तृप्त कर पाते है|
- **आज की स्थिति:**
  - हमने संबंध को कुछ मान रखा है | संबंध क्या है, इसको समझे नहीं | हमको जब अच्छा लगता है, तब संबंध है, अन्यथा नहीं| अत: आज हमारे लिए 'रूचि' के आधार पर संबंध है |
  - मूल्यों की नाम लेते है, आभास होता है, परन्तु इनकी कोई निरंतरता नहीं है|
  - ऐसे रहते अधिकतम ध्यान सुविधा पर है |

- **न्याय**
  - संबंधों में **न्याय** की सम्भावना है | संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति |

- **समृद्धि**
  - परिवार में जीते हुए ही अवश्यकताएँ निश्चित होते है, अधिक के उत्पादन से **समृद्धि** संभव है - सही समझ सहित

2) मानव-मानव सम्बन्ध समझना:

2.2) समाज में व्यवस्था प्रारंभ

4) समाज में व्यवस्था:
रखने का क्रम - मुख्य बिंदु

मानव लक्ष्य

- समाधान, समृद्धी, अभय, सह-अस्तित्व
  - इससे कम में चलता नहीं, अधिक की कल्पना नहीं है |
  - पहले समाधान के लिए काम करना होगा |
- समझ के बिना लक्ष्य या प्रयोजन ही स्पष्ट होता नहीं |
- आज: लक्ष्य का कोई पता नहीं, क्योंकि समझ नहीं है |
- इस मानव लक्ष्य की पूर्तिहेतु ५ आयामी कार्यक्रम/योजना |

शिक्षा-संस्कार

- हर बच्चा: न्याय चाहता, सही कार्य व्यवहार चाहता, सही को बोलता है - अवसर दें
- *आज की स्थिति:*
  - अभ्यास #9: शिक्षित-अशिक्षित में अधिक अंतर नहीं:
    - अहंकार, Depression
  - अभ्यास #9: भय, प्रलोभन
    - केवल सीखना-करना पर ध्यान है, समझने पर नहीं |
- शिक्षा से अपेक्षा: विश्वास, स्वास्थ्य, समृद्धी, सामाजिकता, समाज में भागीदारी |
- आगे का रास्ता, देश में विभिन्न प्रयास |

स्वास्थ्य-संयम

- आज की स्थिति: आहार, विहार, व्यायाम, औषधि की स्थिति ?
- Insurance and Assurance | संबंध सबसे बड़ा insurance है |

उत्पादन कार्य

- उत्पादन प्रकृति में पहले से हो रहा है | हम केवल उस चक्र को बढ़ा रहे है
- २ प्रश्न:
  - **क्या उत्पादन करना है?** - आवश्यकता निश्चित, मानव लक्ष्य के तहत |
  - **कैसे करना है?** - आवर्तनशील विधि: प्राकृतिक नियम अनुसार |

- आज की स्थिति:
  - प्रदूषण:- उदाहरण: गंगा |
  - क्षरण :- उदाहरण: कोयला |
  - परम्पराएं खत्म:- उदाहरण: चावल |
  - समाज के स्तर पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन आज भी हो रहा है |
- समस्या का कारण
  - प्रदूषण:- निरंतर सुख को सुविधा से प्राप्त करने का प्रयास: अधिक उत्पादन |
  - क्षरण :- प्राकृतिक संबंध की समझ नहीं होना |
  - परम्पराएं खत्म:- गरीबी की समस्या: संबंध नहीं देख पाना| समस्या उत्पादन का कम, वितरण का ज्यादा है |

विनिमय कोष

- आज विनिमय का उद्देश्य: लाभोन्माद |
- अभ्यास #10: मूल्य, कीमत में अंतर |
- उपयोगिता मूल्य कभी बदलता नहीं| कीमत, बदलता है| उदाहरण: गेहूं |
- मान्यता जुड़ने से, कीमत बढ़ता है, उपयोगिता, उतना ही|
- मानव के हस्तक्षेप से प्राकृतिक चीजों का मूल्य घटा है, कीमत बी बढ़ा है |
- प्राकृतिक सम्पदा निःशुल्क है |

न्याय सुरक्षा

- आज:
  - न्याय की पहचान नहीं है| अन्याय होने पर, परपीड़ा, बदला लेने को न्याय कह रहे है |
  - न्याय के नाम पर फैसले सुनाये जाते है |
- न्याय
  - बनाने की नहीं, समझने की वस्तु है |
  - दो समझदार व्यक्तियों के बीच उभय तृप्ति से न्याय मिलता है, कागज पर नहीं **|**
  - मानव-मानव संबंधों में भागीदारी मूल्यों के रूप में है | जैसे जड़ परमाणुओं में अंशों का आदान-प्रदान होता है, पहचानने-निर्वाह करने के क्रम में
- सुरक्षा:
  - आज मात्र संरक्षण की बात कर रहे है, जबकि पशु भी उतना कर ही रहा है| हम संवर्धन, सदुपयोग कर सकते है|

परिवार और समाज

- अनेक परिवार मिलकर ही समाज बनता है |
- परिवार समाज की सबसे छोटी व्यवस्था है |
- हर मानव के साथ संबंध देख पाना: <u>परिवार से विश्व परिवार तक</u> = **अखंड समाज**
- व्यवस्था में भागीदारी: <u>परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था तक</u> = **सार्वभौम व्यवस्था** |
- परिवार में ३ आयाम पूरे होते है -
    - समाज में शिक्षा और स्वास्थ्य होता है | प्रत्येक परिवार में उत्पादन, विनिमय, न्याय होता है | यह सार्वभौम व्यवस्था का आधार बनता है |
- मानव संबंध में शेष ४ संबंध - समाज के स्तर पर है |
- चर्चा: ५ आयामी योजना से मानव लक्ष्य पूरा कैसे होता है?
- शासन व्यवस्था नहीं है|
- सामाजिक नियम |

2) मानव संबंध
2.2) समाज में व्यवस्था

Q

चर्चा : समाज में जीने की आवष्यकता क्यों है? हम अकेले क्यों नहीं जी सकते?

मानव समाज की आवश्यकता: मानवीय लक्ष्य को साकार करने के लिए व्यवस्था |

मानव लक्ष्य

Q

- मानव समाज का लक्ष्य क्या है? मानव लक्ष्य क्या है?

1		2		3		4
समाधान (हर व्यक्ति में)	→	समृद्धि (हर परिवार में)	→	अभय (समाज में)	→	सह–अस्तित्व (4 अवस्थाओं में)

Q

- **(a) समाधान हर एक के लिए**
  - समाधान हर व्यक्ति में होना है या कुछ लोगों में होना है और बाकी उनके अनुसार चलेंगे?

- **(b) अभय और निर्भय**
  - यह अभय की बात **है**, निर्भय नहीं। (मै किसी से डरता नहीं **पर** बंदूक रखता हॅू)
  - आज हम सुरक्षा के नाम पर धरती को 20 बार उड़ाने की तैयारी कर बैठे है।
  - कहॉ का समाज ज्यादा सुरक्षित है? जहॉ डंडे से काम चले या बंदूक की जरूरत पड़े?
  - आज के दिन भय है, फिर भी ''देख लॅूगा'' इसकी तैयारी करते है।

Q

- **(c) यह न्यूनतम है**
  - यह चारों चाहिए या इनमें से किसी एक को कम किया जा सकता है?
  - **क्या इससे अधिक की कल्पना कर सकते है?**

- **(d) आज की स्थिति**
  - क्या आज का समाज मानवीय है?
  - यह स्टेण्डर्ड/मानक है। इससे कम में हम तृप्त हो नहीं पाते। इससे कम में मानवीय समाज नहीं हैं।
  - आज का समाज किस के लिए काम कर रहा है? 1, 2, 3, 4 में से किस के लिए?

Q

Q

- **(e) हमें कहाँ काम करना है?**
    - इसी क्रम में आयेगा 1 से 2 फिर 3 फिर 4
    - 2 का रास्ता 1 से ही है।
        - कितना चाहिए तय नहीं है। **कितनी** भी तेजी से बनाए variety **बनायें** quantity **बनायें अतृप्ति और दरिद्रता** निष्चित है **|**
    - समृद्धि समाधान से ही आयेगी दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

मानवीय लक्ष्य की पूर्ति के लिए किस प्रकार की व्यवस्था **लगेगी?**

- व्यवस्था के पॉच आयाम
    1. शिक्षा–संस्कार योजना
    2. **स्वास्थ्य**–संयम योजना
    3. उत्पादन–कार्य योजना
    4. विनिमय–कोष योजना
    5. न्याय–सुरक्षा योजना

---

1. षिक्षा संस्कार

- शिक्षा – चार स्तर पर या स्वयं से संपूर्ण अस्तित्व तक व्यवस्था को समझने की पद्धति, प्रक्रिया
- संस्कार – चार स्तर पर (स्वयं से संपूर्ण अस्तित्व तक) की समझ/स्वीकृति, एवं उसके अनुरूप जीने की तैयारी/निष्ठा, जीना

* जैसे एक व्यक्ति में समझ(संस्कार) है| किसी दुसरे में यह संस्कार/समझ चले जाये, वह पद्धति शिक्षा है| हमको शिक्षा मिलता है, तो हम में संस्कार होता है|

 # शिक्षा का फलन संस्कार है

(1.1) षिषु की आवष्यकताः

हर बच्चा जन्म से		हम क्या कर सकते है
• न्याय चाहता है।	→	अपने व्यवहार से उन्हें न्याय प्रदान करें
• सही कार्य व्यवहार करना चाहता है।	→	योग्यता विकसित करें, अवसर दें
• सही बोलना, समझना चाहता है।	→	सहीं **को** समझाया जाए

समझना ==> जीना ==> समझाना = **समाधान**, सुख
सीखना ==> करना ==> सिखाना = समृद्धि

(1.2) वर्तमान स्थिति/समस्या

- **अभ्यास #9:** आज क्या कर रहें है।

	समझ	संबंध	ळुनर	सूचना	धन	श्रम	आत्मविष्वास	भय	समृद्धि
शिक्षित	?	?	√-15	√√	√√	√	?/√	?	?
अशिक्षित	?	?	√√-64	√	√	√√	?	?	?

→ सिद्ध का आंकड़ा गॉव और शहरों में।

- **आज का शिक्षित मानव**
  - अहंकार –मै सबसे समझदार हूॅ। मॉ बाप कुछ नहीं जानते। दूसरा मेरे साथ जीने के लायक नहीं है = अहंकार
  - **Depression: मैं दुसरे के साथ जीने लायक नहीं हूँ**

- **शिक्षा में/से भय और प्रलोभन**
  - आधुनिक षिक्षा भय और प्रलोभन पर आधारित है।
  - *भय*

कक्षा	प्राण भय	मान भय	धन भय	पद भय
1–5	√			
6–12	√	√		
कॉलेज	√	√	√	
उसके बाद	√	√	√	√

  - *प्रलोभन*
    - सबसे आगे ।
    - सम्मान, सफलता ।
    - धन/पुरस्कार ।

- भय और प्रलोभन किसी को भी स्वीकार नहीं है। **"सफलता"** - "समझ" से आयेगी न कि प्रलोभन से।
- आज **महंगे** स्कूल सिर्फ इसी के लिए है
  - सीखना, करना, सिखाना ।
  - आज केवल यहीं काम चल रहा हैं ।
  - इसमें भी कंजूसी है। आई.पी.आर. (बौद्धिक संपदा अधिकार) की बात करते है ।

(1.3) शिक्षा से अपेक्षा

1. स्वयं के प्रति विष्वास, अभयता, तृप्ति (**स्वयं का समझ, मानव अस्तित्व का समझ**) |
2. **श्रेष्ठता का सम्मान (मानव में श्रेष्ठ क्या है, की पहचान, ऐसे होने में तत्परता)** |
3. **समझ और जीने में संतुलन (जैसे समझे, वैसे जीना) - प्रतिभा, व्यक्तित्व में संतुलन**
4. **संबंधों में तृप्ति (व्यवहार में सामाजिक)** |
5. समृद्धि पूर्वक जीना (व्यवसाय में स्वावलंबी) |

(1.4) आगे का रास्ता

- जीवन विद्या योजना |
- षिक्षा का मानवीय करण– “चेतना विकास मूल्य **शिक्षा**” |
- षिक्षा–संस्कार योजना |

- देष में अलग अलग प्रयास
  - छत्तीसगढ़ **स्कूल** षिक्षा **विभाग**
  - उत्तर प्रदेष आई आई टी, **इंजीनियरिंग, पुंजाब इंजीनियरिंग**
  - IIIT हैदराबाद, IASE **विध्यालय**, राजस्थान

---

2. स्वास्थ्य–संयम

- संयम – स्वयं('मैं')/जीवन में **श**रीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव।
- स्वास्थ्य – अंग प्रत्यंग की व्यवस्था बनी रहे। शरीर जीवन के अनुसार कार्य **करता रहे**।

#संयम का फलन शरीर में स्वास्थ्य है

Q
- वरीयता में कौन सा पहले आएगा?
- आज संयम की बात नहीं है।
- केवल सुविधा से पूरा होता नहीं। मै को जिम्मेदारी लेना है।
- संयम, समझ से जिम्मेदारी लेने से ही आयेगा

- शरीर अपने आप में एक व्यवस्था है। इसको समझना है।
- अपने शरीर को हम जानते नहीं। अनदेखा कर दिया है।

आज **की स्थिति:**

आहार	**विहार**	व्यायाम	औषधि
मिलावट Hybrid, Pesticide Fertilizers	11 बजे खाना 9 बजे उठना	जिम **की** सायकल कही **पहूँचती** ही नहीं	प्राणनाषक दवाएं (antibiotic)

- अस्पताल में रोग ठीक किया जाता है या स्वस्थ रहना सिखाया जाता है?
  - तो यह health care नहीं बल्कि disease fixing system हैं।
  - बीमा हम भय से लेते है। सबसे बड़ा बीमा संयम ही है।

    insurance नहीं assurance चाहिए |
- आज का अर्थषास्त्र –आप बीमार रहें और बीमा कराएं यह ज्यादा अच्छा हैं।,
- hospital advertisement – "Get your heart checked in 5 min. Don't worry"

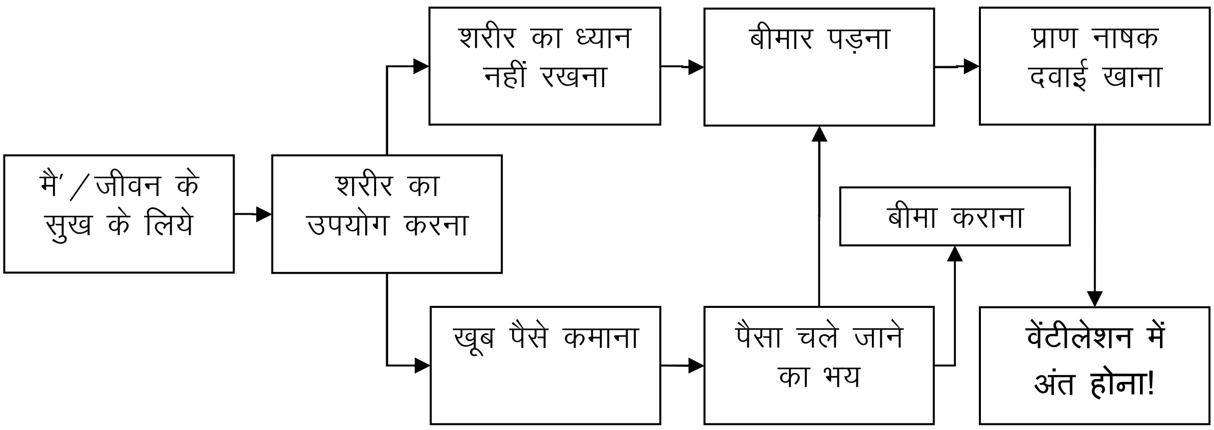

---

3. उत्पादन - कार्य

कार्य – मनुष्य द्वारा मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ आवष्यक सुविधा के उत्पादन के अर्थ में किया गया श्रम

उत्पादन – कार्य से प्राप्त वस्तु |

#कार्य करते है, तो उत्पादन होता है/ कार्य का फलन उत्पादन है

Q

(3.1) कौन बनाता है ?

- उत्पादन प्रकृति में पहले से हो रहा है।
- हम केवलः उसे बढ़ा रहें है |
    - हम केवल बो रहें है |
    - समेट रहें है |
    - संग्रह कर रहें है।

- पेड़ में अपना फर्टिलायजर स्वयं हो रहा है। संसार के सबसे बड़े पानी के पम्प पेड़ है।
- अलग अलग पेड़ पौधे उसी मिट्टी को पहचानकर उससे अलग अलग रचना बीज बनाते है।
- हम आज जब खाते है तो सड़ाने की प्रक्रिया को और बढ़ाते है परंतु उसे वापस प्रकृति में भेजते नहीं। टैंक में जमा करते है सुरक्षित रखते है। फिर अपने आपको **विकसित** मानते है।

(3.2) उत्पादन में दो प्रश्न है:

1. **क्या उत्पादन करना है?:-** समझ सहित परिवार की आवश्यकता निश्चित होती है, तो इसका उत्तर मिलता है
2. **कैसे उत्पादन करना है**:- प्राकृतिक नियम अनुसार:चक्रीय क्रम, आवर्तानशील विधि से

(3.3) वर्तमान स्थिति – समस्या:

1) प्रदूषण (Pollution)

- गंगोत्री से गंगासागर तक कोई ऐसा शहर नहीं है जो अपनी गंदगी को गंगा में न भेजता हो। फिर गंगा मे स्नान करने हरिद्वार जायेगे मन्नत मांगने **के लिए |**
- यह एक आवर्तनषील प्रक्रिया है प्रकृति में। इसे हम तोड़ते है तो समस्या खड़ी होती है |
- ऐसी चीज बना रहे है जो प्रकृति में चक्र में लौटती नहीं या दीर्घकालीन रूप में लौटती
- है।

2) क्षरण – (Resource Depletion)

- वस्तु जिस गति से प्रकृति में बन रही है, उससे अधिक गति से उपयोग कर रहें है।- **कोयला, पेड़ का समाप्त होना**
- Q उत्पादन अधिक – (Over Production): कपड़ा, गाड़ी, सुविधाओं का उत्पादन आज आवष्यकता से अधिक है?

3) परंपराए खत्म – (Loss of Species)

- बीज परम्परा का खत्म होना, जीव पेड़–पौधें का परम्परा खत्म होना।
- अगली पीढ़ी के लिए क्या छोड़ रहें है?
- सुविधा और बैंक बैलेंस उत्पादन का स्रोत नहीं है।

समस्याओं का कारण

1. **क्षरण : आवश्यकताएं नहीं पहचानना:** निरंतर सुख को सुविधाओं से पाने का प्रयास – लाभ उन्माद किसी भी हालत में। **एक तरफ आवश्यकताएं निरंतर है, दुसरे तरफ स्रोत सीमित** है: =**क्षरण होना ही है**
2. **प्रदूषण: प्राकृतिक संबंध नही पहचानना|** प्रदूषण होना ही है, परम्पराएं खत्म
3. **गरीबी: मानव संबंध नही देख पाना|** गरीबी वितरण की समस्या है, न की उत्पादन की

- **अत: हम** आवष्यकता से अधिक का उत्पादन करें लेकिन आवर्तनषीलता के अंदर = This is the larger framework we are in

---

• विनिमय–कोष

<u>विनिमय</u> – आवष्यकता पूर्ति के बाद उत्पादित वस्तुओं का आदान प्रदान।
- ➢ परस्पर पूरकता के अर्थ में |
- ➢ लाभ उन्माद के अर्थ में नहीं |

<u>कोष –</u>आवष्यकता पूर्ति के बाद उत्पादित वस्तुओं का संचय।
- ➢ परस्पर पूरकता के अर्थ में |
- ➢ लाभ उन्माद के अर्थ में नहीं |

#विनिमय के होने के लिए कोष का होना आवश्यक है

<u>वर्तमान स्थिति: समस्या</u>

- आज का उद्देष्य लाभ उन्माद इसलिए है क्योंकि **स्वयं** (जीवन) की आवष्यकता निरंतर है और हम उसे वस्तुओं से भरने का प्रयास करते रहतें है। **इसके साथ दुसरे के साथ संबंध दिखता नहीं, इसीलिए शोषण करने के लिए तत्पर बैठे रहते है|**

चर्चा: मूल्य और कीमत

- तुअर, आलू या किसी वस्तू का "**उपयोगिता** मूल्य" और "कीमत" कितना है |
  - ➢ **उपयोगिता** मूल्य – शरीर पोषण के अर्थ में शाष्वत रहता है |
  - ➢ कीमत – बदलते **रहती** है- **प्राकृतिक नहीं है, मानव की दी हुई प्रतिक है**
- गेहूँ का वास्तव में कोई कीमत नहीं है। उसको उगाने से लेकर आप तक पहुंचने और खाने लायक बनाने के लिए उसमें अनेक परिवारों का श्रम लगा है। **उनका** घर चलते रहे कीमत उसी की है।
- अभी कीमत लाभ दृष्टि से लगा**ई जाती** है।

- **अभ्यास #10:** कीमत तथा मूल्य

वस्तु	उपयोगिता मूल्य	कीमत
देसी टमाटर	शरीर पोषण	30
हाईब्रीड टमाटर	? घटा है	35?
गहने	?	???
शॉल	शरीर संरक्षण	300-1200
नानी का दिया शॉल	शरीर संरक्षण (भाव ?)	??
साधारण जीन्स	शरीर संरक्षण	300-700
ब्रांडेड जीन्स	शरीर संरक्षण (पहचान ?)	2000+
सोफा	शरीर संरक्षण	4000
लेदर का सोफा	शरीर संरक्षण (पहचान ?)	????
चप्पल	शरीर संरक्षण	100-250
सितारे की चप्पल	? कोई काम का नहीं !	?????
शराब	?	???
ग्लास	सुविधा	20
किसी राजा का गिलास	सुविधा (पहचान ?)	???
हवा, पानी	शरीर स्वास्थ्य	??? - 12 रूपए/लीटर!

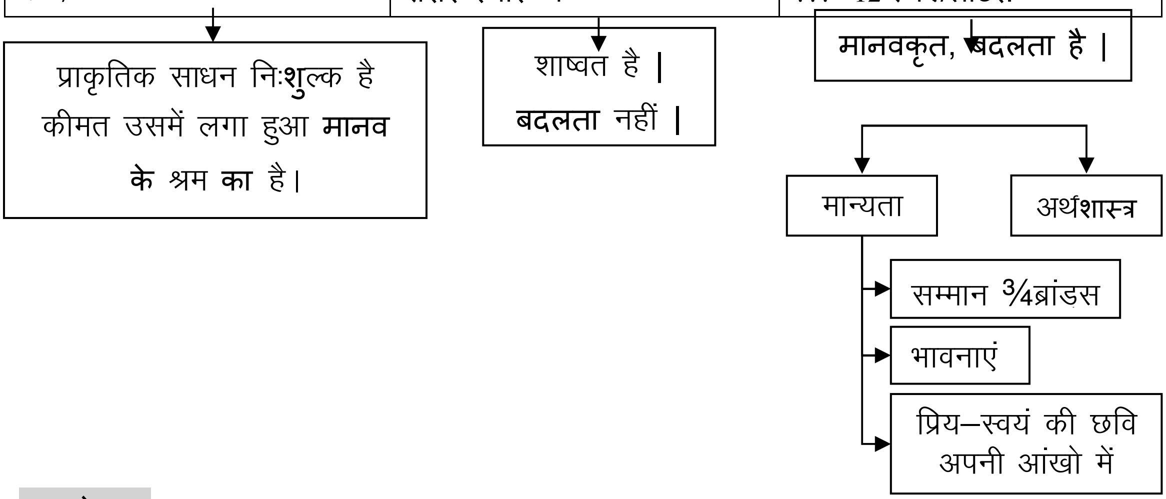

अवलोकन:

- प्रकृति में **मानव** के बने रहने के लिए जो चीजें है वह निःषुल्क है।
- इसमें कीमत मात्र उसके उत्पादन में सहयोगी होने का है, घर तक लाने के श्रम के लिए **है** ।
- हवा – निःषुल्क है।
- पानी – निःषुल्क था आज बिकने लगा है।
- आम के पेड़ पर जो आम है वह भी निषुल्क है।
- जिन चीजों पर आदमी का हाथ ज्यादा है, उनकी कीमत ज्यादा है।
- जिसमें मान्यता जुड़ गयी है, कीमत अधिक है, मूल्य कम। **क्रिकेट हीरो** का ऑटोग्राफ, या गेंहूँ **- महत्वपूर्ण क्या है**?

- जहॉ प्राकृतिक वस्तु पर आदमी ने हस्तक्षेप किया, **उसका मूल्य घटा है और कीमत बढती जा रही है** जैसे हाइब्रिड टमाटर।
- **तुप्ति किससे है? - वस्तु से अथवा कीमत से?**

- इस प्रकार हमारे कीमत बढ़ाने के प्रयास से मूल्य घटता जा रहा हैं - **हवा, पानी, अनाज, का मूल्य घटता जा रहा है, एवं कीमत बढती जा रही है! - इसे हम "इन्फ्लेशन" बोल रहे है |**

---

5. न्याय - सुरक्षा

<u>न्याय</u> – मानव का मानव से संबंध की पहचान, मूल्य निर्वाह, मूल्यांकन उभय तृप्ति।

<u>सुरक्षा</u> – न्याय का फलन सुरक्षा है |
मानव की साथ न्याय किया = *<u>मानव का सुरक्षा अपने आप हो गया</u>*
शेष प्रकृति का सदुपयोग किया = *<u>प्रकृति का सुरक्षा अपने आप हो गया</u>*

<u>(5.1) वर्तमान स्तिथि: समस्या</u>

<u>आज न्याय को क्या मानते है?</u>

- आज अन्याय होने पर न्याय की बात करते है। न्याय अपने में क्या चीज है, यह तय नहीं है।
  - <u>किसने पहले अन्याय किया, यह पता करो, उसे दण्डित करो</u> - **इसको न्याय मानते है**
  - न्याय के नाम पर परपीड़ा हो रहा है। **बदला लेते है |**
  - परपीड़ा का मान्य **ढांचा** है। उसे हम law framework कहते है।
  - मैने किसी का खून किया। मुझे पकड़ कर किसी और ने/सरकार ने मार दिया। इसे न्याय कहते है।
  - क्या दंड देने से समझ की कमी पूरी हो सकती है?
  - भय तो कम होता नहीं है, अगली बार पकड़े जाए बिना कैसे करें, इसको ढूँढना है।
  - आज कोर्ट में न्याय नहीं है। जज फैसला करता है। वह न्याय दे नहीं सकता। उसके घर में भी यही समस्या है– पत्नी के साथ, बच्चे के साथ, मॉ–बाप के साथ।
  - आज कोर्ट में दोनो पीड़ित व्यक्ति बात नहीं करते।
    - किसी तीसरे को पैसा देते है, बोलने का - जिसे हम वकील कहते है।
    - वह किसी चौथे व्यक्ति को मनवा लेता है; जिसे हम "न्यायाधीष" कहते है।
    - **न्याय क्या है, इनमे से किसी को पता नहीं |**
  - **दोनों ही पक्षों को तृप्ति होती नहीं |**

(5.2) न्याय की परिभाषा

- **मानव मानव संबंध में भागीदारी (संबंध) मूल्यों के रूप में दिखता हैं।**
  - जैसे हाईड्रोजन - हाईड्रोजन मिलते है, एक दूसरे को पहचान कर निष्चित निर्वाह करते है। निरंतर करते है।
  - वैसे ही **मानव** को दूसरे **मानव** से अपेक्षाएं निष्चित है। निरंतर है।
  - **मानव** हाईड्रोजन नहीं है चैतन्य इकाई है:– **मानव** का समझ के अनुसार
    - संबंध को पहचानना
    - मूल्यों का निर्वाह करना
    - मूल्यांकन करना
    - और उभयतृप्ति होना

    } **यही न्याय है।**

- **मूल्य अपनी ओर से व्यक्त करने के लिए होते है, दूसरे से लेने के लिए नहीं**

समझ सहित संबंध को पहचानकर सहज रूप में मूल्य बहते है	⟶ ✓ x ⟵	यह बाहर से पाने की वस्तु नहीं है क्योंकि भौतिक वस्तु नहीं है
आज हमारे पास भी नहीं है इसलिए फंसे रहते है।	⟶ ⟳ ⟵ यहॉं मामला लॉक हो जाता है	दूसरा दे नहीं पाता क्योंकि उसके पास होता नहीं

- **दो समझदार ¼समझ संपन्न½ व्यक्तियों के बीच ही न्याय पहचानने मे आता है।**

(5.3) सुरक्षा:

- **सुरक्षा कोई अलग कार्यक्रम नहीं है| जिनके साथ न्याय किया, वेह सुरक्षित हो ही गए| जिस भौतिक वस्तु का सदुपयोग किया, उसका सुरक्षा हो ही गया**
- **आज, प्रकृति के** संवंर्धन की बात कोई करता नहीं बनाए रखने की बात करते है, जबकि पषु भी उतना कर ही रहा है। **मानव** में संवंर्धन करने की अर्हता है।
- आपके पास जो उपलब्ध वस्तुएं है, क्या आप उसका सदुपयोग करते है?

---

2) मानव - मानव सबंध
(2.1)परिवार से ही (2.2)समाज होता है

<u>1) परिवार समाज का **building block** है।</u>

- परिवार में लोग परमाणु अंष की तरह साथ आते है। और परमाणु रूप में परिवार बनाते है। <u>यह **समाज की** सबसे छोटे स्तर की व्यवस्था है।</u>
- ऐसे ही अनेक परिवार रूपी परमाणु से मिलकर ही समाज बनता है।
- **मानव** में 18 संबंध मूल्य (**विश्वास, सम्मान..**) परिवार और समाज दोनो में एक समान है।

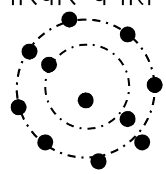

<u>2) संबंध: परिवार से विश्व परिवार (समाज) तक: - [अखंड समाज]</u>

- अतः परिवार में जो मानव संबंध है, और समाज में जिन लोगो के **साथ संबंध पहचाने** है, उनके साथ ही **न्याय** होगा।
- अतः न्याय मानव संबंध में ही होता है, परिवार से विष्व परिवार तक **इससे** ही **अखण्ड समाज संभव है।**

- **समानता के आधार पर संबंध: संबंध का आधार हम आज कैसे ढूढते है**:?

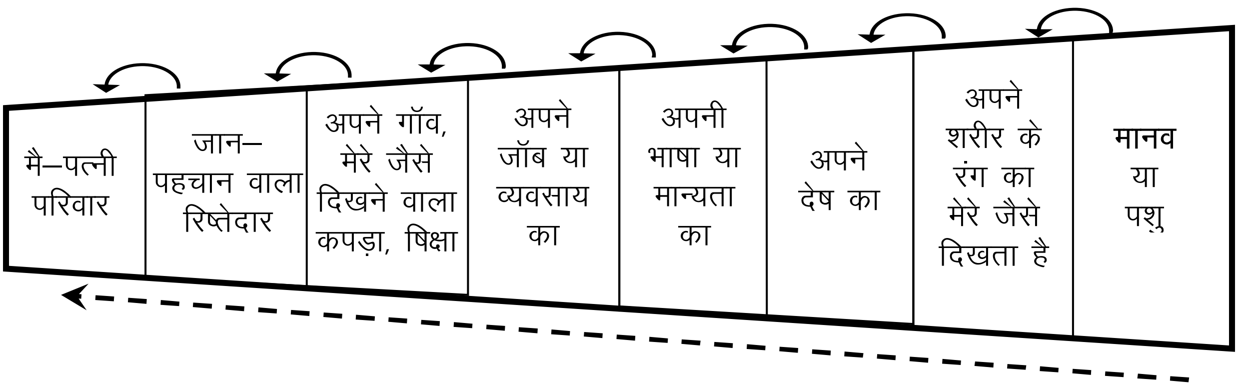

- संबंध को आज भी हम समानता के आधार पर ही ढूॅढते है। इसी से आष्वस्त हो पाते है। हमारे जीने का इतना ही फैलाव है।

- हर मानव के साथ संबंध दिखता है |
  - अगर मुझे पता चलता है कि दूसरे ग्रह में रहने वाला व्यक्ति मेरा अपमान कर रहा है तो मुझे स्वीकार नहीं होगा। अतः मेरा संबंध संपूर्ण **मानव** के साथ है।
  - वास्तविकता मुझ पर प्रतिबिंबित है। चाहे मैं कहीं भी जाउॅ। संबंध एक वास्तविकता है।

- उसको समझकर निर्वाह करना ही मेरे पास एक मात्र उपाय है।
- यही मेरे लिए सहज है, यही स्वीकार्य होता है।

मानव के ७ संबंध में से शेष ४ संबंध **समाज** के स्तर पर है:

	संबंध (**संबोधन**)		क्रिया - (व्यक्ति नहीं)
1	पति–पत्नी	यह ३ संबंध **परिवार** में होता है	परस्पर पूरक
2	माता–पिता, पुत्र–पुत्री		पोषण–संरक्षण, उपयोगिता–पूरकता
3	भाई–बहन		परस्पर सहयोग
4	मित्र–मित्र	यह ४ संबंध **समाज** के स्तर पर होता है	परस्पर सहयोग
5	गुरू–षिष्य		प्रमाणिक–जिज्ञासु
6	साथी–सहयोगी		दायित्व–कर्तव्य
7	**व्यवस्था**		**भागीदारी**

*** "गुरु-शिष्य" संबंध परिवार में भी हो सकता है ***

संबंध के आधार पर संबोधन:

- जहाँ परस्पर पूरकता है, उसे मित्र संबंध कहेंगे |
- जहाँ प्रामाणिकता और जिज्ञासा है, उसी को गुरु-शिष्य कहेंगे |
- जहाँ दायित्व-कर्तव्य है, उसी को साथी-सहयोगी कहेंगे |

आज की समस्या

उदाहरण:

a) दायित्व-कर्तव्य की स्वीकृति नहीं है, इसीलिए काम करने वालों के साथ परेशान होते है

b) समग्र व्यवस्था में भागीदारी की स्वीकृति नहीं है, इसीलिए शिकायत है "कोई कुछ कर्ता नहीं" |

c) परस्पर पूरकता की स्वीकृति नहीं है, इसीलिए मित्र थोड़े दिनों में विरोधी बन जाते है |

** नोट: मानव में समानता का आधार (हर एक के साथ संबंध देखने = अखंड समाज)|*

- *शरीर परम्परा एक - मानव जाति एक /*
- *जीवन समान: लक्ष्य, कार्यक्रम एक क्षमता एक*
- *मानव स्वभाव' एक :'मानव धर्म' एक*

स्व-निरीक्षण: हम स्वयं में निरीक्षण कर सकते है, की जितने लोगों के साथ हम जीते है, वे कौनसे संबंध में आते है? उसके अनुसार क्रिया हम कर पा रहे है या नहीं? आज हमारा संबंध पहचानने का आधार जीवन है, प्रयोजन है, या शरीर/मान्यता है?

3) परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था: - [सार्वभौम व्यवस्था]

● व्यवस्था के पांच आयाम एवं उनका क्रियान्वन: ३ आयाम परिवार में होता है|

5	न्याय–सुरक्षा	} परिवार में होता है।
4	विनिमय–कोश	
3	उत्पादन–कार्य	
2	स्वास्थ्य–संयंम	} समाज में होता है और उपरोक्त के लिए स्रोत है
1	शिक्षा–संस्कार	

*** 'शासन व्यवस्था' नहीं है | इसीलिए, क्योंकि शासन किसी को स्वीकार नहीं | व्यवस्था मात्र बाहर की चीज नहीं है, 'system' नहीं है| व्यवस्था मेरे अंदर की स्वीकृति है, समझ है| हमारे में, स्वयं में व्यवस्था यदि है, तो वह बाहर दिखेगा| अन्यथा, केवल कल्पना तक रह जाती है!**

अखंड समाज: (Undivided Society) - संबंध देख पाना

- विश्वास से शुरू करते प्रेम तक हम परिवार से विश्व परिवार तक प्रत्येक मानव के साथ संबंध को देख पाते है, तो अखण्ड समाज होता है |

सार्वभौम व्यवस्था: (Universal Order) - व्यवस्था में भागीदारी

- परिवार व्यवस्था में भागीदारी(३ आयाम) करते हुए समाज तक फैलते है, तो सार्वभौम व्यवस्था(५ आयाम) का स्रोत बनता है |

4) सामाजिक नियम

समाज में 3 ही प्रकार के अपराध हम कर सकते हैः–

	अपराध	सोचना	करना	
1 2 3	परधन परनारी / पुरूष परपीड़ा	यहाँ से जेल भेजते है।	यहाँ जेल जाते है!	जीव चेतना

समाज में न्यूनतम अपेक्षा = **सामाजिक नियम**

1 2 3	स्वधन (प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार) स्वनारी / पुरूष दया पूर्ण कार्य–व्यवहार	यही मानव चरित्र है	मानव चेतना

मानव-मानव सम्बन्ध में : सामाजिक नियम, न्याय समझना | यही सम्बन्ध का आधार है - परिवार से समाज, विश्व-परिवार तक

उदाहरण :– **समाचार पत्र में**: “कानपुर में भी ऑफिस जाने वाले लोग extra marital affairs करने का **साहस** कर रहे है”। (मतलब पहले पिछड़े थे अब विकसित हो गये हैं।)

<u>(4a) संपर्क:</u>

- जिन लोगों के साथ रोज उठना बैठना नहीं हो, उन लोगों के साथ: सामाजिक नियम न्यूनतम अपेक्षा है, यह निश्चित है | जब तक स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष एवं पूरकता पहचानकर जीते है (दया) - सामाजिक स्तर पर अन्याय नहीं है| हर मानव का दुसरे से यह न्यूनतम अपेक्षा है |

<u>(4b) संबंध:</u>

- जिनके साथ रोज उठना, बैठना हो - ‘सामाजिक नियम’ के अलावा <u>अपेक्षाएं पूर्व निश्चित</u> है - बच्चे का माँ से अपेक्षा, मित्र का मित्र से अपेक्षा, गुरु का शिष्य से अपेक्षा | ऐसे ‘संबंधों’ में ही न्याय - उभय तृप्ति पहचानने में आता है | संबंध को प्रयोजन के अर्थ में पहचाना, यदी उसमे दायित्व-कर्तव्य है, तो ‘व्यवहार’ है, अन्यथा ‘विहार’ मात्र है - रूचि के लिए बात-चीत है, व्यवहार होता नहीं|

* **<u>‘संबंध’</u>** हर मानव के साथ है| जीने के जगह देखें, तो कुछ व्यक्ति **<u>संपर्क</u>** में आते है, कुछ के साथ **<u>संबंधों</u>** में (७ संबंध) हम प्रतिदिन जीते है|

<u>5) कहाँ से शुरू करें?:- पांच आयामों में हमारी भागीदारी:</u>

- इन पॉचो आयामों में हम आज किसमें है? तय कर सकते है। उसमें रहते हुए अपने काम को कैसे जिम्मेदारी के साथ करना है यह भी तय कर सकते है, **<u>एवं समझ के लिए प्रयास, कदम उठा सकते है |</u>**
- इस पूरे बात को समझने के साथ साथ, परिवार में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार में जीने का डिजाईन बना सकते है

<u>6) इन आयामों से मानव लक्ष्य **कैसे पूरा होता है:**</u>

1	शिक्षा–संस्कार	समाधान	मानव लक्ष्य इस तरह पूरा होता है।
2	स्वास्थ्य–संयम	समृद्धि	
3	उत्पादन–कार्य	समृद्धि, सह अस्तित्व	
4	विनिमय–कोष	अभय	
5	न्याय–सुरक्षा	अभय, सह अस्तित्व	

समाज में व्यवस्था - सारांश *(समय होने से ही बताना है)*

आज की स्थिति

मानव लक्ष्य:

- कोई स्थायी लक्ष्य नहीं है| सुख, शांति, समृद्धि की कामना लिखित रूप में होते, सारा प्रयास सुविधा के लिए है, संघर्ष से शांति का प्रयास|
- यह इसलिए क्योंकि मूल में समझ नहीं होने के कारण, क्या चाहिए (लक्ष्य) अस्पष्ट है |

शिक्षा में

- मात्र सूचना, तर्क, गणितीय विधि पर जोर, प्रतिस्पर्धा के लिए - सुविधा के अर्थ |
- इसलिए, क्योंकि स्वयं को केवल शरीर माना है, सुविधा को लक्ष्य |

स्वास्थ्य में

- बीमार होने के बाद स्वास्थ्य की बात है, वो भी शरीर के साथ संघर्ष करने के दृष्टि से | भय फैला हुआ है |
- इसलिए, क्योंकि शरीर के प्रति जिम्मेदारी का भाव नहीं|

उत्पादन में

- कितना चाहिए का पता नहीं, क्या चाहिए का पता नहीं, कैसे करना, पर जोर है | इसमें प्रकृति का शोषण हो रहा है |
- इसलिए, क्योंकि आवश्यकताएं उपयोगिता के आधार पर निश्चित नहीं, प्रकृति नियम की समझ नहीं - प्रकृति को उपभोग के लिए माना है

विनिमय में

- सारा विनिमय कीमत पर आधारित, लाभोन्माद के लिए | बड़े कोषालयों की व्यवस्था की गयी है, परन्तु यह सभी तक पहुँचते नहीं |
- इसीलिए, क्योंकि मूल में दरिद्रता का भाव से लाभोन्माद है, एवं सामने वाले के साथ संबंध नहीं देख पाना

न्याय

- न्याय क्या है, पता नहीं| अन्याय होने पर बदला लेने को न्याय कह रहे है |
- इसलिए, क्योंकि मानव संबंध का वास्तविक स्वरुप समझे नहीं, स्वयं या जीवन की अनदेखी |
- प्रकृति के संवर्धन की बात नहीं, केवल संरक्षण की बात है, वह भी कर नहीं पा रहे है |
- इसलिए, क्योंकि प्रकृति के साथ संबंध को समझे नहीं |

शासन को व्यवस्था माने है

समाज में व्यवस्था - सारांश *(समय होने से ही बताना है)*

होना क्या चाहिए? - वास्तव में जैसा है

मानव लक्ष्य

- समाधान, समृद्धि, अभय, सहा-अस्तित्व है |
- समझ के साथ ही लक्ष्य निश्चित हो पाता है |

शिक्षा-संस्कार

- जीवन तृप्ति के लिए: समझ उपलब्ध कराना - 4 स्तर पर व्यवस्था की समझ |
- समृद्धि के लिए: सिखाना, हुनर, सूचना, इत्यादि |

स्वास्थ्-संयम

- जीवन-शरीर अंतर समझने से शरीर के प्रति जिम्मेदारी |
- स्वास्थ्य के लिए आहार, विहार, प्राकृतिक औषधि |

उत्पादन-कार्य

- आवश्यकता निश्चित होना - समझ से: क्या उत्पादन करना है का उत्तर |
- प्राकृतिक नियम अनुसार, आवर्तनशील विधि से: कैसे करना है का उत्तर |

विनिमय-कोष

- श्रम मूल्य के आधार पर, लाभोन्माद के लिए नहीं | समझ, संबंध से आएगा |

न्याय-सुरक्षा

- मानव संबंध समझने, स्वीकारने से न्याय संभव है |
- न्याय होने से सुरक्षा अपने आप होता है |

व्यवस्था

- परिवार ही समाज का आधार है - सबसे छोटी व्यवस्था |
- संबंध देख पाना: परिवार से विश्व परिवार तक = **अखंड समाज |**
- भागीदारी: परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था तक = **सार्वभौम व्यवस्था** |
- समाज में न्यूनतम सामाजिक नियम के साथ जीना |

3) मानव-प्रकृति संबंध: प्रकृति में व्यवस्था प्रारंभ

मानव-प्रकृति सम्बन्ध समझने, प्रकृति क्यों है, कैसे है, पहले इसे समझना होगा| तभी "प्रकृति के साथ सम्बन्ध" को समझ पायेंगे|

प्रकृति में व्यवस्था

मुख्य बिंदु - रखने का क्रम

- प्रकृति = परस्पर पूरकता - पूर्णता के अर्थ में कृति
- हर इकाई में रूप-गुण-स्वभाव-धर्म : आयामों पर विवरण
- **जोड़ना:** अध्ययन विधि में 'अस्तित्व सहज वास्तविकता'
- ४ अवस्था - टेबल, प्रत्येक बिंदु का विवरण
    - मानवीय स्वभाव ही स्वीकार होता है, जीव चेतना का स्वभाव नहीं |
    - आज यह चाहिए, परन्तु हमारे पास है नहीं |
- आज समस्या:
    - जीवों के स्वभाव अनुसार जीना, भाषा, मानव चेतना का |
    - स्वयं को वंश अनुषंगी मानना |
    - हमारी 'समझ' रूप-गुण तक सीमित है| स्वभाव-धर्म की अपेक्षा है |
- उपाय
    - सम्पूर्णता की समझ से पूरा होगा |
- मानव में समानता का आधार: शरीर परंपरा, स्वभाव, धर्म एक: 'जीवन' समान, लक्ष्य कार्यक्रम एक |
- **जोड़ना:**
    - जीव चेतना, मानव चेतना तालिका में: भ्रमित, रूप गुण तक सीमित, स्वयं को शरीर मानना |

3) मानव-प्रकृति सम्बन्ध: प्रकृति में व्यवस्था

(i) प्रकृति ¾ ईकाई समूह = **पूर्णता के अर्थ में कृति**

- परस्पर पूरकता ¾ परस्परता – पूरकता

**बाकी 3 अवस्थाएं एक दुसरे के लिए पूरक है, मानव के लिए भी| मानव इसमें किसी एक के लिए भी पूरक नहीं हो पा रहा है*

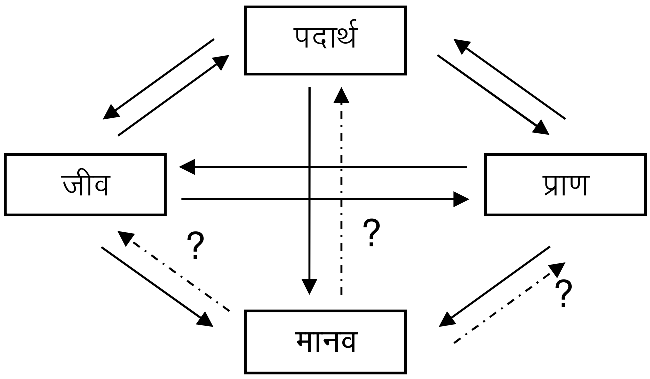

(ii)हर **इकाई** के चार आयाम है - **रूप, गुण, स्वभाव, धर्म |**

- उदाहरण: पानी, नीम का पेड़, गाय, मानव(हम स्वयं) में इसे बताना

रूप	गुण	स्वभाव	धर्म
कैसे दिखता है	परस्परता में प्रभाव	प्रयोजन (**क्यों है?**)	**व्यवस्था, (कैसे है?)**
लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई है		लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई नहीं	
बदलता है, सापेक्ष है।		बदलता नहीं, शाष्वत है:- निरंतर	
4½ क्रिया में इतना ही समझ आता है		5½ क्रिया में ही समझ में आता है	

- **प्रत्येक इकाई में** रूप, गुण, स्वभाव, धर्म अविभाज्य है।

 # घर में पढ़ने के लिए नोट:

* रूप = आकार, आयतन, घन |

* गुण = परस्परता में प्रभाव = गति |

* स्वभाव = **क्यों है?** का उत्तर = प्रयोजन = भागीदारी = अर्थ (अस्तित्व में किस अर्थ में है) |

* धर्म = **कैसे है?** का उत्तर = इकाई का व्यवस्था समझना = धारणा (जिससे जिसको अलग किया न जा सके)

* इकाई का रूप बदलता है |

* इकाई का गुण परस्परता के अनुसार बदलता है |

* इकाई का स्वभाव, धर्म कभी बदलता नहीं - अवस्था के स्तर पर एक ही है = यथावत है - परस्परता चाहे कुछ भी हो|

(iii)जोड़े - अध्ययन विधि में: *'अस्तित्व सहज वास्तिविकता'* - *जो भी अस्तित्व, प्रकृति के बारे में कहा जा रहा है, उसे <u>अपने अधिकार पर</u> अस्तित्व में सीधे जाने*

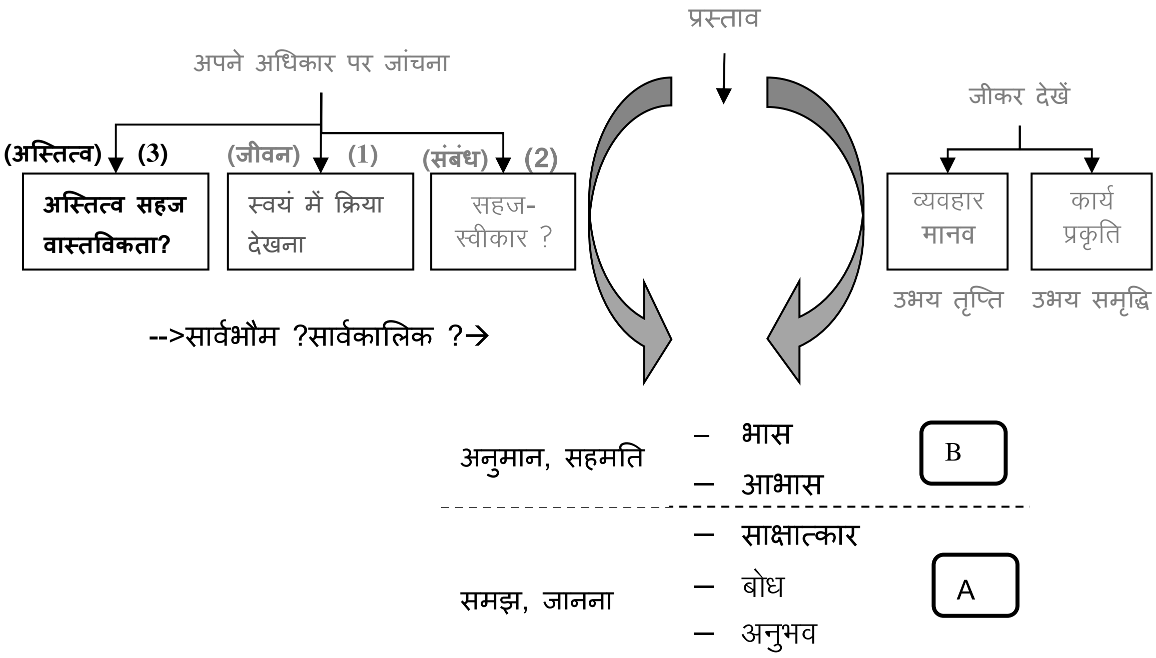

<u>* अत: जांचने के ३ आयाम है:</u>

- (1):जो भी **<u>जीवन</u>** के बारे जा कहा रहा है: **<u>स्वयं में सीधे देखें</u>** |
- (2):जो भी **<u>संबंध</u>** के बारे कहा जा रहा है: वह हमारे लिए **<u>सहज-स्वीकार</u>** है? सार्वभौम?
- (3):जो भी **<u>अस्तित्व</u>** के बारे कहा जा रहा है: अस्तित्व सहज **<u>वास्तविकता</u>** के रूप में स्वयं पहचाने |

इन सब में:

1. सार्वभौम?
2. सार्वकालिक?
3. जीने में आये?
4. समझा सके

इन ४ चीजों का का जाँचना है |

(iv) ४ अवस्था: तालिका

<table>
<tr><th colspan="2">अवस्था</th><th>वस्तु</th><th>क्रिया</th><th>रूप, गुण</th><th>स्वभाव</th><th>धर्म</th><th>अनुषंगीयता</th><th>क्रिया का प्रकार</th></tr>
<tr><td colspan="2">पदार्थ</td><td>मिट्टी, हवा, पानी</td><td>रचना – विरचना</td><td></td><td>संगठन–विघटन</td><td>अस्तित्व</td><td>परिणाम</td><td>पहचानना, निर्वाह करना</td></tr>
<tr><td colspan="2">प्राण</td><td>पेड़–पौधे जीव शरीर, मानव शरीर</td><td>(+) श्वसन–प्रष्वसन</td><td></td><td>“+” सारक–मारक</td><td>“+” पुष्टि</td><td>बीज</td><td>पहचानना, निर्वाह करना</td></tr>
<tr><td colspan="2">जीव</td><td>शरीर+ जीवन(स्वयं) / जीवन</td><td>“+” शरीर में; आस्वादन–चयन - जीवन में</td><td></td><td>“+” शरीर में; और क्रूर–अक्रूर - जीवन(स्वयं) /जीवन में</td><td>“+” शरीर में; और जीने की आषा जीवन(स्वयं) / जीवन में</td><td>वंष</td><td>मानना, पहचानना निर्वाह करना</td></tr>
<tr><td rowspan="2">ज्ञान</td><td>भ्रमित</td><td rowspan="2">शरीर+ जीवन(स्वयं) / जीवन</td><td>“+” शरीर में; चयन–आस्वादन तुलन–विष्लेषण चित्रण (4½ क्रियाएँ) -जीवन में</td><td></td><td>+ शरीर में; और दीनता हीनता क्रूरता: जीवन(स्वयं) /जीवन में</td><td rowspan="2">+ शरीर में; और <u>सुख पूर्वक</u> जीने की आषा जीवन(स्वयं) /जीवन में</td><td>संस्कार ¼मान्यता½</td><td>मानना, पहचानना निर्वाह करना</td></tr>
<tr><td>जागृत</td><td>“+” शरीर में; + चिन्तन बोध–संकल्प अनुभव–प्रमाण (10 क्रियाएँ) -जीवन में</td><td></td><td>+ शरीर में; और धीरता, वीरता, उदारता: जीवन(स्वयं) /जीवन में</td><td>संस्कार (समझ)</td><td><u>जानना,</u> मानना, पहचानना निर्वाह करना</td></tr>
</table>

*** अनुषंगी:** अनु षंगी = जिसके अनुसार चलते है
(पीछे) *(साथ चलना)*

जैसे: परिणाम के अनुसार चलना; बीज के अनुसार चलना; वंश के अनुसार और संस्कार (समझ) के अनुसार चलना

 # नोट: प्रकृति में चारों अवस्था को समझ रहे है, तो उसमे मानव (हम, स्वयं) भी समा गए| अभी तक इस शिविर में जो बात हुयी है, परिवार और समाज को लेकर, वह मानव के स्वभाव औए धर्म से सम्बंधित है |

<u>जीव चेतना में जीते हुए मानव का स्वभाव **(भ्रमित मानव)**</u>

- दीनता – मै अपनी आवष्यकता को **पूरा** नहीं कर सकता, यह भाव
  - *<u>परिभाषा:</u> अपने दुःख को दूसरों से दूर कराने हेतु हो आश्रय प्रवृत्ति है, उसकी दीनता संज्ञा है| दीनता अभावजन्य या अक्षम्ताजन्य दो प्रकार की होती है|*
- हीनता – मै अपनी आवष्यकता को पूरा नही कर सकता इसलिए छल का प्रयोग करता हूँ।
  - *<u>परिभाषा:</u> विश्वासघात ही हीनता है| जिससे जिस क्रिया की अपेक्षा है, उसके विपरीत आचरण किया जाना ही विश्वासघात है| छल, कपट, दंभ, पाखंड |*
- क्रूरता – मै अपनी आवष्यकता को पूरी नहीं कर सकता इसलिए बल का प्रयोग करता हूँ।
  - *<u>परिभाषा:</u> अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बल पूर्वक दूसरों के अस्तित्व को मिटाने का प्रयास | परधन, परनारी/परपुरुष, परपीड़ा*

<u>मानव चेतना में जीते हुए मानव का स्वभाव (**जागृत मानव**)</u>

- धीरता –
  - *न्याय पूर्वक जीने में द्दढ़ता एवं निष्ठा*
- वीरता – ---- “ ---- + दूसरे को भी आष्वस्त करने के प्रति तत्परता
  - *<u>परिभाषा:</u> दूसरों को न्याय उपलब्ध कराने में अपनी शक्तियों का नियोजन*
- उदारता – ---- “ ---- + अपने तन, मन, धन को लगाने के प्रति तत्परता।
  - *<u>परिभाषा:</u> प्राप्त सुख सुविधाओं का स्व-प्रसन्नता पूर्वक दूसरों के लिए सदुपयोग करना*

आज समस्या

(i) स्वभाव

- जीवो के सदृष्य जीव चेतना में जीते हैं, **भाषा** मानव चेतना की है। दीनता, हीनता, **क्रूरता** करते है, और धीरता, वीरता, उदारता नाम देते है। मानव अपने स्वभाव धर्म के साथ नहीं जी रहा है - इसलिए **यह उसे स्वयं** अस्वीकार है। मानव को **मानवीय (मानव चेतना) का** स्वभाव, धर्म ही सहज है, स्वीकार है।

Q

- **आप दीनता, हीनता, क्रूरता पूर्वक जीना चाहते है, या धीरता, वीरता, उदारता पूर्वक? क्या सहज-स्वीकार ?**
- शेर 60 लाख लोगो को मार नहीं सकता लेकिन **हमने सुना** हिटलर ने मारा। बिना ज्ञान का आदमी शेर से बदतर है।
- प्रोजेक्ट टाईगर में पैसा डुबा दें, जब तक आदमी में **क्रूरता** ठीक नहीं होगी, टाईगर बचेंगे नहीं।
- उदाहरण: जिस अवस्था के साथ जो करना है करते नहीं -जैसे पति के साथ झगड़ा कर उसे भगा दिया उसके बदले कुत्ते को घर में रख लिया। मानव के साथ **संबंध समझ में** नहीं **आया**, कुत्ते के साथ **संबंध बनाने** का प्रयास कर रहें हैं !

(ii) धर्म

- धर्म केवल मानव का नहीं है। हर इकाई/अवस्था **का धर्म होता** है।
- धर्म ओढने–उतारने की चीज़ नहीं है। धर्म यथावत बना रहता है।

(iii) अनुषंगीयता

- बच्चा गलती करे तो समझ लेते है। आदमी बड़ा होने के बाद गलती करे तो?
  - शरीर बड़ा हो गया है मै के स्तर पर हम वहीं है। क्योंकि उसे संस्कार मिले नहीं |
- जीव वंषानुषंगी है, आदमी **संस्कारानुशंगी है** | अपने आप को वंषानुषंगी मान लेते है, तो संबंध में अपना पराया की दीवाल खड़ी हो जाती है। हम आज जीवो जैसे जीते है।
- **जीवों में आहार-विहार-व्यवहार = वंश-केंद्रित है**
- **मानव में आहार-विहार-व्यवहार = समझदारी-केंद्रित है**

(iv) मानव में जानने - ज्ञान की आवश्यकता

- मानव में **जानने** की आवश्यकता है, जान सकता है| समझ या ज्ञान, मानव की मूलभूत आवश्यकता है| हम केवल मानने से तृप्त नहीं है, जानना चाहते है| इसी से तृप्त होते है
- आज जानना हुआ नहीं, इसीलिए हमारे पास अपना कोई, स्थायी चीज नहीं है| उधार बाजी में समय काट रहे है |

(v) जीवों को देखकर मानव पर निष्कर्ष

- जीने के लिए संघर्ष (struggle for survival) – जीवों के लिए मान्य हो **सकता** है, यह उनका स्वभाव है। यह मानव का स्वभाव नहीं है, इसलिए उसे स्वीकार होता नहीं।
- हम जीवों को देखकर मानव के बारे में निष्कर्ष निकालते है। जैसे struggle for survival से केवल सुविधा संग्रह हो सकता है। जबकि हमारी आवष्यकता सुविधा से अधिक है।
- **जीवन(स्वयं) या जीवन** में जानने की आवष्यकता पूरी हो, तो शरीर की आवष्यकता आसानी से पूरी हो सकती है– इतने सारे जीव जी रहे है वो भी बिना किसी **फैक्टरी** के।
- सबसे बड़ा watershed management पेड़ करते है। **इस धरती पर क्या करना है, इसका पता नहीं, इसको निपटा दिया,** अब हम लोग चांद पर **घर बसाने का सोच रहे है! - और इसे विकास मान रहे है!**

(vi) मानव में समानता का आधार

(हर एक के साथ संबंध देखने = अखंड समाज)

- **मानव जाति एक - शरीर के आधार पर**
  - *शरीर परम्परा एक, **शरीर रचना एक ही है***
- **मानव धर्म एक - जीवन, समझ, समाधान के आधार पर**
  - ***जीवन समान: लक्ष्य, कार्यक्रम, क्षमता एक |***
    - ***मानव** स्वभाव एक- **धीरता, वीरता, उदारता |***
    - ***मानव** धर्म एक- **सुख, समाधान |***

** प्राकृतिक नियम: शेष प्रकृति में व्यवस्था समझ में आता है, तो हमारा उसके साथ संबंध 'प्राकृतिक नियम' के रूप में समझ में आता है|*

(vii) आख़री 3 बिंदु जोड़ना:

1. जीव चेतना	2. मानव चेतना
घटना - संवेदना	नियम - समझ
प्रतिक्रिया	जिम्मेदारी
चंचलता अषिक्षित	आराम, आष्वस्ति शिक्षित
4.5 क्रिया	10 क्रिया
प्रतिस्पर्धा	संबंध, पूरकता
सापेक्ष विश्वास	निरपेक्ष, स्वयं में विश्वास
भ्रमित	**जागृत**
रूप-गुण	**'+' न्याय(स्वभाव), धर्म, सत्य**
स्वयं = शरीर	**जीवन(स्वयं) - जीवन और शरीर में अंतर की समझ**

<u>घर में पढ़ने के लिए:</u>

- जीवन(स्वयं) अथवा जीवन के १० क्रियाओं में से ४.५ / ५ क्रियाओं में (Block B2) केवल रूप एवं आंशिक गुण तक समझ में आता हैं| स्वभाव-धर्म आयामों का मात्र भास-आभास होता है|
- स्वभाव, धर्म, सत्य ऊपर के ५ क्रिया (Block B1) में ही समझ में आते हैं|
- इसीलिए आज मानव एवं प्रकृति के अध्ययन एवं पहचान होने में चूक हैं, क्योंकी हम इकाई (चारों अवस्था के) केवल रूप-गुण आयामों को देख रहे हैं, स्वभाव-धर्म आयामों को अनदेखी किये हैं| अत: आज हमारा 'समझ' आधूर है|
- जीवन(स्वयं) अथवा 'जीवन' के चिंतन-बोध-अनुभव (Block B1) क्रियाओं में ही स्वभाव-धर्म-सत्य आयामों का समझ ज्ञान, होता हैं | Block B2 के क्रियाओं में इन आयामों का मात्र भाषा-भास, आभास, कल्पना रूप में स्पष्ट होता हैं, ज्ञान हुआ नहीं रहता है|
- इस विधी से, समझने की वस्तु (वास्तविकताएं) निश्चित हैं, जो निम्नलिखित तालिका में दिया है:

समझने के आयाम ->	स्वभाव	धर्म	सत्य
दुसरे भाषा में →	न्याय (मानवीय स्वभाव) ↓	मानव धर्म ↓	सत्य ↓
जीवन (स्वयं-मैं)	मानव संबंध (परिवार, समाज)	मानव संबंध, प्रकृति संबंध, प्रकृति में व्यवस्था	सह-अस्तित्व

<---- समझने की वस्तु -->

प्रकृति में व्यवस्था - सारांश *(समय होने पर ही बताना है)*

- प्रकृति = इकाई समूह = ४ अवस्था में है | इनमे परस्पर पूरकता है
- प्रत्येक इकाई के ४ आयाम है: रूप, गुण, स्वभाव, धर्म |
    - रूप और गुण के आयाम में लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई होता है| यह परस्परता में बदलते है |
    - स्वभाव, धर्म यथावत बने रहते है| इन आयाम में कोई लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई नहीं होता है|
    - रूप और गुण <u>इकाई के स्तर</u> पर परिवर्तन होते रहता है, परस्परता अनुसार: जैसे पत्थर का रूप, गुण बदलता है
    - स्वभाव, धर्म <u>अवस्था के स्तर</u> पर एक ही होता है (किसी भी अवस्था के सभी इकाइयों में स्वभाव-धर्म एक ही होगा, भले ही उनके रूप, गुण में अंतर हो | उदाहरण: पानी और कोयले का रूप और गुण भिन्न है, परन्तु स्वभाव, धर्म एक ही है - जो पदार्थ अवस्था का है |
    - प्रत्येक इकाई में रूप-गुण-स्वभाव-धर्म अविभाज्य है| कोई भी इकाई(वस्तु) को लें, यह चारों आयाम मिलेंगे| इसे मानव ही समझता है| अत: इकाई या वास्तविकता को सम्पूर्णता में समझने के लिए चारों अवस्था के रूप, गुण, स्वभाव, धर्म को समझना पड़ेगा |
- आज हमारी समझ केवल रूप, गुण तक सीमित है |
- मानव के अलावा बाकी सारी अवस्थायें अपने स्वभाव, धर्म अनुसार है |
- मानव को ही अपने स्वभाव-धर्म के अनुसार होना है, जीना है | इसी से सुख है | यही समाधान है | समझ या ज्ञान पूरा होने से ही समाधान संभव है |
- जीव चेतना में जीता हुआ मानव स्वयं को शरीर मानते हुए जीता है, अमानवीय स्वभाव - दीनता, हीनता, क्रूरता उसे स्वीकार होता नहीं, किसी को स्वीकार नहीं | यह भ्रमित मानव है|
- अध्ययन पूर्वक हम मानवीय स्वभाव, धर्म को जान पाते है, उसके अनुसार जी पाते है |
- सम्पूर्ण अस्तित्व में करने के लिए शेष काम इतना ही है = मानव का जागृत होना, स्वयं का जागृत होना|

4) अस्तित्व में व्यवस्था

अस्तित्व =अस्ति + त्व → होना + सार (व्यवस्था) → व्यवस्था (जो है)

Existence = Exist + Essence → To be + Harmony → To be in harmony

अस्तित्व में दो ही प्रकार की वास्तविकताएं है।

इकाई	खाली स्थान **(Space)** • यह नहीं है ऐसा नहीं है। **सारे ग्रह-गोल इसी में है** |
सीमित	व्यापक • परमाणु के अंदर, दो परमाणु के बीच, पिंड के बीच, शरीर में, आपके– हमारे बीच, यहॉ और अमेरिका के बीच...धरती के बाहर | • धरती कहॉ घूम रही है?
क्रियाषील	क्रियाषून्य • वास्तविकता **है**, परंतु क्रिया नहीं **है**
ऊर्जा सम्पन्न	• साम्य **ऊर्जा** पारगामी (आर-पार) - जहाँ इकाई है, वहाँ और जहाँ इकाई नहीं भी है • परमाणु इसमें है और **ऊर्जित** है। • हम बाहर से परमाणु को **ऊर्जा** नहीं दे रहे है। • उदाहरण ➢ शरीर अगर बीमार है, क्या हमारा सोचना कम होता है? ➢ आज **ऊर्जा के अंतरण की बात करते है | ऊर्जा अपने में क्या है इसकी नहीं |** ➢ **पेड़ में ऊर्जा है क्या? सूखी लकड़ी?**
नियंत्रित	नियंत्रण उपलब्ध। **(नियंत्रण करता नहीं)**
परस्पर पूरक ’	पारदर्षी • यह वस्तु न हो तो आप **हम** एक दूसरे को पहचान नहीं सकते | • **एक वस्तु दुसरे को पहचानने का आधार |**
त्व’ सहित व्यवस्था, **समग्र** व्यवस्था में **भागीदार**	व्यवस्था उपलब्ध (व्यवस्थित करता नहीं)
	• **यह वस्तु के रूप में समझ आ गया,** अब हम इसका <u>नामकरण</u> कर सकते हैं। **बृहत है, इसीलिए इसे ‘<u>ब्रह्म</u>’ कहा | एक सा व्याप्त है, इसिलिये ‘निराकार’ कहा |** • प्रकृति इसके अधीन है, **इसीलिए ‘<u>सत्ता</u>’ कहा| क्रियाशून्य है, इसीलिए <u>शून्य</u> कहा |**
ऐष्वर्य	**सम्पुर्ण** ऐष्वर्य **इसी में है, इसीलिए ‘<u>ईष्वर</u>’ कहा |**
	• रोकथाम नहीं है। दबाव नहीं है। **निर्माता** नहीं है। **नियंता** नहीं है। **न्यायकारी नहीं है|**

दृष्टा नहीं है, कर्ता नहीं है, भोक्ता नहीं है

इकाई व्यापक में कैसे है?

अस्तित्व = सत्ता में संपृक्त प्रकृति

ऊर्जा संपन्न **है** → *इसीलिए* "भीगा" कहा

नियंत्रित **है** → "घिरा" कहा

क्रियाषील है → "डूबा" कहा

* सम्पृक्त होना = भीगा, घिरा, डूबा होना

कल्पना हेतु उदाहरण:

- जैसे गुलाब जामुन चाशनी में है |

घर में पढ़ने के लिए नोट:

इस उदाहरण में चाशनी भी इकाई है | परन्तु, "शून्य", या "व्यापक वस्तु" इकाई नहीं है, यह क्रिया-शून्य है| यह इकाई नहीं होते हुए भी एक वास्तविकता है, इसीलिए "वस्तु" है| क्रिया जिस जगह में है, वह स्वयं व्यापक वस्तु ही है| अतः इकाई जहाँ है, वहाँ भी व्यापक वस्तु है, इकाई जहाँ नहीं है, वहाँ भी व्यापक वस्तु है| अतः अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व है: व्यापक में संपृक्त, अथवा शून्य में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व है, यही सह-अस्तित्व है | व्यापक वस्तु के होते ही हर इकाई उर्जित है, नियंत्रित है, क्रियाषील है| व्यापक वस्तु पारदर्शी है, इसीलिए हर इकाई दुसरे इकाई को पहचान पाती है, निर्वाह कर पाती है| इस अर्थ में, मानव (ज्ञान अवस्था) का अस्तित्व में प्रत्येक इकाई से संबंध है| हम सब, इस अर्थ में 'जुड़े' है - क्योंकि आप, मैं, हम सभी, इसी व्यापक वस्तु में 'संपृक्त' है, भीगे है, घिरे है, डूबे है|

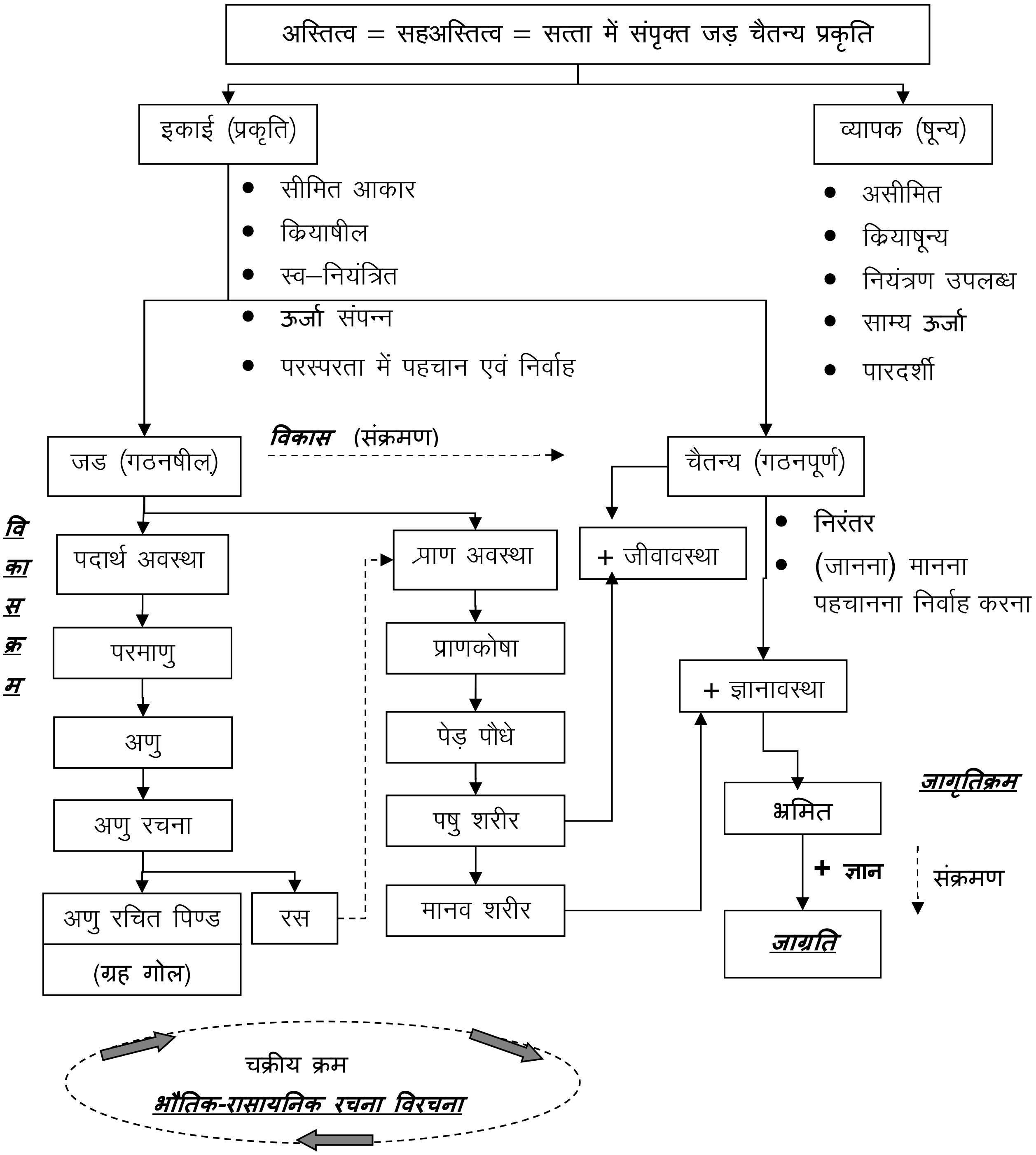

<u>सच्चाई वास्तविकता को समझने के लिए '५ सूत्र' मिलते है:-</u>

सहअस्तित्व, विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति

[उपरोक्त सूत्र में "जीवन, न्याय, धर्म, सत्य" समाया है]

(i) व्यवस्था

- अतः अस्तित्व स्वयं सह–अस्तित्व है
- इसमें संघर्ष नहीं है।, व्यवस्था है, **परस्पर पूरकता है|**
- यह व्यवस्था कोई 'गलती' नहीं है।
- **यह** निष्चित नियम पूर्वक है।
- इन नियमों को मानव ने बनाया नहीं है| अस्तित्व के नियमों पर हम अपना कोई सर्जनात्मकता लगा नहीं सकते | अस्तित्व को हमने बनाया नहीं है| हम अस्तित्व **में है| अस्तित्व में बने है|**
- इन नियमों को जैसे है, वैसे ही समझना होगा |

चर्चा: आज मानव ने शासन को व्यवस्था माना है| क्या शासन व्यवस्था है?

क्या आपको शासन स्वीकार है? कोई आप पर शासन करें, क्या आपको स्वीकार है?

- शासन व्यवस्था होता नहीं| शासन किसी को भी स्वीकार नहीं है|
- अस्तित्व में कोई शासन नहीं है| प्रत्येक इकाई स्वयं में व्यवस्था है, समग्र व्यवस्था में भागीदार है|
- मानव भी ऐसा होना चाहता है| अस्तित्व में कोई शासन नहीं है - इसीलिए शासन किसी भी मानव को सहज नहीं है, स्वीकार होता नहीं है| आप भी अपने में ही व्यवस्थित होना चाहते है| इसीलिए आज तक मानव समाज मे 'शासन' व्यवस्था का आधार बन नहीं पाया| हम व्यवस्था चाहते रहे, अस्तित्व को समझे नहीं, स्वयं को समझे नहीं, इसीलिए व्यवस्था में जी नहीं पाए| स्वयं को समझे नहीं, अस्तित्व को समझे नहीं|

(ii) आज की स्थिति

- हम आज विकास के नाम पर पदार्थ पर केंद्रित है। और प्राण को बढ़ने से रोकने का प्रयास कर रहें है। (जंगल का उदाहरण)
- आज विकास/growth का मतलब संग्रह है। पदार्थ का संग्रह, जबकि growth प्राणावस्था में ही संभव है। वही उसका धर्म है।
  - उदाहरण– केले के झाड़ हमारे बगीचे में एक लगाने से 50 हो जाते है।
- हमारा सारा विज्ञान, तकनीकी (science & technology) इन्द्रियों के लिए अनुकूल चीजों को बनाने में लगा है| गाय को धूप लगती है, तो गाय छाँव में जाकर बैठती है| आदमी a/c में जाकर बैठता है| दोनों ही चयन-आस्वादन में लगे है...ज्यादा अंतर नहीं है, हमारे में और गाय में! आप थोडा विकसित हो गए ! - इसे आप स्वयं जाँच कर देखें |

- "क्या करना" है, इसका विज्ञान को पता नहीं| "कैसे करने" में लगे है, और तेज़ी से करने में लगे है! <u>लक्ष्य</u> की कोई स्पष्टता नहीं है| लक्ष्य "**<u>समझ</u>**" से ही आएगा...चाहे जितना बनाएँ, तेज़ी से बनाये, उससे 'समझ' आएगा नहीं !

<u>(iii) होना क्या चाहिए?</u>

- अस्तित्व में growth हो रहा है – हमको नहीं भी चाहिए तो भी।
- आप कौन सी प्रगति (development) चाहते है- **रेखीय या आवर्तनशील?** reversible or irreversible ?
- कहॉ फोकस करना चाहिए ?
- अगर पदार्थ और प्राण में है चक्र की तरह घूम–फिर के वहीं आ जाते है।
- प्रगति <u>मानव</u> में होना है| **मानव में<u>, जीवन(स्वयं)</u>** <u>या जीवन में होना है।</u>
- मानव के अलावा सभी ईकाईयॉ अपनी-अपनी स्वभाव गति में है। वे **अपने में एक** व्यवस्था है, समग्र व्यवस्था में भागीदार हैं।
- मानव भी **स्व-नियंत्रित होना चाहता है, एवं अपने से बड़े व्यवस्था में भागीदार होना चाहते है**: - ज्ञान पूर्वक होता है।
- मानव की स्वाभाव गति ही उसे सहज है, यही उसे स्वीकार है।
- संपूर्ण अस्तित्व में करने के लिए काम इतना ही है।
- बाकी ईकाईयॉ अपने निष्चित आचरण में है **ही**। केवल मानव को निष्चित आचरण में होना **शेष** है।
- ज्ञान पूर्वक होता है।
- **इसीलिए**, इसे 'जागृति' कहा। कुछ नया **पैदा नहीं कर रहे** है। जो **पहले से अस्तित्व में था ही**, ज्ञान **पूर्वक** उसके प्रति 'जागृत' होना है। **हमारे में पहले से जो अपेक्षा बनी थी, उसकी पूर्ति= जगना, जागृत होना|**
- <u>संपूर्ण अस्तित्व में शेष काम **इतना ही है** – मानव का जागृत होना।</u>

<u>(iv) मानव का अस्तित्व में महत्व</u>

- ➢ उसका प्रयोजन है:- **चारों अवस्था के साथ संबंध को पहचानकर जी पाना |**
- ➢ यही उसकी उपयोगिता है। यही उसका अर्थ है। मौलिकता है।

(v) अभ्यास: ऊपर बने चित्र में विषयों का चिन्हीकरण:

- Physics
- Chemistry
- Biology
- Medicine
- Engineering, Technology
- Psychology
- Philosophy
- History
- Social Sciences/ Sociology
- Arts
- Commerce

*** अस्तित्व में ५ सूत्र:**

ऊपर दिए चित्र में ५ सूत्रों को देख सकते है:

- सहअस्तित्व, विकासक्रम, विकास, जाग्रतिक्रम, जाग्रति |
- सम्पुर्ण अस्तित्व इतने में सिमट जाता है| यही समझने की वस्तु है|
- इतने को मानव ने बनाया नहीं है| यह नियम-पूर्वक है|
- हमेशा ऐसा ही था, आज भी ऐसा ही है, आगे भी ऐसा ही होता रहेगा| यही 'नित्य वर्तमान' है|
- इन नियमों को मानव ने बनाया नहीं है| मानव अस्तित्व में अविभाज्य है| इन नियमों को मानव समझ सकता है, समझकर नियम पूर्वक जी सकता है|

शिविर सारांश

निष्कर्ष

अस्तित्व **स्वयं** सह–अस्तित्व है।	
• हर इकाई व्यापक-सत्ता में संपृक्त है |	सह अस्तित्व
• हर इकाई का दूसरी इकाई से संबंध है |	प्रकृति में व्यवस्था
• **जीवन(स्वयं) का** हर इकाई के साथ संबंध है |	समाज में व्यवस्था
• **' जीवन(स्वयं)' के आधार पर** संबंध है|	परिवार में व्यवस्था
• '**जीवन**' का शरीर से संबंध है, **शरीर के अंग-अव्ययों में अन्तर्सम्बन्ध है** |	शरीर में व्यवस्था
• 'जीवन' की **क्रियाओं में** संबंध है |	'**जीवन**' में व्यवस्था

अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व **है,** = व्यवस्था **में** है।

- मानव व्यवस्था में नही = समस्या का कारण।
- मानव की चाहना = निरंतर सुख। कार्यक्रम = व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना।
- **आज** सारा ध्यान = सुविधा पर **है,** संबंध, समझ छूटा है।
- मानव = **जीवन(स्वयं)** /जीवन. शरीर **के संयुक्त रूप में है** \|
  - ➢ दोनो की आवष्यकता पूरा होना है। **दोनों के लिए अलग कार्यक्रम है\|**
- मै/जीवन **में समस्याओं से मुक्ति के लिए** - ज्ञान की आवष्यकता \|
- 4.5 क्रिया में जीना = जीव चेतना (षोषण, चंचलता, घटना पूर्वक जीना, प्रतिस्पर्धा**...**) \|
- 10 क्रिया में जीना = मानव चेतना (**पोषण,** आराम, नियम पूर्वक जीना, **पूरकता..**) \|
- परिवार = मानव संबंध =षाष्वत 9 मूल्य पूरा कर सकते है। ३ **संबंध परिवार में** \|
- समाज = मानव लक्ष्य दोहराया, 5 आयामी कार्यक्रम**, परिवार से समाज: ४ मानव संबंध समाज योजना में के ३ आयाम परिवार में: अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था \|**
- प्रकृति में 4 अवस्था - रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सम्पन्न।
  - ➢ मानव = संस्कारानुषंगी = अपने स्वभाव में नहीं जी रहा है। ज्ञान पूर्वक जी पाता है।

- अस्तित्व = व्यापक **में संपृक्त जड़ चैतन्य** = सहअस्तित्व | व्यापक इकाई को नियंत्रित नहीं कर रहा है | **मानव** को स्वनियंत्रित होना है। ज्ञान पूर्वक होता है
- यही जागृति है| ऐसे जागृत होकर समाधान, समृद्धि पूर्वक जी पाता हैं। **यही निरंतर सुख है**

(A) '4 स्तर' पर व्यवस्था को समझना = ३ ज्ञान

चर्चा:आपको किसी नए जगह, ग्रह गोल में छोड़ दिया, तो आपको किन चीजों की जानकारी लगेगी? - स्वयं, उस जगह और वहाँ के लोगों के साथ संबंध के बारे:

	हमारे प्रश्न	'3 ज्ञान' ***विधि से***		**निष्कर्ष: समझने की वस्तु**
	मैं क्यों हूँ, कैसे हूँ?	स्वय की क्रियाओं /जीवन की समझ	जीवन ज्ञान	**जीवन(स्वयं) - जीवन**
	मेरे आसपास जो भी हैं, क्यों हैं, कैसे हैं?	सहअस्तित्व समझ में आना	अस्तित्व दर्षन ज्ञान	**सह-अस्तित्व**
	इन सब के साथ कैसे जीना हैं? क्या करना हैं?	अस्तित्व के हर इकाई के साथ संबंध को पहचानकर तदनुसार जीना	मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान	**मानव संबंध** (परिवार, समाज)
				शेष प्रकृति संबंध (प्रकृति में व्यवस्था)

- मानव की स्वभाव गति 'मानवत्व' ही है| यही उसका निश्चित आचरण, अथवा 'मानवीयतापूर्ण आचरण' है| इस धरती पर मानव के अलावा बाकी सारी इकाईयां पहले से अपनी अपनी स्वभाव गति में है| मानव भी अपनी स्वभाव गति में होना चाहता है, ज्ञान पूर्वक हो पाता है| हमारी स्वभाव-गति ही हमारे लिए सहज-स्वीकार होता है|
- आरंभिक जांचने की स्थिति में ऐसा 'सहज-स्वीकार' होना हमें भास् होता है, पश्च्यात आभास होता है| आभास होना = 'सत्य सहज होने की **सामान्य स्वीकृति'** | न्याय-धर्म-सत्य ही साक्षत्कार होकर बुद्धि में बोध होता है, यही सहज-स्वीकृति है| सहज-स्वीकृत अथवा बोध होने के पश्चात ही 'यह वस्तु' हमारे अधिकार में आता है| बोध होने के पश्च्यात ही अनुभव होता हैं| **इसके लिए "अध्ययन" आवश्यक है|**
- ***सहज = स्वभाव गति = स्वभाव - धर्म के अनुसार गति**

(B) जोड़ें: समझ के नीचे

समझ → (लक्ष्य, चाहना?) → कैसे करना है? कार्यक्रम? → कार्य–व्यवहार → फल–परिणाम

- 1) **जीवन(स्वयं) - जीवन**
- 2) **मानव संबंध** (परिवार, समाज)
- 3) **शेष प्रकृति संबंध**
- 4) **अस्तित्व** (सह-अस्तित्व)

1) बौद्धिक

** ऐसा समझते है, तो हमारा लक्ष्य, कार्यक्रम स्पष्ट होता है, और मानव संबंध, प्रकृति संबंध में जी पाते है*

जीना

2) व्यावहारिक
(मानव संबंध)

- संबंध की पहचान
- पूर्ति(मूल्य निर्वाह)

(उभय तृप्ति)

3) भौतिक
(प्रकृति संबंध)

- आवश्यकता की पहचान
- अधिक का उत्पादन

(उभय समृद्धी)

(C) जोड़ें: आख़री बिंदु

1. जीव चेतना	2. मानव चेतना
घटना - संवेदना	नियम - समझ
प्रतिक्रिया	जिम्मेदारी
चंचलता अषिक्षित	आराम, आष्वस्ति शिक्षित
4.5 क्रिया	10 क्रिया
प्रतिस्पर्धा	संबंध, पूरकता
सापेक्ष विश्वास	निरपेक्ष, स्वयं में विश्वास
भ्रमित	जागृत
रूप-गुण	(+) न्याय(स्वभाव), धर्म, सत्य
स्वयं = शरीर	जीवन(स्वयं) - जीवन और शरीर में अंतर की समझ
सहमत होना, अनुमान होना	**३ ज्ञान संपन्न, समझना, जानना**

(D)चर्चा से जोड़ें: जांचने कि विधि में प्रत्येक आयाम समझें कि कौनसी वस्तु से सम्बंधित है?

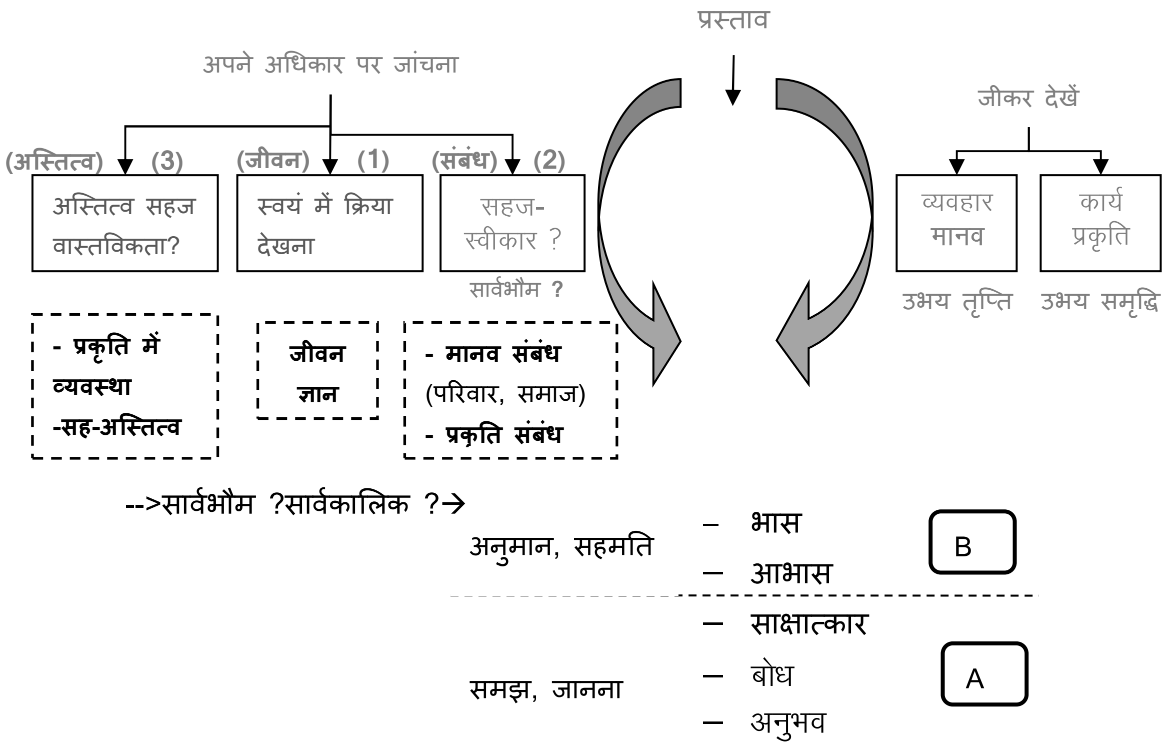

*** शिविर समाप्त ***

आगे के ३ बिंदु (पृ 153-161) पढकर सुनाएं

<u>परिशिष्ट - a) महत्वपूर्ण सूचना</u>

a.1) शिविर के पश्च्यात अध्ययन के लिए मार्गदर्शन

a.2) व्यक्तिगत टिप्पणियाँ

a.3) मध्यस्थ दर्शन पुस्तकों के बारे सूचना

a.4) आगे समझने की वस्तु, शिविरों के प्रकार

a.1) आगे 'करना क्या है?':

शिविर के पश्च्यात अध्ययन के लिए मार्गदर्शन:-

परिचय शिविर, तथा उसके बाद के मार्गदर्शन के लिए www.jeevanvidya.info देखें

अध्ययन से सम्बंधित जानकारी, मार्गदर्शन के लिए www.madhyasth-darshan.info देखें

1. **'प्राथमिक परिचय शिविर' करना:**
   - एक शिविर से मात्र कुछ ही बिंदु पकड़ में आते है | २-३ बार प्राथमिक परिचय शिविर करने से क्रमशः हमारा ध्यान बताये गए एक-एक वस्तु पर जाता है, एवं उनमे अंतर्संबंध स्पष्ट होता है | इसके साथ स्वयं के पुरानी मन्यताओं का मूल्यांकन होता है| यह आवश्यक है| इसमें समय लगता है|
   - शिविर सारणी परिचय शिविर वेबसैट www.jeevanvidya.info पर उपलब्ध है | sms द्वारा शिविर जानकारी प्राप्ति हेतु उपरोक्त साईट पर रजिस्टर करें, अथवा **88171-88463** पर अपना नाम, शहर एवं राज्य सुचना भेजें |

2. **'अध्ययन बिंदु परिचय शिविर' करना:**
   - '**अध्ययन बिंदु - ४४ बिन्दुओं'** का शिविर करना | इसी से मध्यस्थ दर्शन के मूल अध्ययन के वस्तु से अवगत होना होता है |

3. **पढ़ना**
   - www.jeevanvidya.info पर प्रारंभिक पढने हेतु सामग्री उपलब्ध है | इसे डाउनलोड कर पढ़ें | साथ में इस शिविर नोट्स को एक-दो बार पढ़ें |
   - शिविर करने के साथ पुस्तकों का पठन करें – प्रारंभिक क्रम में विकल्प, 'जीवन विद्या एक परिचय', व्यवहारात्मक जनवाद, समाधानात्मक भौतिकवाद, अनुभवात्मक आध्यात्मवाद, व्यवहारवादी समाजशास्त्र पुस्तकों - को पढ़ें। पुस्तक प्राप्त करने फोन करें: ज्योति पुराणिक: 09993249981, अभय पुराणिक - 09329516972 | मध्यस्थ दर्शन पुस्तक अध्ययन स्थलियों में उपलब्ध हैं | अध्ययन केन्द्रों से सपर्क हेतु वेब साईट www.madhyasth-darshan.info देखें

4. ऑडियो-विडियो सुनना/देखना - विडियो और ऑडियो रिकार्डिंग प्राप्त करें एवं सुने।

- ए नागराज जी के साथ: [यह अत्यंत उपयोगी है] - अधिक जानकारी के लिए वेब साईट **www.madhyasth-darshan.info** देखें

- उपरोक्त के अलावा
    - नागराज जी के साथ ५०० घंटे का ऑडियो एवं १५० घंटे का विडियो एडिटिंग में है|

5. स्वयं में अध्ययन प्रारंभ कैसे करना है?

- परिचय शिविर करने, एवं पुस्तक पढने के साथ साथ: **करना क्या है?** - अगले पृष्ठ पर दिया है |

6. "अध्ययन शिविर" करना:

- पूरे वांड्मय (११ पुस्तक) के अध्ययन के लिए | यह अंश कालीन (३ माह में ७ दिन, ३ वर्ष) तथा पूर्ण कालीन (६ माह) रूप में हैं |
    - इसमें पुस्तकों पर चर्चा, और विषय वस्तु को समझने का प्रयास किया जाता है - जिससे सघन रूप में सारे पुस्तकों से गुजरना हो जाता है| इससे 'शास्त्राभ्यास' में गति बन जाती है| अधिक जानकारी के लिए वेब साईट **www.madhyasth-darshan.info** देखें

**** 'जुड़े रहने' की आवश्यकता:-**

- आज का वातावरण 'समझ' के लिए बहुत अनुकूल नहीं है| शिविर में बारंबार आने से, अध्ययन केन्द्रों से जुड़े रहने से, जानकार व्यक्तियों से चर्चा करते रहने से, पुस्तक-ऑडियो-विडियो से हमारा ध्यान इन बिंदुओं पर बना रहता है| अन्यथा, हम वातावरण के साथ बह जाते है, 'समझ' की प्राथमिकता घट जाती है, हमारा ध्यान बंट जाता है, यह सब 'पीछे' रह जाता है, अथवा, 'मैं समझ' गया, मानकर बैठ जाते है |

***

स्वयं की इच्छा हो तो आगे अध्ययन कर सकते है| इसमें कोई आग्रह नहीं है| यह एक लंबी प्रक्रिया है| इसमें समय और पुरुषार्थ लगता है|

इस पूरी बात में कोई पद या धन (पैसे) की कोई बात नहीं है| ज्ञान बिकाऊ चीज नहीं है| "जीवन विद्या" कोई NGO या संस्था नहीं है या किसी भी राजनैतिक, धार्मिक संस्थाओं के पक्ष-विपक्ष में नहीं है| इसका के किसी भी विचारधारा, दर्शन से कोई संबंध नहीं है| इसमें कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं है| यह वास्तविकता पर आधारित है

***

मध्यस्थ दर्शन (जीवन विद्या) अध्ययन स्थली

- रायपुर, छत्तीसगढ़ | संपर्क: योगेश - 9752791674, सुवर्णा - 9630300787
- कानपुर स्थली:-IIT के पास | संपर्क: गणेश बागडिया/ श्याम -9450342998
- बिजनोर, उ.प्र | संपर्क: रणसिंग आर्य - 9412218178
- इंदौर म.प्र. | संपर्क: अजय दायमा - 9425060456

अन्य स्थलियों एवं अधिक जानकारी के लिए वेब साईट www.madhyasth-darshan.**info** देखें

स्वयं में अध्ययन प्रारंभ: "करना क्या है?"

Step #1:- पहला कदम - स्व-निरीक्षण

1) अपने इच्छा-विचार-आशा के प्रति सजग होना |

2) इनका मूल्यांकन:

- ***कार्यक्रम***
  - *मान्यतावश? या अपने अधिकार पर तय?*
- ***दुसरे के बारे सोच***
  - *सहज-स्वीकार?*

3) होना क्या चाहिए?/ सही क्या है?

- ***कार्यक्रम***
  - *क्यों जी रहा हूँ?*
- ***दुसरे के बारे सोच***
  - *पूरकता सहज-स्वीकार?*

4) <सही समझ की आवश्यकता>

***

यह 'पहला' कदम है| अगले पृष्ठ पर दूसरा कदम दिये है| 'पहला' (Step1) और 'दूसरा' कदम (Step2) दोनों साथ में होना है, इसको (स्व-निरीक्षण) ठीक से करने से, दूसरा कदम (सही के प्रस्ताव पर ध्यान, उसका शोध-समझना) ठीक से हो पाता है

***

Step #2:- दूसरा कदम - 'सही के प्रस्ताव' पर ध्यान, उसका अध्ययन एवं शोध:-

तुलन में न्याय-धर्म-सत्य दृष्टियों को जागृत होना है: अत: हमारा ध्यान:

1. **जीवन(स्वयं)**
   - -में क्रियाएँ
   - -शरीर से अंतर
2. **मानव संबंध**
   - परिवार में व्यवस्था
   - समाज में व्यवस्था
   - **(व्यवहार-न्याय), (व्यवस्था-धर्म)**
3. **शेष प्रकृति संबंध**
   - प्रकृति में व्यवस्था
   - **(धर्म)**
4. **अस्तित्व**
   - सहअस्तित्व
   - **(सत्य)**

इन **4 चीजों** पर हमारा ध्यान चले जाये **-** यह निरंतर रहने वाले वस्तु है |

इसी को बिंदु रूप में फैलाया है:-

समझने के लिए ध्यान (मन लगाना)

1. **जीवन(स्वयं)**
   - **जीवन क्रिया**
   - - मैं-शरीर अन्तर:
   - - आवश्यकता भिन्न
   - - कार्यक्रम भिन्न
   - - क्रियाएँ भिन्न
   - - चैतन्य : जड़
   - जानना मानना | पहचानना निर्वाह
2. **मानव संबंध**
   - **परिवार में व्यवस्था** | **समाज में व्यवस्था**
   - मानव संबंध है| जीवन के आधार पर| लक्ष्य एक, कार्यक्रम एक| मानव जाति एक, स्वभाव एक. धर्म एक । स्वयं का स्वभाव.धर्म
   - ३ संबंध | ४ संबंध
विश्वास, सम्मान, स्नेह...व्यवहार में न्याय
   - ५ आयामी कार्यक्रम:
३ परिवार में | २ समाज में
   - परिवार से विश्व परिवार तक:अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था | सामाजिक नियम
3. **शेष प्रकृति संबंध**
   - **प्रकृति में व्यवस्था**
   - - ४ अवस्था:
   - - क्रिया, रूप-गुण-स्वभाव-धर्म, अनुषंगीयता
   - -पूरकता, अंतर्संबंध
   - -प्राकृतिक नियम
4. **अस्तित्व**
   - **सह-अस्तित्व**
   - - व्यापक में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति
   - - व्यापक: पारदर्शी, पारगामी

<u>अत: समझने की वस्तु ४ ही बिंदु में है:</u>

1. **<u>स्वयं</u>**
   - (जीवन),
2. **<u>मानव संबंध:</u>**
   - परिवार में व्यवस्था
   - समाज में व्यवस्था
3. **<u>प्रकृति संबंध</u>**
   - प्रकृति में व्यवस्था
4. **<u>अस्तित्व में व्यवस्था</u>**
   - सह-अस्तित्व

इससे जीवन ज्ञान, अस्तित्व ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान:तीनो ज्ञान पूरा होता है/होना है

इतने 'वस्तु' अथवा वास्तविकताओं पर ध्यान देना हैं, शोध करना हैं| इसके लिए पुस्तकों में सूचना, परिचय शिविर एवं "अध्ययन के लिए शिविर" है|

इसको <u>स्वयं से जोड़कर जांचने</u> की विधि बताएं है:

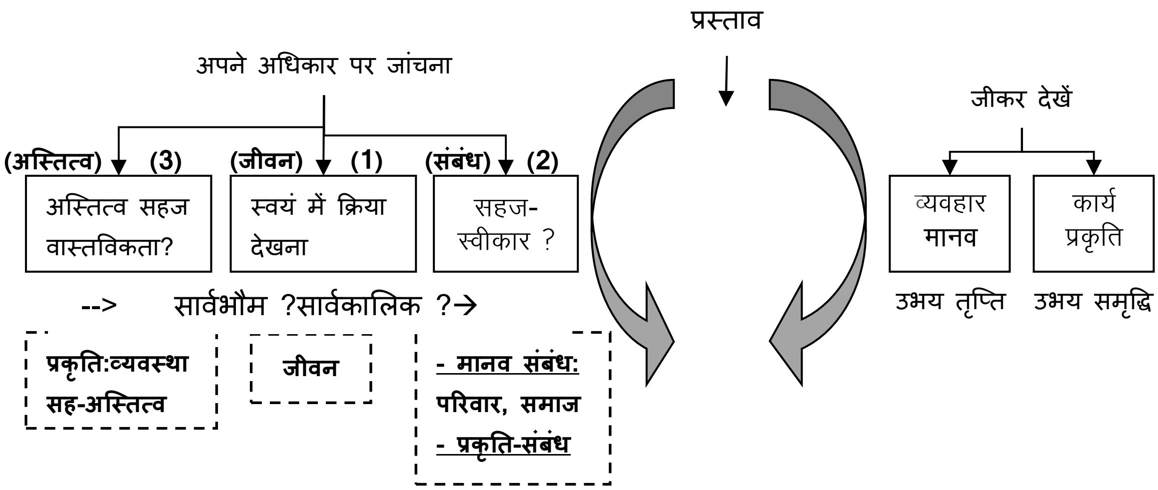

<u>* अत: जांचने के ३ आयाम है:</u>

- (1): जो भी **<u>जीवन</u>** के बारे कहा जा रहा है:
  - ***<u>स्वयं में सीधे देखें</u>***
- (2): जो भी **<u>संबंध</u>** के बारे कहा जा रहा है:
  - *वह हमारे लिए **<u>सहज-स्वीकार</u>** है?- इसकी जाँच*
- (3): जो भी **<u>अस्तित्व</u>** के बारे कहा जा रहा है:
  - *अस्तित्व सहज **<u>वास्तविकता</u>** के रूप में स्वयं पहचाने, समझे*

ऊपर वर्णित जांचने के तीनों आयामों में

1. सार्वभौम होना (सभी भूमियों में एक जैसे होना, सभी के लिए एक होना)
2. सार्वकालिक होना (भूत, वर्तमान, भविष्य)
3. जीने में आये
4. समझा सके

- यह जांचने के ४ मापदंड हैं|

*** ऐसे ध्यान देने से, क्रम से हमारा ध्यान इन चारों जगह - जीवन(स्वयं) ; मानव संबंध, प्रकृति संबंध एवं अस्तित्व पर जाता है| इसी क्रम में,*

B

- *इसमें पहले **भास्** होता है, (विचार रूप में स्वीकृति);*
- *पश्च्यात **आभास** होता है (इच्छा रूप में स्वीकृति)*

सहमति, अनुमान, भाषा प्रधान, तर्क का प्रयोग

A

- *सटीक प्रयास (* आगे अभ्यास-अध्ययन प्रक्रिया देखें) के साथ **साक्षात्कार** में, क्रम से इन वास्तविकताओं को हम पहचानते है*
- *साक्षात्कार के पश्च्यात **बोध** होता है: साक्षात्कार में जो वस्तु पहचाना, वही बोध में और पक्का, स्थिर होता है | बोध होना ही 'समझना' है, 'जानना' है | उसके पहले हमारी 'समझ' मात्र 'अनुमान' के स्तर पर है (Block B2) | इस विधि से बोध का नाम 'अवधारणा' भी है*
- *बोध में 'अवधारणा' होने के पश्च्यात ही **अनुभव** होता है|*

a.2) आगे के लिए कुछ टिप्पणियाँ

- **गलत को निकालना अलग कार्यक्रम नहीं है:**
  - जो सही नहीं है उसके साथ नहीं लड़ना है। दिख गया कि 'सही नहीं है' यह पर्याप्त है। होना क्या चाहिए, सहज क्या है, **सही, सार्वभौम क्या है,** इसमें शोध करना है।
  - यदि ईर्ष्या है तो ईर्ष्या को निकालने **कोई अलग** कार्यक्रम नहीं होगा बल्कि **संबंध** को स्वयं में **स्वीकारने, समझने** का प्रयास करना होगा- ईर्ष्या अपने आप दूर हो जाएगी। **अतः हमारा सारा प्रयास सही के समझने के लिए ही है। याद रखें–**
    - दुख = अस्वीकृति का भाव = स्वीकृति का अभाव = समझ की कमीं

- **शिविर के पश्च्यात,** दूसरों के साथ
  - निंदा न करें, ताना न कसें |
  - उनको जबर्दस्ती समझाने का प्रयास न करें, इस **प्रस्ताव के** चर्चा के समय आक्रामक न होवें | प्रस्ताव रखें मगर स्नेहिल विधि से, अधिकार/**दबाव** पूर्वक नहीं |
  - अगर कोई समझ नहीं पा रहा है तो यह माने की हम समझा नहीं पा रहें है।

- आज तक हम जितना भी किये, (जीवन, न्याय, धर्म, सत्य) को समझने: वह सब ४.५ क्रिया = भास, आभास तक ही रहा| इसमें रहते हुए एक ठोस अनुमान बन जाता है, और हम इसके लिए सटीक तर्क प्रस्तुत कर पाते है| यह अपने में "समझे" रहने का कोई प्रमाण नहीं है| 'समझ' का तात्पर्य, साक्षात्कार एवं बोध होना - जिसको हम आज तक 'समझ' मानते आ रहे है, वह एक भिन्न स्तर की चीज है - मात्र अनुमान है, रूप-गुण तक सीमित है| 'अध्ययन' करने का तात्पर्य है: साक्षात्कार करना, बोध करना| इसके पहले हम *अध्ययन के लिए प्रयास में है, अथवा अभ्यास कर रहे है*/ दुसरे विधि से, समझने का प्रमाण है, व्यवहार में प्रमाण होना - हम जो बोलते है, सोचते है, करते है - इसमें एक - रूपता होना| अनुभव के पश्च्यात ही यह पूरा हो पाता है| इसके पहले हमें बोलना आ जाता है, विचार ऐसे होता नहीं, जीने में ऐसे होता नहीं|
- ऐसे कहते हुए, जितने पर हम स्पष्ट हुए, उतने के लिए उत्सवित होना आवश्यक है, तब आगे के लिए उत्साह बनता है

a.3) पुस्तक/वांड्मय सूचना

- सहअस्तित्व की बात को प्रतिपादित किया है इसीलिए नाम दिया - सहअस्तित्व वाद
- मध्यस्थ जीवन, मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया के कारण = **मध्यस्थ दर्शन**
- जीवन = चैतन्य इकाई; विद्या = ज्ञान का धारक वाहक, इसीलिए = **जीवन विद्या**
- अस्तित्व एवं मानव को समझकर मानव के प्रयोजन को स्पष्ट करना = **अस्तित्व** मूलक मानव केंद्रित चिंतन (चिंतन - प्रयोजन)

मध्यस्थ दर्षन		प्रचलित
दर्षन		
1. मानव व्यवहार दर्षन 2. अनुभव दर्षन 3. अभ्यास दर्षन 4. कर्म दर्षन		• रहस्यमूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन (आदर्शवाद) • अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक वस्तु केंद्रित चिंतन (भौतिकवाद, विज्ञान)
वाद		
1. भौतिकवाद →	समाधानात्मक	**द्वंद्वात्मक** – गणितात्मक विधि से मात्र रूप- गुण के अध्ययन से स्वभाव, धर्म, सत्य पर गलत निष्कर्ष
2. आध्यात्मवाद →	अनुभवात्मक	रहस्यात्मक – अनिर्वचनीय, अव्यक्त
3. जनवाद →	व्यवहारात्मक	संघर्षात्मक – प्रतिस्पर्धा, बलशाली ही जियेगा
शास्त्र		
1. समाजशास्त्र →	व्यवहारवादी	भोगोन्मादी – इन्द्रिय सुख
2. अर्थशास्त्र →	आवर्तनषील	लाभोन्मादी – आवष्यकता अनंत, साधन सीमित संग्रह, शोषण
3. मनोविज्ञान →	मानव संचेतनावादी	कामोन्मादी – मानव के समस्त क्रियाकलाप का केंद्र काम है। सारा मीडिया – भोग, काम के लिए
मानवीय संविधान – सभी मानवों के लिए एक		हर देश का अपना संविधान - सार्वभौम नहीं
<u>अन्य:</u> विकल्प, जीवन विद्या एक परिचय अध्ययन बिंदु, **परिभाषा संहिता, 'संवाद'**		

वांग्मय प्रकार	**विषय**	**भाषा**
दर्शन	समझ:ज्ञान, रहस्य मुक्ति	तात्विक
वाद	तर्कशैली, दर्शन का फैलाव, विगत के विसंगतियों को दूर करना	तार्किक
शास्त्र	आचरण, नियम पूर्वक जीने के लिए प्रेरणा	व्यवहारिक

पुस्तकों का परिभाषा-सार -

स्त्रोत: परिभाषा संहिता, संस - २००८, एवं व्यवहारात्मक जनवाद, संस २००२, पृ १६९ से १७६, लेखक - ऐ नागराज|

* *कुछ ही वाक्यों को यहाँ दिया हैं, सम्पूर्ण के लिए पुस्तक देखें|*

मध्यस्थ दर्शन सहास्तित्ववाद

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद मानव को अनुभवमूलक प्रणाली पद्घति पर ध्यान दिलाता है। अनुभवमूलक विधि से ही मानव प्रमाणित होता है तथा नित्य सत्य को बोध व प्रमाणित करता है। मानव सदैव शुभाकाँक्षा सम्पन्न है ही, नित्य शुभ के रूप में अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का बोध कराता है। अनुभव ही एक मात्र तृप्ति स्थली है। अनुभवमूलक परम्परा ही अनुभवमूलक अभिव्यक्ति ही गरिमा महिमा होना सुस्पष्ट हो जाता है। अनुभव सर्वतोमुखी समाधान का स्रोत होने को स्पष्ट करता है। न्याय पूर्वक मानव परम्परा में जीते हुए सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने की विधि विधान, कार्य व्यवहार, फल, परिणाम और प्रयोजनो को लय बद्घ विधि से बोध करा देता है। अतएव लोक संवाद में इस मुद्दे पर चर्चा सम्पन्न हो सकती है कि अनुभवमूलक विधि से जागृति प्रमाणित करना है या भ्रमित रहना है। अनुभवमूलक विधि से मानव चेतना सहज प्रमाण है और भ्रम पूर्वक जीव चेतना का प्रकाशन है।

दर्शन

- दर्शक-दृष्टी के द्वारा दृश्य को समझने की क्रिया
- दर्शक-दृष्टी के द्वारा दृश्य को यथावत समझना और उसकी अभिव्यक्ती सम्प्रेषण व प्रकाशन क्रिया|

व्यवहार दर्शन

- मानवत्व सहित व्यवहार का अध्ययन, मानवीय व्यवहार सूत्र व्याख्या सहज अध्ययन, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन

कर्म दर्शन

- मानव में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित, जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति में कीया गया कार्य व्यवहार व्यवस्था सहज भागीदारी का अध्ययन

अभ्यास दर्शन

- "अभ्यास दर्शन" समझदारी के लिए अभ्यास को स्पष्ट करता है। एवं समझने के उपरान्त समझदारी को प्रमाणित करने की अभ्यास विधियो का अध्ययन कराता है

अनुभव दर्शन

- व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक संपृक्त है यह समझ में आना प्रमाणित होना

वाद:

- नियति क्रम में निश्चित सिद्धांत सूत्रों की व्याख्या शिक्षा संस्कार, व्यवस्था, संविधान, आचरण एक सूत्रता सहज अभिव्यक्ती सम्प्रेशाणा

अनुभवात्मक आध्यात्मवाद

- इसमें अध्यात्म नाम की वस्तु को साम्य ऊर्जा के रूप में जानने, मानने, पहचानने की व्यवस्था है। सम्पूर्ण प्रकृति, दूसरी भाषा में सम्पूर्ण एक एक वस्तुएँ, तीसरी भाषा में जड़-चैतन्य प्रकृति, चौथी भाषा में भौतिक, रासायनिक और जीवन कार्यकलाप व्यापक वस्तु में सम्पृक्त विधि से नित्य क्रियाकलाप के रूप में वर्तमान है

व्यवहारात्मक जनवाद:

- मानव अपने परस्परता में व्यवहार न्याय प्रमाणित करने के लिए चर्चा, परिचर्चा प्रमाणात्मक प्रस्तावात्मक वार्तालाप

समाधानात्मक भौतिकवाद

- समाधानात्मक भैतिकवाद में संपूर्ण भौतिकता रसायन तंत्र में व्यक्त होते हुए संयुक्त रूप में विकास क्रम को सुस्पष्ट किये जाने का तौर तरीका और पूरकता

रूपी प्रयोजनो का बोध कराया जाता है। समाधानात्मक भौतिकवाद परमाणु में विकास, परमाणु में प्रजातियां होने का अध्ययन पूरा कराता है...

शास्त्र: स्वानुशासन के लिए प्रेरणा

व्यवहारवादी समाजशास्त्र:

- व्यवहारवादी समाजशास्त्र को में मानव मानव के साथ न्याय, समाधान, सहअस्तित्व प्रमाणपूर्वक जीने के तथ्यों को बोध कराया जाता है। जिससे सहअस्तित्व बोध, जीवन बोध सहित व्यवस्था में जीना सहज हो जाता है

(आवर्तनशील) अर्थशास्त्र:

- अर्थ की आर्वतनशीलता के मुद्दे पर यह बोध कराया जाता है कि श्रम ही मूलपूंजी है। प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वकउपयोगिता मूल्य को स्थापित किया जाता है। उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्यन होना पाया जाता है

मानव संचेतानावादी मनोविज्ञान

- मानव मानसिक प्रक्रिया को सत्य में भास्, आभास, प्रतीति और अनुभूति क्रम में पहचानना
- जीवन जागृति संपन्न जीवन का अध्ययन

संविधान

*(*कुछ ही वाक्य दीये हैं, शेष के लिए परिभाषा संहिता देखें, पृ २६२, सं २००८)*

- मानवीय आचरण, व्यवहार, विधि, विनिमय - प्रक्रिया उत्पादन बाध्यता की सूत्र और व्याख्या रूपी संहिता

a.4) शिविर प्रकार/ क्रम

समझने की सम्पूर्ण वस्तु:

- **ज्ञान**
  - अस्तित्व दर्शन ज्ञान [सह-अस्तित्व, ४ अवस्था]
  - जीवन ज्ञान [स्वयं (मैं)]
  - मान्वियातापूर्ण आचरण ज्ञान [मानव संबंध, प्रकृति संबंध]
- **विवेक:**
  - लक्ष्य स्पष्ट होना, व्यवहार के नियम
- **विज्ञान:**
  - दिशा निर्धारण, कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी ज्ञान

उपरोक्त का बिंदु रूप में जानकारी 'अध्ययन-बिंदु' पुस्तक में ४४ बिंदुओं में दिया हैं, एवं दर्शन-वाद-शास्त्र रूप में १२ पुस्तक लगभग ३००० पृष्ठों में विस्तृत जानकारी हैं| अध्ययन के लिए सम्पूर्ण वस्तु यह हैं|

<u>**शिविर प्रकार सारांश :**</u>

I. **जीवन विद्या शिविर = परिचय शिविर**
   a) #1) प्राथमिक परिचय शिविर (चेतना विकास अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट , (होने ,
   b) #2) अध्ययन बिंदु परिचय शिविर)मुख्य अध्ययन बिंदुओं से अवगत होना)

II. **अध्ययन शिविर (मध्यस्थ दर्शन)**
   a) अंश कालीन : (हर ३ माह में ७ अथवा १० दिन , 2 से ३ वर्ष मे पूरा होता है)
   b) पूर्ण कालीन) : ६ माह, से १ वर्ष पुरे समय)

III. **गोष्ठी**
   a) अध्ययन गोष्ठी (पठन एवं तर्क पूरा करने हेतु)
   b) अवधारणा गोष्ठी (समझ के जाँच पूरा करने ,हेतु)

"अध्ययन प्रक्रिया" पर जानकारी

(अध्ययन क्या हैं? कैसे अध्ययन करना हैं?)

** नीचे दिया हुआ, परिचय शिविर हेतु संक्षिप्त जानकारी है| इसपर ६ दिन का शिविर होता है|*

अध्ययन सफल होने के लिए अनिवार्य:

1. **समझाने वाला व्यक्ती: (प्रमाणित)**
   a. हम स्वयं समझ सकते है, विश्वास होने| तदाकार, तदरूप होता है, इसे स्वीकारने - 'अध्ययन करने के अधिकार को क्रियान्वित' करने|
   b. लिखा हुआ को स्पष्ट करने, वस्तु समझाने |अध्ययन क्रम में दिशा देने |
2. **शास्त्राध्ययन** (समझने वाले व्यक्ति में)
3. **स्व-प्रेरणा** (समझने वाले व्यक्ति में)

अध्ययन के लिए आवश्यक:

- दिनचर्या ('सही जीना'), उत्साह

अध्ययन के लिए सहायक:

- वातावरण, अभिव्यक्त होना (**गोष्टी, शिविर**), सेवा, श्रम,

'अभ्यास'' परिभाषा

(*ए न*) ["क्यों, कैसे का उत्तर पाने के लिए किया गया बौधिक, वाचिक, कायिक क्रियाकलाप अभ्यास है| अर्थात समाधान संपन्न होने के लिए अभ्यास है| - *अभ्यास दर्शन, संस द्वितीय, पृ २*]

'अध्ययन' परिभाषा: *अध्ययन को तीन विधि से बताया है:

- (*ए न*) [**अधिष्ठान के साक्षी एवं अनुभव के रौशनी में स्मरण पूर्वक कीये गए क्रिया-प्रक्रिया एवं प्रयास -** *परिभाषा संहिता, सं:2008, पृ 15*]
    - **अधिष्ठान: समझने वाले का है | अनुभव की रौशनी(प्रेरणा): समझा हुआ व्यक्ति का है-यही समझाने वाला है | स्मरण चित्त-चित्रण में होता है|*

- (*ए न*) [**श्रवण, मनन, निदिध्यासन (*साक्षात्कार-बोध*) की संयुक्त प्रक्रिया अध्ययन है** - *अभ्यास दर्शन सं २००४, पृ १९२]*
    - साक्षात्कार-बोध होना अध्ययन है | बुद्धि में स्वीकारने के विधि को अध्ययन कहा है | तीनो: श्रवण, मनन, निदिध्यासन (साक्षात्कार-बोध) एकत्रित होने पर अध्ययन है

- (*ए न*) [**तदाकार होना:** कल्पनाषीलता का नियोजन: हर शब्द का अर्थ है। उस अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में वस्तु है। शब्द के अर्थ के रूप में अस्तित्व में जो वस्तु इंगित है, उस अर्थ में हमारा कल्पनाशीलता 'तदाकार' होना| 'तद' शब्द सच्चाई को इंगित करता है| सच्चाई के स्वरुप में कल्पनाशीलता हो जाना ही तदाकार, तदरूप होना है - *संवाद, सं 2011, पृ 198, 203*]

 # अवधारणा (बोध) होने तक अध्ययन है| उसके बाद अनुभव है |

सरल विधि से पूरे प्रक्रिया को ऐसे बताया है: **स्त्रोत: संवाद, १९९८, आन्वारी आश्रम*

1) शास्त्राध्ययन
2) शब्द के अर्थ को सुनना *(श्रवण)*
3) अर्थ समझने के लिए मन लगाना *(मनन)*
4) अर्थ के स्वरुप में अस्तित्व में वस्तु को पहचानना, समझना *(साक्षात्कार-बोध)*
5) समझने का तृप्ति बिंदु *(अनुभव)*

- प्रचलित शिक्षा एवं मध्यस्थ दर्शन के अध्ययन में मुख्य अंतर यह है की प्रचलित शिक्षा की वस्तु भौतिक-रासायनिक संसार के रूप-गुण तक सीमित है, उसकी लम्बाई-चौड़ाई-ऊंचाई होती है, इसीलिए प्रिय-हित-लाभ के तुलन दृष्टियों से दृष्टि-गोचर प्रधान विधि से इसका अध्ययन हो जाता है -यह अध्ययन जीने के लिए पर्याप्त नहीं है| यह सूचना, तकनीकी तक सीमित हीं| इसमें पुस्तकों का अध्ययन है: मात्र स्मरण पूर्वक विश्लेषण करने से काम चल जाता है| इसमें रूप-गुण सीमा में चीजें कटी हुई होती है, विखंडन विधि से अध्ययन है|

- मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से वास्तविकता के सम्पूर्ण आयामों के अध्ययन के लिए न्याय-धर्म-सत्य दृष्टियों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है, क्योंकी यह वस्तु स्वभाव-धर्म-सत्य संबंधी है - यह चीजें समझ में आती है, आँखों में आती नहीं - ज्ञान गोचर प्रधान है; अत: यह अध्ययन स्वयं के जागृति के लिए, जीने के लिए है| इसमें पुस्तकों के माध्यम से स्वयं का अध्ययन, सम्पूर्ण संबंधों का अध्ययन एवं अस्तित्व समग्र का अध्ययन है: जो स्वयं के अधिकार पर ही होना है, स्वयं में ही होना है| इसीलिए, इसमें सूचना, पुस्तक से स्वयं में आना, 'श्रवण' होना आवश्यक है| उसी के पश्च्यात मनन संभव है - जो स्वयं में ही होता है, बाहर नहीं| इसमें 'वस्तु' कटा हुआ नहीं है, सारा 'जुड़ा' हुआ है, सार रूप में समझ में आता है, रूप-गुण-स्वभाव-धर्म-सत्य के समग्रता में अध्ययन है|

- इसीलिए नए सीरे से इसका अध्ययन आवश्यक है| प्रचलन से मध्यस्थ दर्शन का अध्ययन वस्तु भी भिन्न है, प्रक्रिया भी, फल-परिणाम भी| यह स्वयं समझने, जागृत होने, सहअस्तित्व में जीने के लिए है (आचरण के लिए), जबकि प्रचलित अध्ययन सूचना के लिए, दूसरों को सुनाने के लिए, प्रतिस्पर्धा के लिए, सुविधा-संग्रह के लिए है|

परिशिष्ट: b) अन्य जानकारी:

b1) समझने के क्रम में व्यक्ति की यात्रा...

b2) विकल्प

a. **व्यक्ती, समाज एवं विज्ञान में आज की धारा एवं प्रस्तावित विकल्प |**

b. **वाद-विचार में प्रस्तावित विकल्प |**

c. **शिक्षा में विकल्प: आज की शिक्षा का परिणाम एवं प्रस्तावित मध्यस्थ दर्शन के अनुसार परिणाम |**

b3) प्रचलित शब्द-अर्थ

b4) प्रयुक्त मुख्य शब्दों की परिभाषा - 'परिभाषा संहिता' पुस्तक से

b1) समझने के क्रम में एक व्यक्ति की यात्रा

	लक्ष्य	कार्यक्रम	कार्य–व्यवहार	फल–परिणाम
शिविर से पहले	• अनिश्चित / **जिज्ञासा ..** • सुविधा संग्रंह/ **त्याग?** • सर्व–षुभ **कामना**	• **मान्यता-भास्-आभास वश** • लाभ • विभिन्न प्रयास	- vfuf'pr ? - **मनमानी**	• अतृप्ति, अधुरापन /सामयिक **सुख**
शिविर के बाद (अभ्यास -अध्ययन काल)	• बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि • अंतर्विरोध, दोहरा व्यक्तित्व, अज्ञान से मुक्ति • ज्ञान सम्पन्न– अस्तित्व दर्षन **ज्ञान**, जीवन **ज्ञान**, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान	**अध्ययन** 1. **स्वयं को समझना (जीवन)** 2. **मानव संबंध - परिवार, समाज -(न्याय, धर्म)** 3. **प्रकृति संबंध (धर्म)** 4. **सह-अस्तित्व(सत्य)** **स्वयं को मॉडल बनाना** परिवार में जीना, 5 आयामों में भागीदारी	• **भास्**, आभास पूर्वक व्यवहार • **स्व-निरीक्षण** पूर्वक व्यवहार • निष्चितता की ओर गति	• समझ, ज्ञान सम्पन्न होना • बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि ¾ तृप्ति • क्यों और कैसे का उत्तर • स्वभाव गति में जीना • मानव लक्ष्य स्पष्ट, कार्यक्रम स्पष्ट
समझ के बाद`	• सर्वषुभ • मानव लक्ष्य = समाधान, समृद्धि, अभय, **सह-अस्तित्व** सुनिष्चित करना है • परिवार व्यवस्था में जीना: व्यवहार में न्याय, कार्य में उभय समृद्धि	• 5 आयामी योजना में **भागीदारी: परिवार एवं समाज में** • उपकार प्रवृत्ति	• मानवीयता पूर्ण आचरण **= न्याय पूर्वक जीना**	• अखण्ड समाज • सार्वभौम व्यवस्था • चारो अवस्था में संतुलन • संस्कृति, सभ्यता, विधि व्यवस्था • मानविय परंपरा
		निरंतरता ⟶		

b2) विकल्प - b.2.1) व्यक्ति, समाज एवं विज्ञान में आज की धारा एवं प्रस्तावित विकल्प

आज की स्थिति

स्तर	अपेक्षा	माध्यम	विधि	फल परिणाम	
(व्यक्ति)	- अच्छा लगना	–इंद्रिय सुख –सुविधा संग्रह –दूसरों **का** ध्यान पाना	–सुविधा संग्रह –विषेषज्ञता	–क्षणिक सुख –समस्या –भय, **खालीपन**	- व्यक्ति अतृप्ति - परिवार में मतभेद, अविष्वास
(समाज)	- सुख, **शांति**, समृद्ध समाज	–भोग, काम –युद्ध, संग्रह –छळc के साथ काम/ - **गणतंत्र**	–मानव संसाधन है –षोषण, शासन **- संघर्ष,** समस्या को टालना, उसका निवारण **- शासन**	–लक्ष्य विहीन विकास –नयी समस्या का उद्‌गम	- समाज में विद्रोह **-अनेक समस्याएं**
(विज्ञानी	- सहीं की समझ	–विज्ञान	–गणित, यांत्रिक / यंत्र	भौतिक रासायनिक समझ	- **प्राकृतिक** असंतुलन
(ज्ञानी)		–आदर्षवाद	–रहस्य उपदेष	अच्छा होता नहीं	

जो होना चाहिए (**प्रस्तावित विकल्प**)

	मूल चाहना	माध्यम	विधि	फल परिणाम
(व्यक्ति)	निरंतर सुख, समृद्धि	समाधान **से सुख**	- व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना, - अध्ययन	व्यक्ति, परिवार में तृप्ति, **समृद्धि**
(समाज)	**मानव लक्ष्य = समाधान, समृद्धी, अभय, सहअस्तित्व**	**- मानव लक्ष्य, ५ आयामी कार्यक्रम**	**- लोकशिक्षा, शिक्षा-संस्कार** - परिवार मूलक **स्वराज्य व्यवस्था**	मानव लक्ष्य की पूर्ति
(विज्ञानी / ज्ञानी)	सहीं की समझ	षिक्षा: अस्तित्व सहज, मानव सहज	अध्ययन– ज्ञान, विवेक, विज्ञान	**चारों अवस्था में संतुलन**

bb.2.2) वाद-विचार में प्रस्तावित विकल्प

	भौतिकवाद	**(विकल्प)** सह–अस्तित्ववाद	आदर्शवाद
लक्ष्य	सुविधा, **प्रतिस्पर्धा**	**समझ, समाधान, सुख**	ईष्वर प्राप्ति, स्वर्ग
विधि	**गणितीय, इन्द्रिय गोचर**	अध्ययन (अस्तित्व में **वास्तविकता**)	योग, उपासना
प्रमाण	यंत्र प्रमाण (गणितीय)	**अनुभव प्रमाण, व्यवहार प्रमाण, प्रयोग प्रमाण**	**रहस्य?**
जीवन शैली	सुविधा, संग्रह, **यांत्रिकता**	समाधान समृद्धि	भक्ति–विरक्ति
परिणाम	भोग	सदुपयोग, **संबंध निर्वाह**	त्याग
नामकरण	भौतिकवाद (**विज्ञान**)	सह–अस्तित्ववादः मध्यस्थ दर्षन	आध्यात्मवाद, **अधिभौतिकवाद** अधिदैवीवाद
मूल प्रतिपादन	**मानव=शरीर|** सुख = इंद्रिय सुख= भोग, काम | इतने के लिए लाभ **- अस्तित्व अस्थिर, अनिश्चित**	मानव = **जीवन**. शरीर समझदारी **से** समाधान = सुख – अस्तित्व दर्षन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान, विवेक, विज्ञान	मानव केवल शरीर नहीं मानव क्या है? स्पष्ट नहीं आत्मा का परमात्मा में विलय होना –ब्रह्म ज्ञान
मूल दृष्टि/ चिंतन	अस्थिर, अनिष्चित वस्तु केंद्रित	अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित (अस्तित्व सहज, **मानव सहज**)	रहस्य मूलक ईष्वर केंद्रित
कार्यप्रणाली	**भोग करेंगे,** उत्पादन नहीं	उत्पादन **करेंगे,** सदुपयोग **करेंगे**	भोग और उत्पादन दोनो नहीं **करेंगे**

क्या चाहिए?

स्वयं के अधिकार पर जांचे: की आपको क्या चाहिए?

क्या चाहिए?	यह चाहिए, अथवा	यह चाहिए? (विकल्प)
तंत्र	शक्ति केंद्रित शासन?	समाधान केंद्रित व्यवस्था?
जीने की विधि	संग्रह–सुविधा?	**समाधान**, समृद्धि?
शिक्षा की वस्तु (जीने में)	लाभोन्मादी अर्थषास्त्र ? भोगोन्मादी समाजषास्त्र ? कामोन्मादी मनोविज्ञान ?	आवर्तनषील अर्थषास्त्र ? व्यवहारवादी समाजषास्त्र ? मानव संचेतना वादी मनोविज्ञान ?
विज्ञान	विखण्डन वादी (प्राकृतिक असंतुलन वादी) ?	सह–अस्तित्व वादी (प्राकृतिक संतुलनवादी) ?
शिक्षा की वस्तु (आधारं)	द्वंदात्मक भौतिकवाद? संघर्षात्मक जनवाद? रहस्यात्मक आध्यात्मवाद?	समाधानात्मक भौतिकवाद? व्यवहारात्मक जनवाद? अनुभवात्मक **आध्यात्मवाद**?
चिन्तन	1. रहस्य मूलक ईष्वर केंद्रित चिंतन? 2. अस्थिरता, अनिष्चयता मूलक वस्तुकेंद्रित चिंतन?	अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ?

- अब तक की असफलता का कारण
  - ➢ अस्तित्व को पूर्णता में नहीं समझना
    - ▪ शासन को व्यवस्था मानना जबकि अस्तित्व में कोई शासन नहीं है।
  - ➢ मानव का अध्ययन पूरा नहीं होना |

b.2.3) शिक्षा में विकल्प

आज की शिक्षा:

	सूचना संबंधी विषय ↓	भौतिक रसायनिक संबंधी विषय ↓	हुनर/उच्च शिक्षा संबंधी विषय ↓
विषय	भुगोल इतिहास मूल्य, धार्मिक **शिक्षा**	Physics Chemistry Biology (गणित का सहारा)	Engineering Medicine Commerce, arts (गणित का सहारा) **अर्थशास्त्र**/Economics
आधार: वाद/सोच विचार	-मूल्य/धर्म= उपदेष/ रहस्य - रहस्यात्मक आदर्षवाद - **संघर्षात्मक जनवाद**	- **द्वंद्वात्मक** भौतिकवाद (तर्क) **- यंत्र, यांत्रिकता, गणितीय विधि:**	- विषेषज्ञता - नौकरी, **व्यापार** - **भोगवाद**
मान्यता	देषों/धर्मो में श्रेष्ठता, **-संघर्ष, रहस्य**	मूल में – अस्थिर, अनिष्चित **- इन्द्रिय गोचर प्रमाण,** **- यंत्र प्रमाण**	**भोग**, सुविधा संग्रह
परिणाम	सुविधा संग्रह मानव के साथ संघर्ष	सुविधा संग्रह प्रकृति के साथ संघर्ष	सुविधा संग्रह **परिवार में संघर्ष;** **स्वयं में संघर्ष**
विधि	प्रतिस्पर्धा, यंत्रिक विधि, स्मृति केंद्रित **विश्लेषण**		
16 वर्ष का परिणाम	समाजषास्त्र ↓ **भोगोन्माद**	मनोविज्ञान ↓ **कामोन्माद**	अर्थषास्त्र ↓ **लाभोन्माद**
संरक्षण, पुष्टि	मीडिया; टी.व्ही.; पेपर, विज्ञापन **को** प्रोत्साहन		
सुधारने के लिए प्रयास	मूल्य षिक्षा के नाम पर अस्पष्टता ?? –सार्वभौमता ? –समग्रता ?	–**आधार** नहीं; केवल सहायक **वाचन है** –उपदेष विधि	
कारण	**मानव को 'जीव' माना**	अस्तित्व की समझ में **आधूरापन**	मानव के प्रयाजन में अस्पष्टता

प्रस्तावित षिक्षा का **विकल्प**:– मध्यस्थ दर्षन आधारित मूल्य षिक्षा

	समझ ↓	सूचना ↓	भौतिक रसायनिक अध्ययन ↓	हुनर ↓
विषय	ज्ञान • अस्तित्व दर्षन ज्ञान • जीवन ज्ञान • मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान	• भूगोल • **इतिहास** • वन, प्राणी • औषधि	तकनीकी (गति) • Physics • Chemistry • Biology	• आहार, आवास, अलंकार • दूरदर्षन, दूरश्रवण, दूरगमन **के लिए** engineering, medicine
आधार	• **यथार्थता , वास्तविकता, सत्यता** • अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित **चिंतन**	• समीक्षात्मक इतिहास • अनुभवात्मक **आध्यात्मवाद** • व्यवहारात्क जनवाद	• समाधानात्मक भौतिकवाद • **विवेक (प्रयोजन)** सम्मत विज्ञान	• **स्वावलंबन** • आवर्तनषील **तकनीकी -प्राकृतिक नियमानुसार**
मान्यता	• जानने के आधार पर मानना • सह–अस्तित्व • <u>**अनुभव प्रमाण**</u>	• मानव लक्ष्य के **तहत** समीक्षा • <u>**व्यवहार प्रमाण**</u>	• स्थिरता, **निश्चितता** • **ज्ञान गोचर**	• **परिवार/समाज आवश्यकता अनुसार** • <u>**प्रयोग प्रमाण**</u>
परिणाम	**बौद्धिक** समाधान	मानव लक्ष्य में सहायक (**विवेक**)	विवेक सम्मत विज्ञान: **मानव लक्ष्य के अनुसार**	**भौतिक** समृद्धि
विधि	अध्ययन = ज्ञान–विवेक–विज्ञान सम्पन्नता, जीने में प्रमाण, – चेतना विकास **मूल्य शिक्षा**			
16 वर्ष का परिणाम	मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान ← समाधान समृद्धि → आवर्तनषील अर्थषास्त्र ↓ व्यवहारवादी समाजषास्त्र			
संरक्षण, पुष्टि	**संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था (५ आयामी योजना) (मानवीय संविधान)**			
लोक **व्यापी करण**	लोक षिक्षा, चेतना विकास मूल्य षिक्षा –सार्वभौमता, **सर्वकालिक** – अध्ययन विधि **उपलब्ध है (<u>समझा सकते है</u>)** –समग्रता **में अध्ययन, जीने में आता है** – प्रस्ताव विधि, **उपदेश नहीं**			

b.3) प्रचलित शब्द-अर्थ

- बंधन – दुख पूर्वक जीना (इच्छा, विचार, आषा बंधन)
- मोक्ष – भ्रम मुक्ति **ही मोक्ष है |** (ज्ञान, समझ **से होगा)**
- पाप – अव्यवस्था पूर्वक जीना
- पुण्य – व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना
- स्वर्ग – सुख पूर्वक जीना(**इसी धरती पर, कोई अलग जगह नहीं है)**
- नरक – दुख पूर्वक जीना **(इसी धरती पर, कोई अलग जगह नहीं है)**
- **पुनर्जन्म** – होता नहीं। मै/जीवन की शरीर यात्रा पुनः होती हैं।
- देवी–देवता – श्रेष्ठ 'जीवन' जो गौरव के पात्र हो।
- **ईशवर** – **व्यापक वस्तु, पारदर्शी, पारगामी, साम्य उर्जा**
  (इकाई नहीं है, नियंता नहीं, निर्माता नहीं)
  (दृष्टा नहीं, कर्ता, भोक्ता नहीं)
- **ब्रह्म** – ---- " -----

समझ और सहमति: समझ और सहमति अलग है। 'सहमति' समझ नहीं है।

समझ = **अनुभव संपन्न**	सहमति/**भास-आभास** सहिंत अनुमान
वास्तविकता को समझते है।	सुनते हुए ठीक लगता है।
उसके प्रति कोई शंका नहीं बचती।	'जान गया' मान लेते है। **किसी अंश में विकल्प बना ही रहता है**
जीने में, आचरण में आता है।	मात्र बोलना आता है जीने मे, आचरण में नहीं **(आंशिकता में आता है)। तर्क प्रस्तुत करना आ गया|**
हमने किसी को समझाया और उसने किसी को समझा दिया यह हमारी **समझे रहने** का प्रमाण है।	हम बोलते है लोग सहमत हो जाते है, समझा कोई रहता नहीं।

शब्द और अर्थ भिन्न है।

शब्द (भाषा, ध्वनि, लिपि)	अर्थ
हर शब्द **का** अर्थ **है, जो अस्तित्व में किसी वस्तु** को इंगित करता है।	अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में वस्तु, वास्तविकता है।

जैसे 'पानी' एक शब्द है, 'पानी' एक 'वस्तु' है। 'पानी' बोलने/लिखने से तृप्ति नहीं है।

- समझ के साथ भी ऐसा है। बोलने/लिखने से तृप्ति नहीं है। वस्तु समझने से तृप्ति है।
- शब्द अर्थ नहीं है। **भाषा,** शब्द लिखना/बोलना/सुनना पर्याप्त नहीं है।

b.4) इस शिविर में प्रयुक्त मुख्य शब्दों की परिभाषाएं

('परिभाषा संहिता' से)

*** स्रोत:** मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद आधारित: "मानव व्यवहार दर्शन" - एवं "परिभाषा संहिता": प्रणेता एवं लेखक: ए नागराज, अमरकंटक*

भूमिका	
सुख	समस्या से मुक्ति समाधान युक्त वर्तमान
दु:ख	समस्याओं के प्रभाव से पायी जाने वाली पीड़ा
समस्या	किसी भी घटना अथवा क्रिया की समझ न होना ही समस्या है अथवा कैसे और क्यों समझ में न आना समस्या है
समाधान	किसी भी घटना अथवा क्रिया के नियम की समझ होना ही समाधान है अथवा कैसे और क्यों की पूर्तिही समाधान है
समृद्धि	आवश्यकता से अधिक उत्पादन, उपभोग कम, अभाव का अभाव
लक्ष्य	मानव लक्ष्य - समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व, नियति सहज लक्ष्य चारों आवस्थाओं में प्रकट रहना
समझ	ज्ञान, विवेक, विज्ञान
सहज	चारों अवस्थायें स्वाभाविक गति रूप में | = स्वभाव गति = त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदार
स्वीकार	पूर्णता, आवश्यकता, अनिवार्यता की अपेक्षा में किया गया ग्रहण
स्वीकृति	अपनाया गया
व्यक्ति में व्यवस्था	
चयन	मन को जो प्रिय हो, उसके चुनाव के प्रक्रिया की चयन संज्ञा है| मन में आस्वादन अपेक्षा पूर्वक चयन होता है|
आस्वादन	आशा एवं रूचि सहित ग्रहण क्रिया | भ्रमवश संवेदनाओं का, जागृति पूर्वक मूल्यों का
विश्लेषण	अनेक प्रकार अनेक कोणों से परीक्षण किया गया का सत्यापन
तुलन	प्रिया-प्रिय, हिताहित, लाभालाभ, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, सत्य दृष्टा क्रम का प्रकाशन
चिंतन, साक्षात्कार	साक्षात्कार - अस्तित्व में वस्तु सहज रूप में, अस्तित्व में नाम से इंगित वस्तु स्पष्ट होना चिंतन - इच्छा शक्ति में, से, के लिए, परिमार्जन, प्रकटन क्रिया
चित्रण	उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता को चिन्हित रूप देना
बोध	अनुभव गामी विधि से अध्ययन पूर्वक अर्थ स्पष्ट होना, अर्थात अस्तित्व में वस्तु का स्पष्ट बोध होना|

	निश्चयात्मक स्वीकृति, सहज स्वीकृति
संकल्प	निश्चय की निरंतरता| न्याय, धर्म, सत्य सहज निश्चय के निरंतरता प्रमाण व्यक्त होना | सम्यक प्रकार से की गयी स्वीकृति की निरंतरता प्रदान करने वाली बौद्धिक क्रिया ही संकल्प है
अनुभव	अनुक्रम से प्राप्त समझ अथवा अनुक्रम में निहित प्रभावों की पूर्ण स्वीकृति ही अनुभव है| अनुक्रम: कड़ी से कड़ी अथवा सीढी से सीढी जुडी हुयी विधि| सह अस्तित्व में ही अनुक्रम और अनुभव है | (सह अस्तित्व = व्यापक में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति| अनुक्रम = सहअस्तित्व - विकासक्रम-विकास(जीवन), जागृतिक्रम-जागृति, भौतिक रासायनिक भौतिक रचना विरचना)
प्रमाण	अनुभव, व्यवहार एवं प्रयोग सिद्ध होना
इच्छा	आकार-प्रकार, प्रयोजन एवं सम्भावना का चित्र ग्रहण एवं निर्माण करने तथा गुणों का गतिपूर्वक नियोजन करने वाली क्रिया की इच्छा संज्ञा है| जीवन शक्तियां, गुण, स्वभाव, धर्म (समाधान) के रूप में व्याख्यायित होती है |
विचार	विश्लेषण पूर्वक किया गया स्वीकृतियां जो समाधान के अर्थ में प्रयोजन है
आशा	आश्रयपूर्वक की गयी अपेक्षा की आशा संज्ञा है| शरीर के आश्रय पद्धति से आशयों का होना पाया जाता है
जीवन	गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई = मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा रुपी अक्षय बल + आशा, विचार, इच्छा, संकलप और अनुभव रुपी अक्षय शक्तियों का अविभाज्य वर्तमान क्रियान्वयन
चैतन्य	गठनपूर्ण परमाणु में जीने की आशा सहज प्रकाशन | जीवन पद प्रतिष्ठा
प्रिय	शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंधात्मक ज्ञानेन्द्रियों के लिए शरीर स्वस्थता के अर्थ में अनुकूल योग संयोग
हित	शरीर सीमावर्तीय उपयोगिता
लाभ	कम देकर ज्यादा लेना
न्याय	मानवीयता के पोषण, संवर्धन एवं मूल्यांकन के लिए सम्पादित क्रियाकलाप - संबंधों व् मूल्यों की पहचान व् निर्वाह तथा मूल्यांकन व् उभयतृप्ति क्रिया
धर्म	धारणा ही धर्म है| - जिससे जिसका विलागीकरण न हो
सत्य	जो तीनो कालों में एक सा भासमान, विद्यमान एवं अनुभव गम्य है| - अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना के प्रति प्रमाणिकता का नित्य वर्तमान | अस्तित्व सहज स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य नित्य वर्तमान | सहअस्तित्व: सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति|
रूचि	रासायनिक द्रव्यों से रचित रचनात्मक व्यवस्था में अनुकूल भौतिक रासायनिक वस्तुओं के योग संयोग से प्राप्त परिणामों की पहचान
मूल्य	प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है

लक्ष्य	मानव लक्ष्य - समाधान, समृद्धि , अभय, सहअस्तित्व, नियति सहज लक्ष्य चारों अवस्थाओं में प्रकट रहना
कल्पना	मान्यता का पूर्व रूप
कल्पनाशीलता	शोध कार्य के लिए प्रवृत्ति
जानना	दृष्ट पद प्रकाश में वस्तु व मौलिकता जैसी है, वैसा ही स्वीकारना | जो स्थिति, गति व क्रिया जैसी है उसे वैसे ही स्वीकारना | रचना और विरचना जैसी है, उसे वैसे ही स्वीकारना |
मानना	बिना जाने सुख का स्रोत मानना, मान्यता के आधार पर वाद विवाद पूर्वक हर वाद को प्रस्तुत करना *(* गलत के अर्थ में मानना)* अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन-जागृति रासायनिक भौतिक रचना व् विरचना को जानने के उपरांत स्वीकार करने वाली जीवन गत क्रिया | चरितार्थ करना, आचरण करना*(* सही के अर्थ में मानना)*
पहचानना	हर वस्तु अपने पद यथास्थिति रूप में बिम्बित रहता है, यह पहचान का सूत्र है यह जड़ प्रकृति में भी प्रमाणित है | इसी विधि से परस्पर अंश एक दूसरे को पहचानते हुए व्यवस्था में है | इस तरह प्रत्येक परमाणु अपने-अपने निश्चित आचरण को प्रस्तुत करते है | प्रयोजन के अर्थ में पहचान मानव परंपरा में जागृति पूर्वक ही प्रमाणित है | जड़-चैतन्य प्रकृति में भी प्रतिबिम्बन विधि से पहचान |
निर्वाह करना	संबंधों मूल्यों व व्यवस्था सहज दायित्व कर्तव्यों के पहचान सहित निर्वाह करना, निर्वाह में कार्य व्यवहार संपन्न होना
भास्	परम सत्य रुपी सह-अस्तित्व कल्पना में होना, वाचन व श्रवण भाषा के अर्थ रूप में सत्य स्वीकार होना
आभास	सत्य सहज होने का सामान्य स्वीकृति
मानव संबंध: परिवार में व्यवस्था	
संबंध	पूर्णता के अर्थ में सहअस्तित्व सहज अनुबंध
विश्वास	परस्परता में निहित मूल्य निर्वाह| व्यवस्था की समझ, समाधान की अभिव्यक्ति और सम्प्रेषणा - संबंध निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यों के निर्वाह की निरंतरता
सम्मान	व्यक्तित्व, प्रतिभा की स्वीकृति और उसका संतुलन सहज प्रकाशन -व्यक्तित्व एवं प्रतिभा में श्रेष्टता सहज प्रमाण का पहचान, स्वीकृति - प्रमाणित होने की प्रवृत्ति
स्नेह	न्यायपूर्ण व्यवहार में निर्विरोधिता - संतुष्टि में, से के लिए स्वयं स्फूर्त मिलन और निरंतरता
ममता	स्वयं में से के लिए प्रति रूपता सहज स्वीकृति, उत्सव निरंतरता
वात्सल्य	अभ्युदय (सर्वतोमुखी समाधान) के अर्थ में पोषण, संरक्षण की निरंतरता
गौरव	विकसित (जागृत) को पहचान एवं उनके अनुरूप होने में उत्साह और

	निरंतरता
श्रद्धा	प्रामाणिकता, श्रेष्टता की ओर प्रवृत्ति एवं संकल्प सहित गति
कृतज्ञता	जिस किसी से भी सहायता से उन्नति (विकास और जागृति) की प्राप्ति में सहायता मिली हो, उसकी स्वीकृति
प्रेम	दया, कृपा, करुणा की संयुक्त अभिव्यक्ति | पूर्णता में रति व् उसकी निरंतरता |
परिवार	जन्म संबंध अर्थात् सीमित व्यक्तियों का समुदाय जिसमें प्रत्येक व्यक्ति मानवीयता पूर्ण आचरण करते हुए संबंधों व मूल्यों की पहचान व निर्वाह पूर्वक परस्पर भौतिक समृद्धि, बौद्धिक समाधान के लिए पूरक है
समृद्धि	आवश्यकता से अधिक उत्पादन का अर्थ समृद्धि है
मानव संबंध: समाज में व्यवस्था	
समाज	ऐसी मानव परंपरा जो पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता और उसकी निरंतरता को जानना, मानना, पहचानना और निर्वाह करने की क्रिया को प्रमाणित करती है
शिक्षा	शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय का प्रक्रिया
संस्कार	जीवन में पूर्णता की अपेक्षा में कारित एवं स्वीकृत गुणात्मक प्रस्थापनाएँ
स्वास्थ्य	शरीर के लिए आवश्यकीय तत्वों की पाचन पूर्वक उपलब्धि का प्रकटन
संयम	नियंत्रित कार्यक्रम
उत्पादन	प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता व कला मूल्यों की स्थापना सहित सामान्य आकांक्षा और महत्वाकांक्षा के रूप में वस्तुओं के रूप प्रदान करने की क्रिया
कार्य	विचार पक्ष के आकार अथवा निर्देश का अनुकरण करने के लिए जड पक्ष पर योगदान
विनिमय	लाभ हानि मुक्त विधि से उपयोगिता मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का आधान-प्रदान
कोष	धनधान्य का संग्रहण स्थली
न्याय	संबंधों की पहचान सहित मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन फलन में परस्पर तृप्ति व उभय तृप्ति वर्तमान में विश्वास
सुरक्षा	तन-मन-धन रुपी अर्थ से अन्य का विकास, पोषण, संरक्षण होना तथा विपन्नता, कष्ट, दुःख, दरिद्रता को दूर करने के लिए सहायता करना | अखंड समाज गति एं सभी अवस्थाएं परंपरा के रूप में संतुलित होना, रहना
संपर्क	जिस परस्परता का मिलन ऐच्छिक है - जिसमे अपेक्षाएं पूर्व-निश्चित न हो
सामाजिक नियम	स्व-धन, स्व-नारी/पुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार
अखंड समाज	सह अस्तित्व, समाधान, अभय, समृद्धि पूर्णता | धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनीति सहज पालन, परिपालन में एक सूत्रता

सार्वभौम व्यवस्था	५ आयाम, १० सोपान में परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था
प्रकृति-अस्तित्व में व्यवस्था	
प्रकृति	जड़ और चैतन्य, चार अवस्था व चार पदों में स्पष्ट | जड़ - चैतन्यात्मक अनंत इकाईयों का समूह
अस्तित्व	नाश रहित गुण और नित्य वर्तमान
रूप	आकार, आयतन घन
गुण	सापेक्ष गतियाँ| सम-विषम-मध्यस्थ गतियों का आंकलन
स्वभाव	स्वयं का मौलिकता, नियतिक्रम प्रतिष्ठानुरूप मौलिकता
धर्म	धारणा ही धर्म है| - जिससे जिसका विलगीकरण न हो
धीरता	न्याय के प्रति निष्ठां एवं दृढ़ता
वीरता	अन्य को न्याय दिलाने में स्व-शक्तियों का नियोजन| -दूसरों को न्याय उपलब्ध कराने में अपनी भौतिक व् बौद्धिक शक्तियों का नियोजन
उदारता	स्वप्रसन्नता पूर्वक, दूसरों की जीवन जागृति, शरीर स्वस्थता व् समृद्धि के लिए आवश्यकतानुसार तन, मन, धन रूपी अर्थ का अर्पण-समर्पण करना - प्राप्त समाधान रूपी सुख सुविधाओं का दूसरों के लिए सदुपयोग करना और प्रसन्न होना|
दया	दुसरे के विकास में हस्तक्षेप न करना | पात्रता के अनुरूप वस्तु, योग्यता प्रदायी क्षमता
कृपा	दुसरे के विकास के लिए सहायता, अथवा पात्रता अर्जित करने में सहायक होने में अर्हता संपन्न रहना | वस्तु के अनुरूप पात्रता प्रमाणित कराने वाली क्षमता योग्यता को स्थापित करने की क्रिया
करुणा	विकास के लिए उत्प्रेरित करना| विकास के लिए योग्यता और पात्रता अर्जित करने में सहायक होना|
जड़	जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई जितनी हो उतने अवकाश में जो क्रियाशील हो
चैतन्य	गठन पूर्ण परमाणु में जीने की आशा सहज प्रकाशन
संपृक्त	घिरा हुआ, भीगा हुआ, डूबा हुआ क्रिया
व्यवस्था	मानवत्व सहित वर्तमान परंपरा, वर्तमान में स्थिरता निश्चयता निरंतरता, सार्वभौम व्यवस्था परिवार मूलक दस सोपानीया व्यवस्था में भागीदारी, वर्तमान में विश्वास
अनुषंगीयता	मानव परंपरा में संस्कार, जीवावस्था में वंश परंपरा, प्राणावस्था में बीज वृक्ष परंपरा, पदार्थावस्था में परिणाम परंपरा
क्रिया	श्रम + गति + परिणाम का अविभाज्य वर्तमान | स्थिति एवं गति का संयुक्त रूप में वर्तमान |
ऊर्जा	प्रत्येक इकाई में, से. के लिए सदा साम्य रूप में प्राप्त मध्यस्थ सत्ता
व्यापक वस्तु	सर्वत्र एक सा विद्यमान, वर्तमान, पारगामी, पारदर्शी, मध्यस्थ सत्ता सहज

	वैभव
विकासक्रम	भौतिक रासायनिक क्रियाकलाप
विकास	जीवन पद में संक्रमित होना
जागृति	गति का गंतव्य, ज्ञान विज्ञान, विवेक सम्पन्नता - ज्ञान, जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान की संयुक्त अभिव्यक्ति, जीवन लक्ष्य - मानव लक्ष्य को विवेचना सहित पहचानना
अन्य	
मध्यस्थ	सम विषम का नियंत्रण, सम विषम से अप्रभावित
दर्शन	दर्शन - दृष्टिके द्वारा दृश्य को समझने की क्रिया
सहअस्तित्ववाद	अस्तित्व में विकास, पूरकता व उदात्तीकरण सूत्र व व्याख्या
चिंतन	इच्छा शक्ति में, से के लिए परिमार्जन प्रकटन क्रिया
विद्या	जो जैसा है है, उसे वैसे ही विधिवत जानने, मानने, स्वीकार करने की क्रिया
जीवन ज्ञान	परमाणु में गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता और उसके क्रिया कलापों को जानना मानना
तर्क	तात्विकता के लिए गतिक्रम, समाधान के लिए गति क्रम, यथार्थता वास्तविकता सत्यता को प्रमाणित करने में मानसिक वैचारिक गति क्रम
भाषा	सत्य भास् होने के लिए शब्द, शब्द समूह
अध्ययन	अधिष्ठान (आत्मा) व अनुभव की साक्षी में स्मरण पूर्वक किये गए क्रिया-प्रक्रिया एवं प्रयास
समझ	ज्ञान विवेक विज्ञान

चैतन्य इकाई (जीवन) में होने वाले १० अविभाज्य क्रियाएँ			
बल	**स्थिति क्रिया (प्रत्यावर्तन)**	**गति क्रिया (परावर्तन)**	**शक्ती**
आत्मा	अनुभव	प्रामाणिकता	प्रमाण
बुद्धि	बोध	संकल्प	ऋतंभरा
चित्त	चिंतन	चित्रण	इच्छा
वृत्ति	तुलन	विश्लेषण	विचार
मन	आस्वादन	चयन	आशा

<u>परिचय शिविर समय सारणी</u>

दिन - १		**दिन-२**	**दिन-३**
भूमिका: षिविर क्यों, क्या है	अध्ययन वस्तु, अध्ययन विधी, सुख, समझ	मानव = स्वयं(मै) + शरीर	स्वयं (मै) में व्यवस्था - (जीवन)
2 सत्र	2 सत्र	4 सत्र	4 सत्र

दिन-४		**दिन-५**	**दिन-६**	
शरीर के साथ व्यवस्था	समृद्धी	परिवार में व्यवस्था	समाज में व्यवस्था	प्रकृति में व्यवस्था
½ सत्र	1½ सत्र	2 + 4 सत्र (6 सत्र)	2½ सत्र	2 सत्र

दिन-७, भोजन के पहले				**दिन-७, भोजन के बाद**
अस्तित्व में व्यवस्था	शिविर सारांश	प्रश्न-उत्तर	आगे के लिए मार्गदर्शन	मूल्यांकन
1 सत्र	½ घंटा	½ घंटा	½ घंटा	1½ सत्र

दिन	सत्र	मुख्य बिंदु	विषय
1	1	(~10:30 बजे प्रारंभ) :- परिचय (1 hr)	
	2	समस्या, मानव पर काम करना है, लक्ष्य तय करना है (45 mins) समझ–संबंध–सुविधा (अभ्यास#1); (45 mins)	भूमिका, षिविर क्यों ?लक्ष्य,
	3	षिविर क्या है? 8–**बिंदु**	षिविर क्या है ?
	4	अध्ययन वस्तु, अध्ययन विधी **चाहना** = निरंतर सुख; **परिभाषा** (अभ्यास#1 **से सुख**) कार्यक्रम = व्यवस्था को समझना, जीना स्वरूप = समाधान, समृद्धी *# अभ्यास = कल इच्छा की list बनाकर लायें*	अध्ययन वस्तु, विधी चाहना (क्यों जीना?) कार्यक्रम? स्वरूप (कैसे जीना?)
2	1	अभ्यास#२ - मानसिक, शारीरिक आवश्यकता - मानव = **स्वयं**(मै) + शरीर अभ्यास#3 - इच्छा सूची -मै–षरीर इच्छा चिन्हित होना - जीवन(स्वयं) - शरीर की आवश्यकता भिन्न है	1) व्यक्ति में व्यवस्था मानव = **जीवन(स्वयं)** + शरीर
	2	chart #1 - **जीवन(स्वयं)** - **शरीर** आवष्यकता - मैं–षरीर = आवष्यकता chart #1 पर चर्चा -समस्या: स्वयं - शरीर की आवश्यकता का गोला	
	3	अभ्यास#4 मैं–षरीर = क्रियाएं अभ्यास (मानव की क्रियाऍ)	
	4	अभ्यास#5 मै ↔**शरीर** 5 ज्ञानेंद्रियॉ अभ्यास - **चैतन्य: जीवन(स्वयं) में मानने की क्रिया स्पष्ट होना** chart #2 - मै–षरीर का भिन्न कार्यक्रम ~~मानव = मै + शरीर = सारांष~~	
3	1	**कल्पनाशीलता: स्वयं**(मै) में क्रियाएं – परिचय	1a) **स्वयं**(मैं) में व्यवस्था (जीवन)
	2	**स्वयं**(मै) में 4½ क्रियाएं – कैसे चालित है, **उनमे व्यस्तता**	
	3	4½ क्रियाएं –समस्या: **मान्यता,सामयिकता, अंतर्विरोध..**	
	4	10 क्रिया – **उपाय:**समझने का रास्ता- **न्याय-धर्म-सत्य** साक्षात्कार, बोध, अनुभव के आधार पर इच्छा, विचार, आषा **होना - जीवन(स्वयं) का नाम 'जीवन'**	

दिन	सत्र	**मुख्य बिंदु**	विषय
	1	शरीर के साथ व्यवस्था (1 hr) समृद्धी (भाग) (३० min)	1b) शरीर के साथ व्यवस्था **- स्वास्थ्य, समृद्धि**
	2	समृद्धी (षेष भाग)	
	3	संबंध - परिचय, 9 मूल्य = अपेक्षा विष्वास (भाग); अभ्यास#6 :चाहना-योग्यता	
	4	विष्वास (षेष भाग), -प्रतिक्रिया में जीना	
5	1	विष्वास सारांष सम्मान: अभ्यास#7 -समानता, भेद, पहचान-सुविधा	2) परिवार मे व्यवस्था
	2	स्नेह: अभ्यास#8 - परपीड़ा, प्रतिस्पर्धा	
	3	ममता से प्रेम **9 शिष्ट मूल्य, मूल्यों पर सारांश**	
	4	परिवार : क्यों और कैसे? - **मानव लक्ष्य** **सात में से 3** संबंध; समृद्धी = परिवार **में**	
6	1	समाज : क्यों, लक्ष्य = मानव लक्ष्य (30 min) शिक्षा–संस्कार- अभ्यास#9: शिक्षित कौन?;४ भय (1 hr) स्वास्थ–संयंम (20 min)	3) समाज मे व्यवस्था
	2	उत्पादन–कार्य (40 min each: 2 hrs) [short lunch] विनिमय–कोष: अभ्यास#10-मूल्य-कीमत में अंतर न्याय-सुरक्षा	
	3	**परिवार समाज का अंग: अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, सामाजिक नियम** (1 hr) - - - - - - - - - - <u>**प्रकृति मे व्यवस्था**</u>: रूप-गुण-स्वभाव-धर्म(२०min) प्रकृति मे व्यवस्था = चार्ट **बनाना** (२० min)	4a) प्रकृति मे व्यवस्था
	4	प्रकृति मे व्यवस्था = चार्ट **पर चर्चा: भ्रमित मानव, जागृत मानव**	
7	1	अस्तित्व = इकाई+व्यापक = **सह**अस्तित्व (8:30 -11 am) **सह**अस्तित्व: बड़ा चार्ट	4b) अस्तित्व में व्यवस्था

	2	शिविर सारांश- (20 min) प्रश्न-उत्तर- (30 min), आगे के लिए मार्गदर्शन- (30)	सारांश